अजायब बानी

भव सागर

(कबीर साहब का अनुराग सागर)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
की देख–रेख में
अनुवाद व सम्पादन किया गया

प्राप्त करने का स्थान

सन्त बानी आश्रम

गाँव व डाकखाना – 16 पी. एस. वाया – मुकलावा,
तहसील – रायसिंह नगर–335039 जिला – श्री गंगानगर (राज.)
– 2004 –

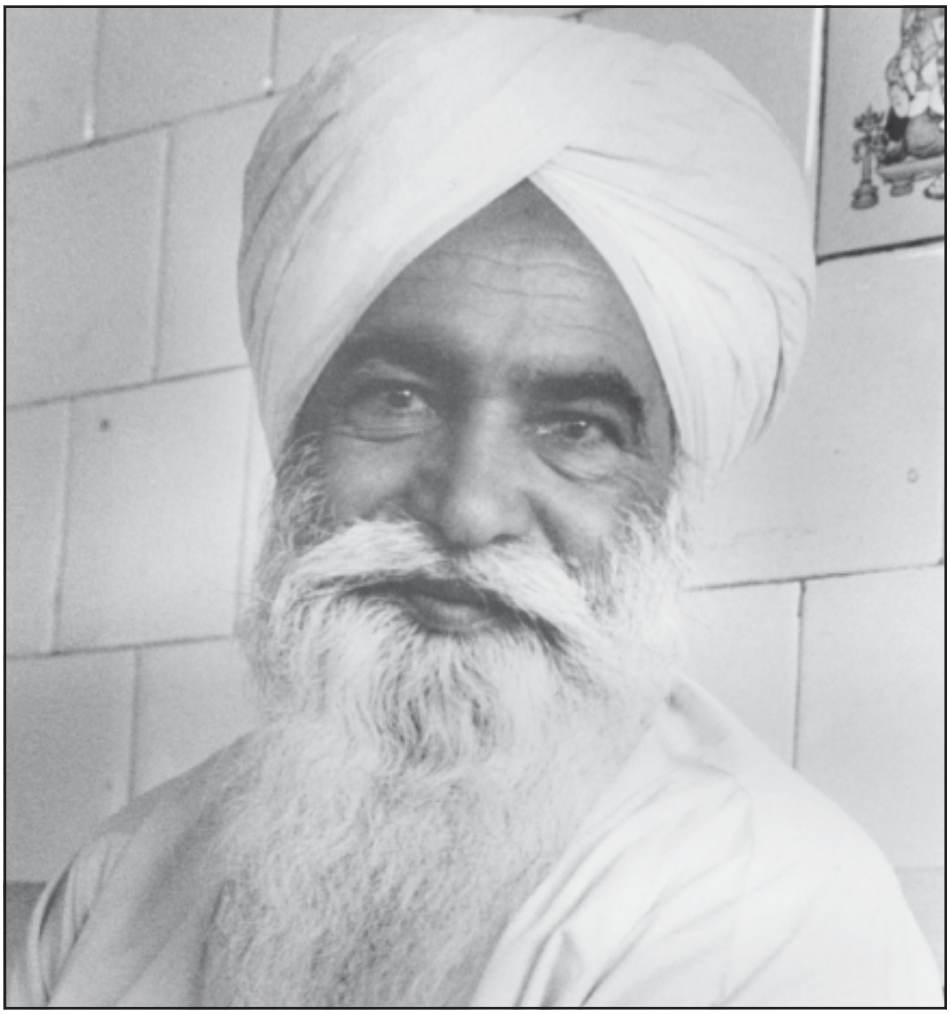

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे, श्रीगंगानगर से छपवाकर, 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर-335001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

सहयोग–सुखपाल कौर नौरिया, माया रानी व शैलेश शाह

विशेष सलाहकार – गुरमेल सिंह नौरिया

आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899

डाक पंजीयन संख्या - आर.जे./डब्ल्यू. आर./27/105/2003-2005

सच तो सच ही होता है

आज तक, पूर्ण सन्तों ने अपने सतसंगो में कबीर साहब के अनुराग सागर का जिक्र किया है। महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी व परम सन्त अजायब सिंह जी ने आमतौर पर अपने सतसंगों में अनुराग सागर को पढ़ने और समझने पर जोर दिया है।

'भव सागर'– अनुराग सागर में कबीर साहब ने अपने परम शिष्य धर्मदास को काल के चरित्र के बारे में समझाया है कि यह काल किस तरह जीवों को भ्रम में डालकर अपने जाल में फँसाकर रखता है। ताकि ये जीव प्रभु की भक्ति ना कर सकें, बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में पड़े रहें और चौरासी लाख योनियों में भटकते रहे।

हम भूले जीव, सच से बहुत दूर हैं। सन्त कहते हैं–''इस इंसानी जामें की कीमत को समझो जो बार–बार नहीं मिलता। इस कसाई काल से बचो, पूरे गुरु से नाम लेकर, अपने निज देश सच्चखंड पहुँचो।''

यह पुस्तक 'भव सागर' सच पर रोशनी डालती है, हमें समझने का एक मौका देती है। सच कड़वा तो अवश्य होता है लेकिन सच सच ही होता है। हम काल के बहकावे में आए हुए जीव इस सच को सहन नहीं कर पाते।

यह हमारा सौभाग्य है कि परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने अपना कीमती समय देकर इस पुस्तक को पूर्ण करवाया।

कबीर साहब के समझाए मुताबिक हम इसे ठंडे दिल–दिमाग से ग्रहण करें, फायदा उठाएं और अपने निज घर सच्चखंड पहुँचें।

प्रेम प्रकाश छाबड़ा
(सम्पादक)

अनुक्रमणिका

1. कबीर साहब का जीवन परिचय	10
2. शुरुआत में क्या था?	22
3. भव सागर	29
4. सृष्टि की उत्पत्ति	37
5. काल निरंजन का आगमन	40
6. भव सागर की रचना	48
7. कबीर साहब का आगमन	75
8. सतयुग में सत–सुकृत का अवतार	83
9. त्रेता युग में मनिंदर का अवतार	86
10. द्वापर युग में करुणामयी का अवतार	92
11. कलयुग में कबीर का अवतार	106
12. कलयुग में काल के छल	129
13. पहचान	147

कलयुग में गुरुओं का आगमन

गुरु साहिबान		जीवन काल	सन्तमत की सेवा के समय आयु	चोला छोड़ते समय आयु	कार्यक्षेत्र	धर्म
1.	कबीर साहब	1398–1518	....	120	बनारस (उत्तर प्रदेश)	मुस्लमान
2.	गुरु नानक साहब	1469–1539	....	70	करतारपुर (पंजाब)	हिन्दू
3.	गुरु अंगद साहब	1504–1552	34	48	खंडूर साहब (पंजाब)	हिन्दू
4.	गुरु अमरदास	1479–1574	83	95	गोइंदवाल (पंजाब)	हिन्दू
5.	गुरु रामदास	1534–1581	40	47	अमृतसर (पंजाब)	हिन्दू
6.	गुरु अर्जन साहब	1563–1606	18	43	अमृतसर (पंजाब)	हिन्दू
7.	गुरु हरगोबिन्द	1595–1644	11	49	हरगोबिन्दपुर (पंजाब)	हिन्दू
8.	गुरु हरि राय	1630–1661	14	31	हरगोबिन्दपुर (पंजाब)	हिन्दू
9.	गुरु हरि कृष्ण	1656–1664	5	8	दिल्ली	हिन्दू
10.	गुरु तेग बहादुर	1621–1675	43	54	पटना (बिहार)	हिन्दू
11.	गुरु गोबिन्द सिंह	1666–1708	9	42	आनन्दपुर साहब	सिख
12.	सन्त रत्तनाकर राव	.....	....	....	पूना (महाराष्ट्र)	हिन्दू
13.	तुलसी साहब	1763–1843	....	80	हाथरस (उत्तर प्रदेश)	हिन्दू
14.	स्वामी जी महाराज	1818–1878	25	60	आगरा (उत्तर प्रदेश)	हिन्दू
15.	बाबा जयमल सिंह	1838–1903	40	65	ब्यास (पंजाब)	सिख
16.	बाबा सावन सिंह	1858–1948	45	90	ब्यास (पंजाब)	सिख
17.	सन्त कृपाल सिंह	1894–1974	54	80	दिल्ली	सिख
18.	सन्त अजायब सिंह	1926–1997	48	71	16 पी.एस. (राजस्थान)	सिख

कबीर साहब व धर्मदास

(द्वारा – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)

हमेशा, यही होता आया है जब से परमात्मा ने सन्तों के रूप में आना शुरू किया, उस समय में बहुत कम लोगों ने उनके जीवन–काल में उनकी जिंदगी के बारे में सोचने की कोशिश की हो। जब, सन्त संसार छोड़ जाते हैं, तब संसार के लोग उनके बारे में सोचना शुरू करते हैं। अपने आपको उनके चरणों में समर्पित करना शुरू कर देते हैं। सन्तों की शिक्षा, जो बहुत लोगों की जिंदगी बदल सकती थी, सांसारिक लोगों को प्रभावित करने लगती है।

इसी वजह से लोगों की समझ के मुताबिक उन सन्तों के बारे में कहानियाँ कही जाती हैं। यह जानना बहुत मुश्किल है कि उन सन्तों का इतिहास क्या था? उनका जन्म स्थान, उनके माता–पिता और बचपन की जिंदगी के बारे में जानना बहुत मुश्किल है। जिन लोगों ने भी इन परमात्मा के प्यारों के बारे में लिखा, उनके जाने के बहुत साल बाद ही लिखा। इसलिए सन्त कबीर के जीवन–काल के बारे में बहुत सारी धारणाएं हैं।

इनमें से ज्यादातर धारणाओं के मुताबिक कबीर साहब का जन्म सन् 1398 में बनारस में हुआ था और वे सन् 1518 में इस देह को छोड़ गए थे। उनका जीवन–काल 120 साल का था। कबीर साहब की जिंदगी के बारे में बहुत सारी कहानियाँ हैं।

धर्मदास, कबीर साहब के गुरमुख सेवक थे और उनके बाद उनकी गद्दी पर भी वही बैठे। धर्मदास एक बहुत ही अमीर इंसान थे, मूर्ति पूजा करते थे। यह कहा जाता है कि धर्मदास एक बार मूर्ति पूजा कर रहे थे तो कबीर साहब उनके सामने प्रगट हुए और उनसे पूछा–''कि अगर यह बड़ी मूर्ति खुदा या भगवान हैं तो ये छोटी–छोटी मूर्तियाँ क्या हैं?'' यह कहकर कबीर साहब गायब हो गए। धर्मदास सोचते ही रह गए कि यह क्या हुआ? उस समय उन्हें यह नहीं मालूम था, कि जो उनके सामने प्रगट हुए, वह कबीर साहब ही थे।

दूसरी बार, कबीर साहब धर्मदास के सामने एक साधु के रूप में प्रगट हुए। धर्मदास अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठे हुए थे, तब कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–''तुम एक पापी हो।'' धर्मदास की पत्नी इस बात को सहन नहीं कर पाई और वह कबीर साहब से बोली–''तुम इनको पापी कैसे कह सकते हो?'' तब कबीर साहब ने धर्मदास से कहा– तुम उन लकड़ियों के अंदर देखो! फिर तुम्हें पता चलेगा कि तुम क्या कर रहे हो? जब धर्मदास ने उन लकड़ियों के अंदर देखा तो उसे पता लगा कि बहुत सारे जन्तु उन लकड़ियों के अंदर जल रहे हैं। कबीर साहब ने कहा–क्या तुम इन जीव–जन्तुओं को जिन्दा जलाकर पाप नहीं कर रहे हो? इतना कहते ही कबीर साहब दोबारा गायब हो गए। तब धर्मदास को सच्चाई का एहसास हुआ कि मैं बहुत बड़ा पापी हूँ।

धर्मदास, एक अच्छी आत्मा थी जो भगवान के प्रति समर्पित थी। वह भगवान के बारे में जानना चाहती थी। धर्मदास को यह भी याद था कि इससे पहले भी वह किसी से मिल चुका है, जिसने उससे मूर्तियों के बारे में पूछा था। उसने महसूस किया कि वह दोनों एक ही इंसान थे। अब धर्मदास को अपनी गलती का एहसास हुआ कि अगर उसकी पत्नी कबीर साहब पर नाराज़ ना हुई होती तो उसे भी भगवान के बारे में कुछ ज्ञान जरूर मिल जाता। धर्मदास की पत्नी ने कहा कि मक्खियाँ मीठे के ऊपर आती हैं। तुम्हारे पास बहुत धन है तुम यज्ञ करो और यह कहलवा दो कि तुम साधुओं को बहुत सारी चीजें दान करना चाहते हो। बहुत सारे साधु आएंगे और यह भी संभव है कि वही साधु फिर से आ जाए। तुम उससे बात करके भगवान के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेना।

धर्मदास ने बनारस और बहुत से शहरों में जाकर यज्ञ करवाए, पर कबीर साहब कभी नहीं आए। इस तरह, वह अपना पैसा खर्च करता चला गया। इसके बाद जब उसने अपनी सारी चीजें बेचकर आखिरी यज्ञ किया तब भी कबीर साहब नहीं आए। अपना सारा पैसा गँवाकर भी जब धर्मदास को वह साधु नहीं मिला तो उसने सोचा कि ''मैं अब घर वापिस क्यों जाऊँ?'' मैं अपना सब कुछ गँवा चुका हूँ, इससे अच्छा तो यह है कि

मैं आत्महत्या कर लूँ। वह नदी के किनारे जाकर, जैसे ही नदी मे छलाँग लगाने लगा तभी कबीर साहब वहाँ प्रगट हुए। धर्मदास ने कबीर साहब के पाँव छूकर कहा–हे भगवान! अगर आप मुझे पहले मिल जाते तो मैं अपनी सारी दौलत यज्ञों में बरबाद करने की बजाय आपको दे देता। कबीर साहब ने कहा–''मेरा तुमसे मिलने का यही सही समय है। अगर तुम, मुझसे पहले मिलते जब तुम्हारे पास वह सब दौलत थी? तो तुम वह नहीं बन पाते जो तुम अब बनोगे।''

कबीर साहब ने धर्मदास को नाम दिया। कबीर साहब के चोला छोड़ने के बाद धर्मदास ने नामदान देने का कार्यक्रम जारी रखा। यह किताब 'भव सागर'–अनुराग सागर उन प्रश्नों के रूप में है जो धर्मदास ने कबीर साहब से पूछे और जिनका कबीर साहब ने उत्तर दिया।

कबीर साहब का जीवन परिचय

जैसा कि सन्त अजायब सिंह जी कहते हैं–कि कबीर साहब की जिंदगी अलग–अलग कहानियों में खोई हुई है। इस समय कबीर साहब की जिंदगी के बारे में कुछ भी कहना मुश्किल है फिर भी उनकी जिंदगी के बहुत से भाग हैं। जिनमें लगभग सभी कहानियाँ मानती हैं और हम उनके बारे में विश्वास के साथ कह सकते हैं।

समय और स्थान

जैसा कि, सन्त अजायब सिंह जी ने कहा–कबीर साहब के जन्म का समय और जगह के बारे में माना गया है कि कबीर साहब सन् 1398 से 1518 तक रहे फिर भी इन तारीखों में थोड़ा सा अंतर जरूर है। एक कहानी कहती है कि वे 1380 से 1440 तक रहे, जबकि दूसरी के मुताबिक वे 1440 से 1518 तक रहे, कोई भी कहानी मान्यताओं पर आधारित नहीं है। यह आज के पढ़े–लिखों की सोच पर आधारित है, जिन्हें कबीर साहब की लम्बी जिंदगी को मानने में समस्या होती है। सन्त–महात्माओं के हिसाब से भी कबीर साहब की जिंदगी का समय बहुत लम्बा था। यह कोई पहला समय नहीं है जब ऐसा हुआ हो और भी कई हिन्दुस्तानी साधु–सन्त हैं जो इतनी लम्बी आयु भोग चुके हैं।

हमारे ही जमाने में, जब अंग्रेजी शासन था। उस समय के मशहूर लिलंगा स्वामी करीब तीन सौ साल तक बनारस में थे। उनकी एक शिष्या, शंकारी माई ज्यू सन् 1826 में जन्मी थी और सन् 1946 तक जीवित रही। उसका जीवन–काल भी कबीर साहब के जीवन–काल के बराबर ही था।

यह मेरा बहुत ही बड़ा सौभाग्य है कि मैं, महर्षि रघुवाचार्य जी से मिला जो ऋषिकेश के बहुत ही मशहूर योगी और सन्त कृपाल सिंह जी के शिष्य भी थे। मैं, रघुवाचार्य जी से दो बार सन् 1965 और सन् 1969 में मिला, उस समय वह सौ साल से भी ज्यादा आयु के थे। वह एक सौ पन्द्रह वर्ष की आयु में गुजर गए। तब तक उनका अपनी शक्तियों के

ऊपर पूरी तरह से काबू था। जब मैं, पिछले साल उनसे मिला तो उन्हें देखकर यह लगता था कि वह मुश्किल से 65 साल के होंगे। उनकी लम्बी आयु और जन्म तिथि के बारे में बहुत से लोग जानते हैं क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन ऋषिकेश में ही बिताया।

कबीर साहब की इन तारीखों को स्वीकार करने के बहुत सारे कारण हमें नजर आते हैं। यह भी एक तरह से निर्धारित ही है कि उनका जन्म बनारस में हुआ जिसको उस समय काशी कहा जाता था। उन्होंने अपनी जिंदगी का अधिकांश हिस्सा वहीं बिताया और पास के एक गाँव मगहर में अपने शरीर को त्याग दिया।

सामाजिक व धार्मिक स्थितियाँ

कबीर साहब के बारे में जो भी बातें विश्वास के साथ कही जा सकती हैं, उन बातों में यह बात भी शामिल है कि वह जन्म से मुस्लिम और जुलाहा जाति में जन्मे थे। रूढ़ीवादी मुस्लिम धर्म के मुताबिक मुस्लमानों में जातियाँ नहीं होनी चाहिए पर भारत में यह विचार इस दवाब में फला–फूला कि बहुत सारी नीच जाति के हिन्दुओं ने, नीच जाति की मुसीबतों से बचने के लिए अपना धर्म इस्लाम बना लिया।

यह भी जाहिर होता है कि जुलाहों के साथ भी ऐसा ही हुआ हो, वे बारहवीं और चौदहवी शताब्दी में इस्लाम धर्म को अपनाकर जुलाहों में परिवर्तित हो गए। जुलाहा शब्द का पार्शियन में अर्थ है–''ताना बुनने वाला।'' इस जाति के लोग ताना बुनते हैं या खेती का काम करते हैं। इनका समाजिक स्तर बहुत ही नीचा होता है।

शुरू से ही कबीर साहब को एक जुलाहे के रूप में जाना जाता है। वे भी अपने आपको एक जुलाहा ही मानते थे। सच्चाई यह है कि कबीर साहब बड़ी खुशी से पूरे संसार में यह बताते हैं कि वह जुलाहे हैं। ***''मैं एक बहुत ही नीच जाति से हूँ, मेरी जाति जुलाहा है। मेरे पास एक ही फायदे की चीज है वह है–नाम''।*** कबीर एक इस्लामी नाम है। इस बात पर बहस इसलिए की जाती है क्योंकि उनके सतसंगों और व्याख्याओं में

जो कुछ भी कहा गया है वह हिन्दू मान्यताओं पर आधारित है।

अनुराग सागर में इस्लाम बहुत ही कम है। कबीर साहब की बाकी कविताओं में भी इस्लाम बहुत कम है। कुछ गीतों में इस्लाम के बारे में थोड़ा बहुत जरूर कहा गया है। यह बात बहुत साफ है कि कबीर साहब का मिशन जिन जगहों से सम्बधित है वहाँ पर ज्यादातर हिन्दू ही थे। वे उनकी धार्मिक भाषा द्वारा ही उन तक पहुँचना चाहते थे।

अनुराग सागर में हिन्दू मान्यताओं का ही ज्यादा जिक्र है। जुलाहा जाति ज्यादातर अनपढ़ थी। उनका स्तर ऊँचा ना होने के कारण उन्हें पढ़ाने वाले भी उनमें ज्यादा रूचि नहीं लेते थे, इसलिए उन्हें इस्लाम धर्म का ज्ञान भी कम ही मिल पाया।

जैसा कि हम जानते हैं कि कबीर के गुरु एक हिन्दू थे। इसलिए कबीर आज के जमाने में एक हिन्दू सन्त के रूप में जाने जाते हैं। अब तो वह एक तरह से हिन्दू भगवान ही बन गए हैं। उनकी बहुत सारी मूर्तियाँ हमें हिन्दुओं के मन्दिरों में मिलती हैं। ये, वह सन्त थे जिन्होंने मूर्ति–पूजा के खिलाफ बहुत कड़ा रुख अपनाया। उनके हिन्दू सेवक इस बात से इंकार नहीं करते कि वे एक मुस्लमान थे। वे या तो इस तथ्य का जिक्र ही नहीं करते या इसे किसी और तरह से समझा देते हैं। फिर भी एक सन्त जो नीच जाति का मुस्लमान ही नहीं, अनपढ़ भी था। वह इतने सारे हिन्दुओं का दिल जीतकर ऐसे ऊँचे स्तर पर पहुँचा कि इस तरह का और कोई उदाहरण हमें किसी भी इतिहास में नहीं मिलता।

जैसा कि सन्त जी ने कहा–कबीर साहब के पास बहुत ताकत थी। उनकी माता का नाम नीमा और पिता का नाम नीरू था। कबीर के मुताबिक वे उनके शारीरिक माता–पिता नहीं थे। उनका जन्म एक करिशमा था। नीमा–नीरू ने कबीर को अपने बच्चे की तरह पाला। कबीर ने उनकी नीच जाति की सीमितताओं को स्वीकारा और अपने पिता से ताना बुनने का काम सीखा। उनकी लेखनियों से यह भी साबित होता है कि उनकी माँ को उनके सन्त होने सम्बधित बातों से निबटने में बहुत मुश्किलें पेश आई।

कबीर की माँ बहुत चिन्ता करते हुए कहती है–***हे खुदा! यह बच्चा किस तरह जिएगा? कबीर कहते–माँ सुनो! भगवान ही हम सबको देने वाला है। कबीर की माँ पूछती है–हमारे परिवार में ऐसा कौन है, जिसने राम को पूजा हो?***

जब वे बड़े हुए तो उन्होंने लोई से शादी की जो कि उनकी शिष्या थी। उनके दो बच्चे हुए, उनके बेटे का नाम कमाल और बेटी का नाम कमाली था। वे ताना बुनकर ही अपना जीवन–यापन करते थे। लोई और कमाली का अनुराग सागर में कोई जिक्र नहीं पर कमाल का है। यह बात बहुत साफ हो जाती है कि वह शारीरिक तौर पर कबीर के बेटे थे। इसलिए यह लगभग असंभव है कि उनकी शादी ना हुई हो। जैसा कि उनके कुछ हिन्दू सेवकों को उन्हें शादीशुदा मानने में बहुत मुश्किल होती है।

सन्तमत में, साधुओं का शादी–शुदा होना कोई असंभव बात नहीं है। जैसे कि कबीर इस मत के संस्थापक हैं इसलिए ऐसा कोई कारण नहीं कि वे शादी–शुदा क्यों थे? जो भी इस बात को नहीं मानते उनके मुताबिक लोई और वे बच्चे कबीर के शिष्य ही थे। जैसा की मान्यताओं से जाहिर होता है ये तीनों कबीर के साथ रोजमर्रा की जिंदगी जीते थे।

कबीर और रामानन्द

अनुराग सागर में यह माना गया है कि कबीर एक उच्चकोटि के सन्त और भगवान के ही बच्चे थे। वे चार बार, अलग–अलग युगों में इस संसार में आए और हर बार उन्होंने महात्माओं के एक अंतरे की नींव रखी। कलयुग में उनका अवतार कबीर के रूप में हुआ। अनुराग सागर में, कबीर साहब इन चारों अवतारों के बारे में बताते हैं कि इन चारों अवतारों के आने से पहले क्या हुआ? उनका यह वृतान्त सन्तमत के सभी सन्तों द्वारा माना जाता है।

उनका, अपने अवतारों का जिक्र, उतना ही सच है जितना हो सकता है। जो भी सन्त उनके बाद आए, उन्होंने कबीर साहब को सन्तों के व्यवस्थापक और सन्तों की पहली कड़ी के रूप में स्वीकारा। फिर भी जैसा

कि लोकमान्यताएं कहती हैं और कबीर की खुद की लेखनियों के अंदर भी स्वीकारा गया है कि कबीर ने एक गुरु से नाम लिया। इस गुरु का नाम रामानन्द था। यह बात गलत लग सकती है, लेकिन यह सन्तमत का आधार है कि हर किसी को सन्त के चरणों में बैठना जरूरी है। उसी प्रकार से लोकमान्यताएं यह भी कहती हैं, कि कबीर ने ही रामानन्द को इस संसार से मुक्त कराया। फिर भी, कबीर बाहरी तौर पर रामानन्द के चरणों में बैठे और संसार की नजरों में अपने आपको नम्रता से पेश किया।

सन्त कृपाल सिंह जी ने भी लिखा है–सन्त, जब भी इस संसार में आते हैं तो उनके पास सच्चा ज्ञान जन्म से ही होता है। फिर भी बाहरी तौर पर वह एक महात्मा के पास जाते हैं। इसलिए हमारे लिए यह एक रस्म बन गई है। अगर हम कबीर साहब का उदाहरण लें तो उन्हें भी रामानन्द को अपने गुरु के रूप में स्वीकारना पड़ा।

सन्त अजायब सिंह जी ने कबीर साहब और रामानन्द के सम्बन्ध को विस्तृत तौर पर इस तरह से बताया है–कि कबीर साहब के पास बहुत ताकत थी। उन्हें किसी को गुरु धारण करने की जरूरत नहीं थी। फिर भी उन्होंने इस रस्म को निभाया और रामानन्द को अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया। पर सच्चाई यह है कि रामानन्द का उद्धार भी कबीर साहब ने ही किया। रामानन्द मूर्ति पूजा करने वाला एक व्यक्ति था, उसे अध्यात्मिकता के बारे में कोई ज्ञान नहीं था। पर हिन्दू लोग उसे एक बहुत अच्छे साधु के रूप में जानते थे और वो कबीर साहब की निन्दा भी करते थे क्योंकि कबीर साहब का कोई गुरु नहीं था।

लोग कहते थे–कि कबीर साहब से नाम लेना पाप है। लेकिन कबीर साहब एक बहुत ही समझदार महात्मा थे। उन्होंने सोचा कि वे किसी ऐसे को गुरु बनाएं, जो लोगों में बहुत अच्छे से परिचित हो। रामानन्द किसी भी मुस्लमान को देखकर खुश नहीं होता था। कबीर साहब का जन्म एक मुस्लमान परिवार में हुआ था। इसलिए रामानन्द से नाम लेने का कोई सवाल ही नहीं उठता था।

रामानन्द, हर सुबह गंगा नदी के किनारे जाया करता था।

कबीर साहब उसे अपना गुरु धारण करना चाहते थे। इसलिए कबीर ने अपने आपको एक छोटे बच्चे के रूप में परिवर्तित कर लिया और उन सीढ़ियों पर लेट गए जिन सीढ़ियों से रामानन्द आ रहा था, उस समय अंधेरा था। गलती से रामानन्द का पैर उस बच्चे के ऊपर पड़ गया। कबीर जो एक बच्चे के रूप में थे, रोने लगे। कबीर साहब को तो कोई बहाना चाहिए था। रामानन्द बहुत घबरा गया और उसने कहा–''हे भगवान के बन्दे! तुम दोहराओ भगवान। हे भगवान के बन्दे! तुम दोहराओ भगवान।'' ऐसा कहकर रामानन्द चला गया।

इसके बाद, कबीर साहब ने लोगों से कहना शुरू कर दिया कि रामानन्द मेरा गुरु है, मुझे उससे नाम–दान प्राप्त हुआ है। हिन्दू लोग, रामानन्द से बहुत नाराज हुए और उसके पास जाकर कहने लगे–''तुम्हारे पास हजारों हिन्दू शिष्य हैं, फिर भी तुम्हें और भूख है? तुमने एक मुस्लमान को अपना शिष्य क्यों बनाया?'' उन दिनों लोग, जाति–पाति में बहुत विश्वास करते थे। रामानन्द ने कहा–''कौन कहता है–कि वह मेरा शिष्य है? मैं किसी कबीर को नहीं जानता।'' मैंने किसी कबीर को नाम–दान नहीं दिया। हिन्दू लोग कबीर साहब के पास गए और उनसे कहने लगे, तुम हमारे साथ रामानन्द के पास चलो। तुम कहते हो कि वह तुम्हारा गुरु है, पर वह इस बात को नहीं मानता।

जब कबीर, रामानन्द के पास गए उस समय रामानन्द विष्णु की मूर्ति पूजा कर रहा था। वह मुस्लमानों को देखकर खुश नहीं होता था, इसलिए उसने बीच में एक पर्दा लगा लिया। कबीर साहब को पर्दे के दूसरी तरफ बिठा दिया। रामानन्द ने मुकुट मूर्ति के सिर पर रख दिया, पर वह मूर्ति के गले में हार डालना भूल गया। अब वह कशमकश में था कि वह क्या करे? अगर वह मुकुट मूर्ति के सिर से उतार देता है, तो इसका मतलब यह है कि वह मूर्ति का अपमान कर रहा है। मुकुट को उतारे बिना गले में हार डालने का और कोई तरीका नहीं था। कबीर साहब जो यह सब जानते थे, उन्होंने कहा–''गुरु जी आप इतनी कशमकश में क्यों हैं? हार को खोलकर मूर्ति के गले में डाल दो।''

रामानन्द ने सोचा कि इसे कैसे मालूम हुआ कि मुझे यह समस्या है? वह बहुत हैरान हुआ। उसने कबीर साहब से पूछा कि ''मैंने तुम्हें नाम–दान कब दिया?'' कबीर साहब ने रामानन्द को उस समय की याद दिलाई, जब आपका पैर मेरे ऊपर पड़ गया था और आपने मुझसे कहा था–''हे भगवान के बंदे तुम दोहराओ भगवान।'' इस वजह से आप मेरे गुरु हुए।

रामानन्द ने कहा–वह तो एक बच्चा था, पर तुम तो कबीर हो? कबीर ने कहा–अगर आप मुझे अभी भी बच्चे के रूप में देखना चाहते हो तो मैं आपको दिखा सकता हूँ कि ''मैं वही हूँ।'' तब रामानन्द को समझ आया और उसने कहा–अगर तुम जानी–जान हो, तो फिर हमारे बीच ये पर्दा क्यों? इस पर्दे को हटा दो। इसके बाद कबीर साहब ने रामानन्द का उद्धार किया। रामानन्द, कबीर साहब से बहुत कुछ पा चुका था फिर भी वह सब रीति–रिवाज और मूर्ति पूजा पहले की तरह ही कर रहा था।

एक बार, रामानन्द एक रीति–रिवाज कर रहा था जिसमें वो बहुत सारे अच्छे खाने बनाकर लोगों को बाँट रहा था कि ये खाने हमारे दादा–पड़दादा के पास पहुँचेंगे, जो कि मर चुके हैं। इस रीति–रिवाज के अन्तर्गत रामानन्द ने कबीर साहब समेत अपने सभी शिष्यों को गाँव से दूध, चावल और बाकी चीजें लाने के लिए भेजा। कबीर साहब भी गए उन्होंने देखा वहाँ एक गाय मरी पड़ी है। वह उस गाय के मुँह में कुछ खाना डालने की कोशिश करने लगे वह गाय मरी हुई थी, कुछ खा नहीं सकती थी। कबीर साहब एक लकड़ी के सहारे उसके मुँह में खाना ढ़केल रहे थे। फिर वह उसका दूध निकालने की कोशिश करने लगे, वह मरी हुई थी तो दूध कैसे दे सकती थी?

बाकी शिष्यों ने कबीर साहब को ऐसा करते हुए देखा तो उन्होंने यह सब रामानन्द को बताया। रामानन्द ने कबीर को बुलाया और पूछा–ऐ इंसान! वह गाय मरी हुई है, खाना नहीं खा सकती, दूध भी नहीं दे सकती। तो कबीर साहब ने कहा–गुरु जी! क्या आप पक्के विश्वास के साथ कह सकते हो कि मरी हुई गाय कुछ भी नहीं खा सकती और दूध भी नहीं

दे सकती? रामानन्द ने कहा–''हाँ।'' कबीर साहब ने कहा–आप यह कैसे कह सकते हैं कि जो खाना आप दूसरे लोगों को खिला रहे हो कि यह खाना आपके दादा–पड़दादा के पास पहुँच जाएगा? लेकिन रामानन्द के पास इस बात का कोई भी जवाब नहीं था।

कबीर साहब और उनके समय के लोग

कबीर का अपने समय के लोगों में बहुत ज्यादा प्रभाव था। ऐसी बहुत सी कहानियाँ कही जाती हैं जिससे उनकी ताकत, अन्तर्यामता, व्यक्तितव के दूसरे असाधारण पहलू, ईमानदारी, नम्रता, भगवान पर पूरी तरह से विश्वास, बिना घबराए अपनी बात कह देना शामिल है।

पंडित, साधु और पढ़े–लिखे लोग कबीर साहब से ईर्ष्या करते थे। एक बार, उन्होंने शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि एक निर्धारित दिन कबीर साहब के घर भंडारा होगा। कबीर साहब गरीब थे, उन्होंने सोचा कि वह इतने सारे लोगों को खाना कैसे खिला पाएंगे? उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और जंगल में जाकर छिप गए, अगले दिन तक वहीं रहे। वह, वहाँ से देख रहे थे कि लोग उनके घर से आ रहे हैं और कह रहे हैं– 'धन्य कबीर–धन्य कबीर।' जब कबीर अपने घर आए तो उनके घर वालों ने बताया कि तुम तो सारा दिन यहीं थे, तुमने ही सब लोगों को खाना खिलाया। कबीर साहब को एकदम समझ आ गया कि यह सब परिपूर्ण परमात्मा की दया–मेहर है। उन्होंने कहा–यह सब कबीर ने नहीं किया, ना ही वह कर सकता था। यह सब भगवान ने ही किया और यश कबीर के खाते में आ गया। महाराज सावन सिंह जी ने बताया–मेरे साथ भी ऐसे वाक्य हुए हैं। सन्त, हमेशा भगवान की मर्जी के अंदर ही रहते हैं।

सन्त कृपाल सिंह जी भी एक बहुत अच्छी कहानी बताते हैं– जिससे कबीर साहब की ताकत, उनके मजाक करने का लहज़ा और उनकी बुद्धिमता सामने आती है। कबीर साहब के समय में एक पंडित था, उसकी कहानी ग्रन्थों में भी आती है कि वह अध्यात्मिक और बाकी किताबों को बहुत तल्लीनता से पढ़ता था। आसपास के इलाके में सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा इंसान बन गया था। इसलिए वह अपने आपको 'सर्वजीत' कहलवाता

था यानि वह जो सबको जीत चुका हो।

सर्वजीत, अपनी पढ़ाई पूरी करके अपनी माँ के पास आया। उसकी माँ कबीर साहब की अनुयायी थी। उसने अपनी माँ से कहा–''माँ! मैं सर्वजीत बन गया हूँ, अब तुम्हें मुझे इसी नाम से बुलाना चाहिए।'' उसकी माँ ने कहा–''अगर तुम कबीर साहब को ज्ञान में मात दे सको, तभी मैं तुम्हें इस नाम से बुलाऊँगी।''

इंसान में सांसारिक ज्ञान से घमंड आ जाता है। वह अपनी किताबें लेकर कबीर साहब के घर की तरफ चल पड़ा। कबीर साहब ने उससे कहा–''पंडित जी! आप यहाँ कैसे आए?'' अहंकारी पंडित ने कहा–''मैं, सर्वजीत हूँ। मैं तुम्हें अपने ज्ञान से मात देने आया हूँ।'' कबीर साहब मुस्कुराकर बोले–''मैं इस बारे में तुमसे बहस नहीं करना चाहता। तुम जो चाहो, लिख सकते हो कि सर्वजीत जीत गया और कबीर हार गया, मैं उस पर दस्तखत कर दूँगा।''

पंडित बहुत खुश हुआ कि कबीर ने इतनी आसानी से हार मान ली। उसने जल्दी से वह लिखा जो कबीर साहब ने कहा और उस पर कबीर साहब से दस्तखत करवा लिए। घर आकर अपनी माँ को वह कागज दिखाकर बोला–यह देखो! अब तो तुम्हें, मुझे सर्वजीत ही बुलाना पड़ेगा। उसकी माँ ने वह कागज लेकर, बोलकर पढ़ा–''कि सर्वजीत हार गया, कबीर जीत गए।'' सर्वजीत ने अपनी माँ पर विश्वास ना करते हुए उस कागज को खुद पढ़ा कि यह कैसे हो सकता है? कोई गलती हो गई, मैं दोबारा कबीर साहब के पास जाऊँगा।

वह, दोबारा कबीर साहब के घर जाकर बोला–महाराज! मुझसे गलती हो गई, मैं इसको दोबारा से लिखना चाहता हूँ। कबीर साहब आसानी से मान गए और नए लिखे हुए कागज पर दस्तखत कर दिए। जब पंडित घर पहुँचा तो उसकी माँ ने फिर कागज को जोर से पढ़ा। उस कागज पर फिर से वही लिखा हुआ था कि ''सर्वजीत हार गया और कबीर साहब जीत गए।'' वह गुस्से में आकर बोला–मैं दोबारा कबीर साहब के घर जाऊँगा और वहाँ पहुँच गया।

यह एक नियम है कि सभी बड़े सन्त कभी भी किसी इंसान को दुतकारते नहीं, प्यार से समझा देते हैं। अगर कोई नहीं सुनता फिर भी वह किसी हद तक उसे इस तरह समझाने की कोशिश करते हैं जिस तरह डाक्टर एक फोड़े को ठीक करने के लिए कुछ भी करता है, ऑपरेशन भी कर सकता है। कबीर साहब ने बहुत प्यार से उस पंडित को कहा– ''तुम्हारा और मेरा दिमाग एक कैसे हो सकता है?'' मैं वह कहता हूँ जो मैंने देखा है। तुम वो कहते हो जो तुमने पढ़ा है।

सन्त अजायब सिंह जी भी एक छोटी सी कहानी कहते हैं– कबीर साहब के समय में गंगा नदी के किनारे एक छोटी जाति का इंसान नहा रहा था और वहाँ से एक पंडित निकल रहा था। पानी की एक बूँद उस पंडित के शरीर को छू गई। पंडित बहुत ही नाराज हुआ और अपने आपको अपवित्र समझने लगा। कबीर साहब ने उसे बड़े प्यार से समझाया– हे ब्राह्मण! तुम्हें भी एक औरत ने जन्म दिया है और हम शुद्र भी संसार में तुम्हारी ही तरह जन्मे हैं। तुम कैसे कह सकते हो कि हम और तुम अलग हैं? तुम में भी वही खून है जो हम में है? इस तरह, कबीर साहब ने उसे बहुत प्यार से समझाया कि सब इंसान एक से ही होते हैं।

इन्हीं विचारों की वजह से महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टैगोर और हमारे जमाने के और लोगों ने भी कबीर साहब को बहुत पंसद किया। परन्तु उस समय में भी इसका उल्टा ही प्रभाव पड़ा। जाति–पाति को मानने वाला हिन्दू समाज और कट्टर मुस्लमान समाज दोनों ही इस जुलाहे को बहुत ही भयभीत होकर देखते थे, उन्हें बहुत बार मारने की कोशिश भी की गई।

खासकर, सिकन्दर लोदी के समय में उन्हें पत्थरों से भरी नाव में बाँधकर गंगा में डुबोने की कोशिश की गई, जिन्दा दफन किया गया। उनकी गठरी बाँधकर हाथी के सामने फैंका गया लेकिन हाथी ने उन्हें छूने से इंकार कर दिया। ये सब कहानियाँ लोक साहित्य पर आधारित हैं, इन्हें सच्चा साबित करने के लिए हमारे पास कोई तथ्य नहीं है। उन्हें बार–बार मारने की कोशिश की गई यह सब सच हो सकता है। यह पहली बार नहीं कि वे मरने से बचे या भगवान द्वारा बचा लिए गए। इस तरह के और भी

किस्से हमें देखने को मिलते हैं।

कबीर साहब के बारे में सबसे पुराना लिखित जिक्र भक्तमाला में है, जो बहुत सारे सन्तों की जिंदगी पर आधारित है। यह भक्तमाला सन् 1600 में नाभा दास द्वारा कबीर साहब के शरीर छोड़ने के 80 साल बाद लिखी गई। इसमें कबीर साहब के जीवन का एक बहुत ही रोचक वृतान्त है।

कबीर साहब जाति–पाति और हिन्दुओं के छह धर्म–कर्म के स्कूलों को मानने से भी इंकार करते थे। वे कहते हैं–कि भक्ति के बिना कोई भी धर्म, धर्म नहीं है। अगर हम भजन नहीं करते तो रीति–रिवाज किसी काम नहीं आते। आपने, अलग–अलग तरह के गीतों, शब्दों, साखियों द्वारा हिन्दुओं और मुस्लमानों को धार्मिक ज्ञान दिया। आपने जो भी ज्ञान दिया उसका अनुकरण सभी धर्म के लोगों ने किया। आप बिना भय के बोलते थे। आपने कभी भी इस मकसद से नहीं बोला कि आपको सुनने वाले खुश हों।

कबीर साहब के बाद के गुरु

जैसा कि सन्तमत में होता है कबीर साहब के भी बहुत से शिष्य थे, जो बाद में गुरु बने। जिन्होंने कबीर साहब के चोला छोड़ने के बाद नामदान दिया। उनमें से कुछ का तो उनकी लेखनियों में जिक्र है। रविदास और दादू साहब बहुत ही जाने माने सन्त हुए हैं। धर्मदास जो कि उनके बाद गुरु बने, उन्हें कबीर पंथ के ज्यादातर लोग मानते हैं।

सन्त अजायब सिंह जी ने पहले ही जिक्र किया है कि कबीर पंथ उत्तरी भारत में एक धार्मिक फिरका है। जिसमें हिन्दू और मुस्लमान दोनों तरह के लोग हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसकी नींव कबीर साहब ने रखी। उनके बाद दूसरे सन्त जिनका जिक्र करने की यहाँ जरूरत है–वे हैं–बाबा नानक जो कि सिक्खों के पहले गुरु थे। जिन्हें आज भी सिक्ख धर्म में बहुत मान दिया जाता है। यह इतिहास की बहुत ही उलझा देने वाली बात है कि जो पंथ धर्मदास द्वारा शुरू किया गया जिसका कबीर साहब के साथ एक बहुत ही खास नाता था। वह पंथ धीरे–धीरे सिर्फ नाम के ही

आध्यात्मिक गुणों का बनकर रह गया।

नानक जी, कबीर साहब से केवल दो बार ही मिले थे, जो खुद भी एक सन्त थे। उनके द्वारा शुरू किए गए पंथ में कबीर की ताकत आज भी पूरे जोर के साथ काम कर रही है। यह सच है कि आज, कबीर पंथ के लोगों को अंदरूनी आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। उनके द्वारा दिया गया नामदान एक रिवाज बनकर रह गया है। यह बात सिक्ख धर्म के बारे में भी सही है, क्योंकि दसवें गुरु के बाद सिक्ख धर्म में भी रीति–रिवाज कुछ ज्यादा बढ़ गए।

कबीर साहब का चोला छोड़ना

जब कबीर साहब चोला छोड़ने के लिए तैयार थे तो यह कहा जाता है–कि उनके हिन्दू और मुस्लमान सेवक दोनों इस बात पर लड़ने के लिए तैयार थे कि उनका शरीर दफनाया जाए या जलाया जाए? कबीर साहब ने उन्हें अपने बताए हुए ज्ञान को इतनी जल्दी भूल जाने के लिए डाँटा और वे लेट गए। उन्होंने अपने आपको चादरों से ढक लिया और सब लोगों को वहाँ से जाने के लिए कह दिया। थोड़े समय बाद जब सब लोग उस कमरे में वापिस आए तो उनका शरीर वहाँ से गायब हो चुका था, वहाँ फूलों का एक ढेर पड़ा था। उनके मुस्लमान अनुयायियों ने आधे फूल ले लिए और उनको दफना दिया और उनके हिन्दू अनुयायियों ने बाकी आधे फूल लेकर उन्हें जला दिया।

इस तरह, कबीर साहब ने चोला छोड़ते हुए भी यह साबित कर दिया कि मालिक के प्यारों की नज़र में सब एक जैसे होते हैं। यह भी कहा जाता है कि कबीर साहब चोला छोड़ने के बाद, बहुत बार बहुत से लोगों के सामने आए। उनमें से एक बार वह धर्मदास के सामने भी आए और धर्मदास को अनुराग सागर के मुताबिक चलने के लिए कहा।

2. शुरुआत में क्या था?

यह कविता, समय का आदि के ऊपर प्रभाव और आदि के जवाब के इर्द–गिर्द घूमती है। वह आदि ही है जो अनुराग सागर या प्यार का समुन्द्र है। यह समय से पहले आदि का वह भाग है जिसे वह छूता है और भव सागर बनाता है। ''भव सागर'' मतलब–संसार का समुन्द्र। एक मात्र ऐसी सच्चाई जिसे हम जानते हैं कि यह झूठा संसार, जिसमें हम फँसे हुए हैं। इस भवसागर को बनाने वाला कसाई काल जिसे हम समय भी कह सकते हैं वह पागल है।

सतपुरुष का एक बेटा काल, इस ब्रह्मांड को रचने के लिए अपने पिता से अलग होकर उस चीज को संभाल नहीं पाया और पागल हो गया। आदि की इच्छाओं के खिलाफ इस ब्रह्मांड को रचने के लिए उसे जो साधन दिए गए थे उसने सब्र ना रखकर, सत्ता की भूख के कारण उनका गलत इस्तेमाल किया। जहाँ एक सुन्दर उपवन होना चाहिए था वहाँ एक गन्दा नाला बना दिया।

भगवान की तरह, अपनी ही पूजा की माँग करते हुए उसने ऐसे कानून बनाए जिन्हें कोई भी नहीं मान सकता। वह आज तक इस बंद ब्रह्मांड में रहता है। वह ऐसे बहुत सारे आक्रमण करता है जहाँ सच्चाई झूठे ब्रह्मांड में प्रवेश करती है। यह उन लोगों को जगाती है जो सच्चाई जानने के इच्छुक हैं, उनको इस ब्रह्मांड से निकलने का रास्ता बताती है। शुरुआत में, एक इंसान के अंदर जो सत–सुकृत, मनींदर, करुणामई और कबीर के रूप में इस धरती पर अवतरित हुए। जो परम पुरुष के बेटे और इस धार्मिक कहानी के लिखने वाले और अभिनय करने वाले भी हैं।

जो उनके बाद, उनकी गद्दी संभालते हैं जिनको वह अपने स्तर तक ऊँचा उठा लेते हैं। यही इस कविता का विषय और अंदरूनी भाग है। यह दर्द भरी और कभी ना खत्म होने वाली धर्मदास की खोज है। जो एक आजाद आत्मा थी, जिसने अपनी आजादी के दीपक को बुझा दिया।

चाहे धर्मदास अपने आपको कितना ही दीन बताता हो। चाहे वह

अपने सच्चे स्वभाव को पूरी तरह से भूल गया हो, बहुत गहरी नींद में हो। फिर भी गुरु कभी भी सेवक का पीछा नहीं छोड़ता। वह एक जन्म से दूसरे जन्म में बिना थके हुए उस सेवक का पीछा करता रहता है। वह हम सबको दिखाता है कि वह हमारी कितनी देखभाल करता है। हम असलियत में उसी पिता के बच्चे हैं। चाहे समय ने इस समय हमें कैद कर रखा है पर हमारे पिता हमसे प्यार करते हैं वे एक दिन हमें जरूर खोज लेंगे।

यह एक बहुत ही पुरानी और सच्ची कहानी है। किसी ना किसी रूप में हमें बहुत बार सुनाई जा चुकी है। पर शायद ही कभी यह कहानी इतनी खुलकर सुनाई गई हो, जैसे कि यहाँ सुनाई जा रही है।

पश्चिमी संसार, इस कहानी को गोसपिल्स के माध्यम से जानता है। जबकि हम जानते हैं कि गोसपिल्स अभी पूर्ण नहीं हैं फिर भी पढ़े–लिखे लोग हर रोज इसके पुराने हिस्सों के ऊपर नया प्रकाश डालते हैं। जीसस द्वारा बताए गए रास्तों के बारे में उनके जमाने के लोगों ने और उस समय के क्रिश्चन लोगों ने जिन्हें उस समय नोस्टिकस कहते थे किस तरह से इस कहानी को अच्छी तरह से समझा और बार–बार इसका जिक्र किया है। यह कहानी गोसपिल्स से शरू नहीं होती ना ही नोस्टिकस के खातमे के साथ खत्म होती है।

गुरु की ही तरह, जिस तरह वह हमें बार–बार ढूंढता है। उसी तरह यह कहानी भी बार–बार जन्म लेती है और हमारे सामने आती है। जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। प्लेटो और ब्लेक की कविता के अनुसार इसके अलावा भी यह कहानी सैकड़ों बार अलग–अलग तरह से कही गई है। यह इंसानी सभ्यता का एक मुख्य हिस्सा है। चाहे पूर्व या पश्चिम हो यह कहानी हमारे अंदर समाई हुई है।

समय और स्थान

अनुराग सागर–भव सागर, ऐसे दो स्थान दिखाता है पहला वह ब्रह्मांड, जो हम देख सकते हैं, हमारे आस–पास है। जो असली ब्रह्मांड का एक छोटा सा हिस्सा है और धीरे–धीरे वहाँ तक पहुँचता है जहाँ पर परम

पुरुष का निवास है। सतपुरुष की असली रचना को काल के तीन लोकों से अलग दर्शाया गया है। काल के ऊपर के हिस्सो में यह रचना वैसे ही हो रही है जैसे कि पहले सोच–विचार में बनाई गई थी। जबकि ये तीनों लोक गिर चुके हैं। ये तीनों लोक हैं–

स्थूल मंडल–यह वह ब्रह्मांड है जिसे हम अपनी अक्ल द्वारा जानते हैं।

सूक्ष्म मंडल–यह वह ब्रह्मांड है जो स्थूल के आस–पास है। जिसमें स्वर्गों और नर्कों के साथ–साथ इन दोनों के बीच का हिस्सा भी आ जाता है।

कारण मंडल–यह वह ब्रह्मांड है जो इन दोनों मंडलों के ऊपर है। यह इन दोनों को ही घेरकर रखता है। जिसमें काल इस समय निवास कर रहा है, यह इन सारी शक्तियों का स्त्रोत है जो सूक्ष्म और स्थूल मंडलों में बह रही है।

दूसरा जन्म–काल के नियमों के मुताबिक या कर्म के नियमों के मुताबिक इनमें से किसी एक संसार में होता है। यह भी हो सकता है कि हम ध्यान या योग के द्वारा ऊपर के दोनों मंडलों के बारे में भी थोड़ा बहुत ज्ञान प्राप्त कर लें। पर इन तीनों मंडलों को छोड़कर असली ब्रह्मांड में जा सकना हमारे लिए नामुमकिन है। यानि कि मोक्ष की प्राप्ति बिना किसी ऐसे के नामुमकिन है जो वास्तव में असली ब्रह्मांड से आया हुआ हो।

दूसरी जगह–ये तीनों मंडल इस समय अपनी रचना की सबसे ऊँची स्थिति में हैं। इनका इतिहास इनके आगे बढ़ने के साथ–साथ इनकी खत्म होती शक्ति का इतिहास है। यह अरबों सालों से फैला हुआ है, जो कि चार युगों में बाँटा गया है। इनमें जीने की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। अनुराग सागर के विषय में यह भी कहा जा सकता है कि यह उस रचयिता की कहानी है जो हर युग में अवतरित होते हैं।

चारों युग, जब एक बार खत्म हो जाते हैं तो वह ब्रह्मांड जिसमें हम निवास कर रहे हैं, प्रलय का शिकार हो जाता है। अपने से ऊपर वाले मंडल में समा जाता है। जो भी आत्माएं इन तीनों संसारो में होती हैं वे शून्य स्थिति का अनुभव करती हैं। जब तक ये तीनों संसार खत्म रहते हैं यह समय उतना ही होता है जितना चार युगों का समय होता है। इस समय के

खत्म होने के बाद काल दोबारा से निचला ब्रह्मांड बनाता है। फिर से युगों का चक्र शुरू हो जाता है। यह चक्र तब तक चलता रहेगा जब तक सभी जीव यहाँ (निचले संसार से) मोक्ष प्राप्त करके एक बार फिर से परम पुरुष के पास ना पहुँच जाएं।

संसार के बनने और तबाह होने का यह तरीका गुरुओं द्वारा भी मान लिया जाता है। इस कविता में युगों का वर्णन इस तरह से किया गया है जैसा कि हिन्दू साहित्य में है। इसका वर्णन, यह बताने के लिए किया गया है कि हर युग में क्या–क्या स्थितियाँ होती हैं? इसी बारे में सन्त कृपाल सिंह जी गुरु नानक जी की जपजी साहब पर बोलते हुए लिखते हैं– नानक, भारत के इतिहास में चार युगों का वर्णन करते हैं। जैसा कि पश्चिम के मानने वाले इसे सुनहरी युग, चाँदी युग, ताँबा युग और लौह युग मानते हैं। नानक, बार–बार ऐसे तथ्यों का इस्तेमाल करते हैं जो कि हिन्दू इतिहास से है।

सच्चाई सच्चाई होती है। जब हमारे वैज्ञानिकों की खोजें पूरी हो जाएंगी, हो सकता है वह भी इस बात को मानने के लिए तैयार हो जाएं कि युगों को मानने के पीछे की सच्चाई क्या है? हम देखते हैं कि हमेशा नई खोजें हर रोज हमारी सोच को बदल रहीं हैं। किस तरह से इंसान इस धरती पर आया और रोज नई–नई बातें जुड़ रही हैं। इसके साथ ही खोजें यह भी बताने की कोशिश कर रही हैं कि जिस इतिहास के बारे में हम नहीं जानते वो बहुत ही पुराना है।

सन्त कृपाल सिंह जी युगों के उस हिस्से के बारे में बताते हुए बहुत बार कहा करते थे–कि महाभारत का युद्ध जो कि तीसरे युग के अन्त का कारण बना, एक साधारण युद्ध नहीं था। वह एक अणु युद्ध था। जिसमें सारा संसार भयानक परिस्थितियों से गुजरता हुआ नष्ट हो गया। इस युद्ध को एक बहुत ही आम युद्ध की तरह बता देने का कारण यह है कि महाभारत उस समय नहीं लिखा गया, जिस समय वह युद्ध हो रहा था। बल्कि यह सब उस युद्ध के बाद में लिखा गया है। इसी वजह से महाभारत के रचयिताओं द्वारा इसकी आधी बातें यानि कि हवाई जहाजों और टेलीविजन का होना आधा ही समझा गया और उसे जादू के रूप में प्रस्तुत किया गया।

अनुराग सागर और सन्तमत

गुरुओं द्वारा लिखे गए ग्रन्थों या पुस्तकों में अनुराग सागर की एक अद्वितीय जगह है। सन्तमत की किताबों में यह सबसे ज्यादा पढ़ा गया और सबसे कम जाना गया ग्रन्थ है। इसे गुरु खुद पढ़ते आए हैं और उन्होंने इसका किसी न किसी तरह से इस्तेमाल जरूर किया है। वह खुद इसको पढ़ पाए हैं, परन्तु उनके ज्यादातर शिष्य इसे सिर्फ सुन ही पाए हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि यह बृज भाषा में लिखा गया है। इस कविता को एक बहुत ही अच्छे ढंग से बनाया गया है। लेकिन आज के भारतवासियों के लिए इसको पढ़ना बहुत ही मुश्किल है।

परम पुरुष के बेटे सन्त अजायब सिंह जी, जो कि कबीर साहब से शुरू हुई सन्तमत की लाइन में अठारहवें स्थान पर हैं। उनकी दया का धन्यवाद, जिनकी वजह से यह ''अनुराग सागर–भव सागर'' का सरलार्थ हमें मिल पाया है। सन्त जी के दिल में अनुराग सागर के लिए जो आदर की भावना है, वह आज तक जितने भी गुरु आए हैं सबमें ही देखी गई है। सभी गुरुओं ने इस ग्रन्थ का जिक्र अपने सतसंगों में किया है। जिस किसी ने भी स्वामी जी के 'सार–बचन' या सन्त कृपाल सिंह जी की पुस्तकों को पढ़ा है, वे आसानी से समझ जाएंगे कि सन्तों ने अपनी पुस्तकों और सतसंगों में अनुराग सागर का जिक्र क्यों किया है?

तुलसी साहब की एक बहुत ही अहम् किताब के एक बहुत बड़े हिस्से में अनुराग सागर के कुछ हिस्सों की व्याख्या की गई है। बाबा जयमल सिंह जी ने भी इस ग्रन्थ को सन्तों द्वारा बताई गई बातों की एक बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक माना है। जैसा कि उनके शिष्य और उनके बाद आसन ग्रहण करने वाले महाराज सावन सिंह जी बताते हैं–चौथे दिन, जब मैं सतसंग सुनने गया, बाबा जयमल सिंह जी उस समय जपजी साहब का मतलब समझा रहे थे। जब मैंने अपने प्रश्नों की पिटारी खोली तो मैंने इतने सारे प्रश्न किये–कि जो भी श्रोता वहाँ पर बैठे थे, वे अशान्ति महसूस करने लगे। मैंने कुछ वेदान्त पढ़े हुए थे, जब मैंने गुरबाणी पढ़ी, तो मेरे विचार अलग थे। जब मैंने गीता पढ़ी तो मेरे विचार फिर से एकदम अलग

थे। मैं, एक नतीजे पर पहुँचने में असमर्थ था। मैंने आठ दिन की छुट्टी ले ली, ताकि मैं बाबा जी के द्वारा बताए गए वचनों को पढ़ सकूँ ।

बाबा जयमल सिंह जी ने मुझसे कहा–''कि मुझे कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ना चाहिए।'' मैंने तभी मुंबई से 'अनुराग सागर' की आठ प्रतियाँ मंगवा लीं, ताकि मैं उनमें से कुछ अपने दोस्तों को भी दे सकूँ । बाबा जयमल सिंह जी से बहुत बार बातचीत करने के बाद मैं पूरी तरह से समझ गया और मैंने उनसे 15 अक्टूबर 1894 को नामदान ले लिया।

गुरु बनने के बाद बाबा सावन सिंह जी ने अनुराग सागर को एक बहुत ऊँचा स्थान दिया। यह बात उनके एक अनुयायी द्वारा बताई गई है। हजूर बाबा सावन सिंह जी ने एक दिन सेठ वसुदेव जिनकी कार हमेशा आपके पास रहती थी से कहा–कि उन्हें भी कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ना चाहिए। हजूर ने कहा–''इसको पढ़े बिना कोई भी काल और दयाल के बीच के फर्क को नहीं जान सकता और सन्तमत में जो कुछ भी समझाया गया है उसे पूरी तरह ग्रहण नहीं कर सकता।''

यह एक बहुत ही दु:ख की बात है कि आज के पढ़े–लिखे लोग जिन्होंने वैसे तो कबीर साहब के ऊपर बहुत अच्छा काम किया है। असली अनुराग सागर और अनुराग सागर की नकल करके बनाए गई पुस्तकों के अंदर ना तो भाषा को समझा सके हैं और ना ही उसमें कोई फर्क ढूँढ सके हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि यह कविता बृज भाषा में लिखी गई है। एक बहुत ही पढ़े–लिखे भारतीय ने तो इसका यह निष्कर्ष ही निकाल लिया कि कबीर साहब अपने वृतान्तो में जिस भाषा का इस्तेमाल करते थे वह बृज भाषा है। कबीर–पंथ जिन पुस्तकों का इस्तेमाल करता है उसमें वह हिन्दी है जो हिन्दी आज इस्तेमाल में लाई जा रही है। कबीर साहब के बाद के असली गुरु इस बात को मानते हैं कि यह किताब असली है। यह किताब इतनी ज्यादा मशहूर और जरूरी है तो आज के पढ़े–लिखे लोगों को इस बात के बारे में बहुत ही ध्यान देकर सोचना चाहिए कि इसका कौन सा रूपांतरण सही है?

कबीर साहब, जैसा कि हम जानते हैं अनपढ़ थे। इसलिए यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि अनुराग सागर उन्होंने लिखा है। फिर भी एक कवि के रूप में वह हिन्दी कविताओं के गुरु माने गए हैं। वे जो कुछ भी कविता के रूप में ढालते थे वह लिखा नहीं गया था, बल्कि मौखिक रूप में ही था। उनके शब्द और उनकी लम्बी कृतियाँ या तो उस समय के किसी अनुयायी द्वारा लिखी गई हैं जिसको कुछ पढ़ाई–लिखाई का ज्ञान था। जैसे कि धर्मदास या उनके मानने वालों के दिमाग में ये बातें याद रही या बाद में किसी और अनुयायी द्वारा लिखी गई।

यह कहा जाना बहुत मुश्किल है कि अनुराग सागर को किस तरह लिखा गया? यह बात बहुत ज्यादा संभव है कि इसके बारे में धर्मदास को बताया गया हो। यहाँ पर, जिस अनुराग सागर का रूपांतरण किया जा रहा है वह मुम्बई में सन् 1914 में स्वामी युगलेंदा द्वारा रूपांतरित की गई थी। वो बताते हैं कि उन्होंने अनुराग सागर के अलग–अलग 46 रूपांतरणों को पढ़ा, जिनमें से 13 हस्तलिखित थे। उन्होंने बहुत ध्यान देकर और बहुत तकलीफ उठाकर सारे रूपांतरणों को इकट्ठा किया उनमें लिखी गई बातों को मिलाया। फिर जो उनको सही लगा उसी के आधार पर उन्होंने उस किताब को तैयार किया।

जिस किताब का हमने इस्तेमाल किया है वह सन्त अजायब सिंह जी द्वारा इस्तेमाल करने के लिए कही गई थी। इस समय, अनुराग सागर के जो भी रूपांतरण मौजूद हैं उनमें से ध्यान देकर बनाई गई यह एक मात्र पुस्तक ''भव सागर'' – अनुराग सागर है।

3 . भव सागर

सबसे पहले, मैं गुरु को प्रणाम करता हूँ। जिसने, मुझे वह भगवान दिखाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। जिसने गुरु ज्ञान का दीपक जलाते हुए मुझे उस परमात्मा के दर्शन करवाए। गुरु की दया से मैंने उसे पा लिया है। जिसे पाने के लिए बुद्धिमान, पढ़े–लिखे लोगों ने बहुत ही मेहनत की है। उसके आकार का वर्णन नहीं किया जा सकता। मैंने अपने आपको उस अमृत रूपी आत्मा में मिला लिया है।

गुरुदेव पूर्ण है : गुरु, दया का एक समुन्द्र है। वह, हम जैसे दुखियों पर अपनी दया की बारिश करता है। बहुत कम लोगों को उसके रहस्य का पता है। वह अपने आपको उनके अंदर प्रगट करता है जो उसे पहचानते हैं।

अधिकारी कौन है ? : वही खोजी, जो शब्द को अच्छे से जाँच लेगा और गुरु की शिक्षाओं को पूरे ध्यान से सुनेगा। जिसके अंदर ज्ञान का सूरज प्रगट होगा जो सारे अंधेरों को हटा देगा सिर्फ वही इस बात को समझ सकता है। इस अनुराग सागर–भव सागर को कुछ गिने–चुने सन्त ही समझ पाएंगे। प्यार के बिना कोई भी इसे नहीं समझ सकता। कोई भी पढ़ा–लिखा, ज्ञानी सन्त जिसके दिल के अंदर प्यार होगा वही इस निर्वाण को पाएगा।

प्रेमी के चिह्न : धर्मदास ने कहा–हे सतगुरु! मैं, अपने हाथों को जोड़ते हुए आपसे बेनती करता हूँ कि मेरे इस भ्रम को मिटाओ, मैं उन्हें किस तरह से पहचानूँ जिनके अंदर प्यार प्रगट होता है? प्रेमी कैसा दिखता है, मुझे उस प्यार के बारे में बताओ? और कुछ उदाहरण देकर समझाओ?

सतगुरु ने कहा–हे धर्मदास! प्रेमी के गुणों के बारे में ध्यान से सुनो–ताकि तुम उसे पहचान सको? संगीत में मस्त होकर हिरण भागकर शिकारी के पास आ जाता है। उसे कोई भय नहीं होता उस संगीत को सुनकर वह अपनी जिंदगी कुर्बान कर देता है। एक प्रेमी को भी ऐसा ही

करना चाहिए। एक प्रेमी को पंतगे जैसा होना चाहिए। जब पतंगा रोशनी के निकट जाता है तो वह जल जाता है।

हे धर्मदास! उस औरत की तरह बनो जो अपने आपको, अपने मरे हुए पति के साथ जला देती है। जब वह जल रही होती है तो भी अपना शरीर नहीं हिलाती। अपना घर, दौलत और रिश्तेदारों को छोड़कर जुदाई के दर्द में अकेली जल जाती है। वह तब भी नहीं रुकती जब लोग उसका बेटा उसके सामने लाकर उसके मोह को जगाने की कोशिश करते हैं।

जब लोग कहते हैं कि तुम्हारा बेटा कमजोर है मर जाएगा। तुम्हारे बिना, तुम्हारा घर अकेला हो जाएगा। तुम्हारे पास बहुत दौलत है घर वापिस आ जाओ। वह अपने पति की जुदाई के दर्द में होती है उसे कुछ भी आकर्षित नहीं करता, वह नहीं मानती। लोग उसे बहुत सारे तरीकों से मनाने की कोशिश करते हैं पर वह दृढ़ औरत नहीं सुनती। वह कहती है–''मेरी हालत ऐसी है कि मुझे धन–दौलत से कुछ भी लेना–देना नहीं है।'' इस संसार में हर कोई बहुत ही कम समय के लिए रहता है। अंत में हमारा कोई भी साथी नहीं होता। इसलिए प्यारे दोस्तो! इस बात को समझते हुए मैंने अपने पति का हाथ पकड़ लिया है। वह दृढ़ता के साथ अपने पति को गोद में लेते हुए चिता के ऊपर चढ़ जाती है और भगवान का नाम लेते हुए सती हो जाती है।

हे धर्मदास! सच्चाई को समझते हुए, मैं तुम्हें प्यार के बारे में बता रहा हूँ जो नाम की कमाई इस तरह से करते हैं कि अपने परिवार को भी भूल जाते हैं। जो बेटे और पत्नी का मोह नहीं रखते और इस जिंदगी को एक स्वप्न मानते हैं वही सच्चे प्रेमी हैं। भाई! इस संसार में जिंदगी बहुत ही छोटी है। अंत में यह संसार मदद नहीं करता।

हमें काल से कौन बचा सकता है?

भाई! एक सतगुरु ही है जो हमें मुक्त करवा सकता है। उससे प्यार करने से तुम्हारा मसला हल हो जाएगा। काल को हराते हुए सतगुरु आत्मा को उस मंडल में ले जाता है जिसमें कोई आवागमन नहीं होता।

जहाँ सतपुरुष रहता है, वहाँ पहुँचकर हम अनन्त खुशी को प्राप्त कर लेते हैं और इस आवागमन से मुक्त हो जाते हैं।

जो भी मेरे शब्दों में विश्वास करते हुए, सच्चाई के रास्ते पर चलेगा। वह उस योद्धा की तरह है जो युद्ध में आगे बढ़ता है पीछे की चिंता नहीं करता। तुम उस योद्धा और सती की तरह बनो और सन्त से रास्ते का ज्ञान लो। सतगुरु में विश्वास करके उसका सहारा ले लो और मृतक बनो। अपने आपको काल के दर्द से बचाओ। कबीर साहब बहुत सोचने के बाद यह कहते हैं कि कोई हिम्मत वाला ही ऐसा कर सकता है वही उस प्यारे को पा सकता है।

मृतक किसे कहते हैं : धर्मदास ने कहा–हे मेरे भगवान! मुझे मृतक के गुणों के बारे में बताओ ताकि जो आग मेरे मन में उठ रही है वह बुझ जाए। हे दया के बादल! मुझे समझाओ कि यह जिंदगी कैसे मर सकती है?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! यह बहुत ही उलझी हुई बात है सिर्फ थोड़े ही लोग, सच्चे गुरु के इस रूप को समझ सकते हैं। भृंगी नाम की एक कीड़ी होती है, यह दीवार पर एक छोटा सा घर बनाकर रहती है। उस घर में छोटे–छोटे छेद भी होते हैं। यह अपना बच्चा पैदा नहीं करती, किसी दूसरे कीड़े के बच्चे को अधमरा करके अपने पास रख लेती है। उस अधमरे बच्चे को तीन बार आवाज देती है। अगर वह अधमरा बच्चा उसकी आवाज को सुन लेता है तो वह भृंगी ही बन जाता है। अगर आवाज नहीं सुनता तो ना भृंगी बनता है ना कीड़ा ही रहता है। अगर हम भी अपने आपको अधमरा करके, सन्त–महात्माओं की शरण में जाकर उस शब्द को जो ऊपर से आ रहा है सुनें तो सन्त हमारी बाजू पकड़ लेंगे और हमारा सन्तों के साथ मिलाप हो जाएगा।

हंस क्या है? : वह, जो काग के रास्ते को छोड़कर सच्चे शब्द को अपने अंदर रखता है, मोती खाता है और सतगुरु के दिखाए रास्ते पर चलकर अपनी जिंदगी सतपुरुष को दे देता है, वह हंस बन जाता है।

मृतक के उदाहरण : हे सन्तो! मृतक की प्रकृति को सुनो, ऐसे

बहुत कम लोग होते हैं जो भगवान के रास्ते का अनुकरण करते हैं। मृतक, सतगुरु की सेवा करता है, प्यार को अपने अंदर प्रगट करके रखता है। वही मृतक है जो अपनी बुद्धि छोड़ दे और गुरु के हुक्म को माने।

धरती का उदाहरण : जैसे धरती किसी को भी चोट नहीं पहुँचाती। कोई उसके ऊपर चंदन डालता है तो कोई गंदगी डालता है, फिर भी वह किसी से नफरत नहीं करती। उसी तरह, मृतक किसी से नफरत नहीं करता। वह तब भी खुश होता है जब कोई उसका विरोध करता है। जो रास्ता गुरु दिखाता है उसके ऊपर तभी चलो, जब तुम उसे पूरी तरह से आजमा लो।

मृतक के गुणों को कौन विकसित कर सकता है? : धर्मदास! मृतक के गुणों को विकसित करना बहुत ही मुश्किल है। कोई साहसी आत्मा ही उसे पा सकती है। डरपोक उसे सहन ही नहीं कर सकता, उसे ऐसा लगता है जैसे उसका मन और शरीर जल रहा है। सिर्फ वही शिष्य जिसका गुरु द्वारा ध्यान रखा जाता है वही गुरु के ज्ञान की नाव पर सवार हो सकता है। जो इस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है वह निश्चित तौर पर अपने निज घर पहुँच जाता है।

मृतक ही साधु होता है : जो मृतक बन जाता है वही साधु है। वही सतगुरु को पहचान सकता है। वह सब भ्रम त्याग देता है यहाँ तक कि देवी–देवताओं को भी उस पर निर्भर होना पड़ता है।

साधु किसे कहते हैं? : हे धर्मदास! साधु का रास्ता बहुत ही मुश्किल है। जो मृतक की तरह रहता है वही सच्चा साधु है। जिसने पाँचों इन्द्रियों को अपने काबू में कर लिया हो और जो दिन–रात नाम का अमृत पीता हो वही साधु है।

देखने वाली इन्द्री को काबू में करना : सबसे पहले आँखो को काबू में करो, भगवान के सुंदर स्वरूप को देखना ही इन आँखो के लिए भक्ति है। गुरु से प्राप्त किए हुए नाम की तरफ ध्यान लगाओ। जब कोई सुंदरता और कुरूपता को एक जैसा ही समझ लेता है और देह की तरफ

नहीं देखता, वह हमेशा के लिए सुख को पा लेता है।

सुनने वाली इन्द्री को काबू में करना : जो अच्छे और बुरे दोनों शब्दों को ही सहन कर लेता है, उसे गुरु का ज्ञान अच्छा लगता है।

सूंघने वाली इन्द्री को काबू में करना : नाक, अच्छी–अच्छी सुगंधों के काबू में होता है पर चतुर सन्त इसे अपने बस में रखते हैं।

स्वाद की इन्द्री को काबू में करना : जीभ, अच्छे–अच्छे स्वादों जैसे खट्टा, मीठा, लज़ीज चखना चाहती है। पर मृतक, लज़ीज और बेस्वाद चीज़ों में कोई भी फर्क नहीं समझता। वह तब भी उत्तेजित नहीं होता अगर उसे पाँच अमृत भी लाकर दे दिए जाएं। वह बिना नमक के खाने को भी मना नहीं करता। खुशी से उस चीज को स्वीकार कर लेता है जो उसे भोजन में दी जाती है।

पुरुष काम अंग को काबू में करना : यह अंग बहुत ही क्रूर और पापी है। काम बहुत ही कम लोगों के द्वारा काबू में किया जा सकता है। एक कामी औरत, काल की खान होती है उसका साथ छोड़कर गुरु के भक्त बनो।

काम को काबू में करना : जब भी, किसी में काम की लहर उठती है तो उसे अपना ध्यान शब्द में लगा देना चाहिए, चुप रहते हुए नाम का अमृत पीना चाहिए। जब वह तत्वहीन में विलीन हो जाएगा तो उसकी काम वासना खत्म हो जाएगी।

काम का देवता लुटेरा है : काम, बहुत ही विशालकाय खतरनाक और दुख देने वाली नाकारात्मक शक्ति है। जिसने देवताओं, मुनियों, यक्षों, गंधर्वो को भोग भोगने में लगा लिया, वे सब लुट गए। बहुत ही कम, जिनके अन्दर सतगुरु के ज्ञान का प्रकाश होता है वे ज्ञान के गुणों में दृढ़ रहे और बच गए।

काम लुटेरे से बचने के तरीके : अपने अंदर ज्ञान के दीपक को जला दो। सतगुरु के शब्द का सिमरन करो, अंधकार के चोर को भगा दो।

अनल पक्षी का उदाहरण : हे धर्मदास! मैं तुम्हें अनल पक्षी के बारे में बता रहा हूँ, गुरु की दया से जीव साधु कहलाता है और अनल पक्षी बनकर अपने निज घर वापिस चला जाता है।

अनल पक्षी आकाश में ही रहता है। दिन–रात हवा उसे सहारा देती है। यह आँखों के द्वारा संभोग करके गर्भवती हो जाती है, अपने अंडे आकाश में ही देती है। वहाँ कोई सहारा नहीं होता, अंडे नीचे गिरते हुए पोषण प्राप्त करते हैं। आकाश में ही उनमें से छोटे–छोटे पक्षी जन्म ले लेते हैं। इस तरह से, उसी रास्ते पर ही वे अपनी आँखे खोलते हैं वहीं पर अपने पंख प्राप्त करते हैं।

अंत में, जब वह धरती तक पहुँचते हैं तो उन्हें अहसास होता है कि यह घर उनका नहीं है। यह अहसास होते ही वे वहाँ पर वापिस चले जाते हैं जहाँ पर उनके माता–पिता रह रहे होते हैं। अनल पक्षी, अपने बच्चों को वापिस लेने नहीं आते। वे बच्चे, खुद ही अपने रास्ते पर चलकर अपने घर वापिस पहुँच जाते हैं। संसार में बहुत सारे पक्षी रहते हैं पर उनमें से बहुत कम ही अनल पक्षी होते हैं। इसी तरह ऐसे जीव भी बहुत कम हैं जो अपने आपको नाम में मिला लेते हैं। अगर जीव इस पंथ का अभ्यास करता है तो काल के ऊपर विजय प्राप्त करके वापिस सतलोक चला जाता है।

एक साधु अनल पक्षी की तरह कब बनता है ? : जब वह दिन–रात सतगुरु की शरण में रहकर, नाम की इच्छा रखता है। जब उसमें धन–दौलत, बेटे–बेटी, पत्नी की इच्छा नहीं रहती और वह दुनिया के रसों–कसों को भूल जाता है तब वह अनल पक्षी की तरह बन जाता है। जो विचार, शब्द और कर्म से गुरु की आज्ञा का पालन करता है उसे, गुरु नाम में मिलाकर मुक्ति का तोहफा दे देता है।

नाम में मिलने की महानता : जब तक, जीव अपने आपको नाम में नहीं मिला लेता तब तक वह इस संसार में चक्कर काटता रहता है। अगर वह अपने आपको नाम में मिला लेता है उसके सारे भ्रम दूर हो जाते

हैं। हर कोई नाम की बात करता है पर ऐसे विरले ही हैं जो इस आकार रहित नाम को प्राप्त कर लेते हैं।

अगर कोई बहुत समय तक काशी में भी रहे पर उसके पास नाम ना हो तो वह नर्क में ही जाएगा। अगर कोई निमखार, बद्रीधाम, गया और प्रयाग जैसी धार्मिक जगहों में स्नान भी कर ले और अड़सठ तीर्थों पर भी हो आए पर फिर भी उस नाम के बिना उसका भ्रम दूर नहीं हो सकता। नाम को दोहराने से यम दूर भाग जाते हैं।

जिसको, सतगुरु से नाम प्राप्त हो जाता है वह नाम की डोर पर चढ़कर सतलोक पहुँच जाता है। उसकी आत्मा तत्वहीन में मिल जाती है, काल निरंजन उसके सामने अपना सिर झुका देता है।

सार–शब्द क्या है? : सार–शब्द, आकार रहित और सुन्दर है। इसे शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता। शरीर में तत्व और प्रकृति है। सार–शब्द, तत्वहीन और शरीर से मुक्त है। चारों दिशाओं में शब्द की बातें होती हैं। सार–शब्द ही आत्मा को मुक्त करवा सकता है।

सतपुरुष का नाम सार–शब्द है। सतपुरुष का सिमरन सार–शब्द की पहचान है। जो जुबान से सिमरन ना करते हुए अपने आपको उसके अंदर मिला लेता है उससे काल भी डरता है।

सार–शब्द का रास्ता सूक्ष्म, आसान और पूर्ण है। सिर्फ साहसी ही उसका अनुकरण कर सकते हैं। यह एक परिपूर्ण चीज है जिसे पाकर काल पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

आत्मा का आधार मस्तक में है। जो भी उस ना दोहराए जाने वाले नाम के साथ जुड़ जाता है वह उस अनन्त पंखुड़ियों वाले कमल को देख सकता है। जब वह अगम–अगोचर के सच्चे रास्ते पर चलकर सूक्ष्म द्वार पर पहुँच जाता है तो उसका अंदर प्रकाशमान हो जाता है, जहाँ सतपुरुष निवास करता है। उसको पहचान कर आत्मा उसके पास चली जाती है और वह आत्मा को उसके निजधाम ले जाता है। आत्मा का तत्व, सतपुरुष के तत्व जैसा ही है। उसी को 'जीव सोहंग' कहते हैं।

धर्मदास! तुम एक बुद्धिमान सन्त हो। उस शब्द को पहचानो जो मुक्ति देता है। वहाँ बिना जपे जाप शुरू हो जाता है। सहज रूप से धुन सुनाई देती है। उस जाप को जपने के लिए हाथ में माला पकड़ने की भी जरूरत नहीं रहती। उस सार–शब्द को पकड़कर जीव अनामी देश में पहुँच जाता है और सतपुरुष के दर्शन करता है जिसकी एक–एक रोम की रोशनी का मुकाबला करोड़ों सूरज और चन्द्रमा भी नहीं कर सकते। वहाँ पहुँचकर आत्मा का प्रकाश सोलह सूरजों के बराबर हो जाता है।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! मैं अपने आपको आपके चरणों पर कुर्बान करता हूँ। मेरे दर्द को हटाते हुए आपने मुझे खुश कर दिया है। आपके शब्दों को सुनकर मैं ऐसे खुश हूँ जैसे अंधा आँखें पाकर खुश हो जाता है।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! तुम एक पवित्र आत्मा हो जिसने मुझसे मिलकर अपने दर्द को खत्म कर लिया है। जिस तरह तुमने मुझसे प्यार किया। उसी तरह से जो भी अनुयायी दृढ़ता से अपने दिल, दिमाग को अपने गुरु के चरणों में लगाएगा। वह मुझे बहुत प्यारा होगा। जो अनुयायी अपने दिल में धोखा रखते हुए अपने चेहरे पर प्यार दिखाएंगे वे सतलोक कैसे पहुँच सकेंगे? गुरु को अपने अंदर प्रगट किए बिना वह मुझे नहीं पा सकते।

धर्मदास का महानता को स्वीकारना : हे भगवान! मैं बहुत गन्दा था। आपने मेरे लिए यह सब किया, मुझ पर अपनी दया की वर्षा की और खुद मेरे पास आए। मेरा हाथ पकड़ते हुए मुझे काल से बचा लिया।

4. सृष्टि की उत्पत्ति

धर्मदास ने कहा–हे मेरे भगवान! मुझे ये बताओ अविनाशी का मंडल कहाँ पर है? मुझे सब मंडलो के बारे में बताओ? यह आत्मा कहाँ रहती है? सतपुरुष का निवास स्थान कहाँ है? यह आत्मा क्या खाती है? यह आवाज कहाँ से आती है? सतपुरुष ने ये मंडल कैसे बनाए? क्यों बनाए? मुझे सब कुछ बताओ कुछ मत छुपाओ। 'काल–निरंजन' का जन्म किस तरह से हुआ? किस तरह से सोलह बेटों का जन्म हुआ? किस तरह से चारों खानियों के जीव बनाए गए? क्यों इन आत्माओं को काल के हवाले किया गया? कुरमा और शेषनाग का जन्म किस तरह हुआ? किस तरह से मत्स्य और वरहा का अवतार हुआ? इन तीनों देवताओं का जन्म किस तरह से हुआ? किस तरह से यह ब्रह्मांड रचा गया? यह शरीर किस तरह से बनाया गया? हे भगवान! मुझे सृजन की कहानी सुनाओ ताकि मेरी शंका दूर हो जाए और मेरा दिमाग तृप्त हो जाए।

हे सतगुरु! दया करके अपने इस दास को रचना की कहानी सुनाओ। अपने शब्दों के अमृत से मेरे ऊपर प्रकाश डालो ताकि यमों का भय मेरे मन से दूर हो जाए। हे सतगुरु! आपके शब्द सही हैं और मुझे बहुत प्यारे हैं। आपकी दया का वर्णन नहीं किया जा सकता। यह मेरे अच्छे भाग्य ही हैं कि आपने मुझे अपने दर्शन दिए।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! तुम एक योग्य इंसान हो। इसलिए मैं तुम्हें अपने सारे रहस्य बताऊँगा। इस रचना की शुरुआत के शब्दों को सुनो। जो प्रलय की निशानी है।

रचना की कहानी

धर्मदास सुनो! जब धरती, आकाश या नीचे के मंडल नहीं थे। कुरमा, वरहा और शेषनाग भी नहीं थे। सदास्वत, परवन्त और गणेश का भी जन्म नहीं हुआ था। तब, तीस अन्य देवी–देवता भी नहीं थे। मैं, तुम्हें उस समय के बारे में बताता हूँ। जब ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी नहीं थे। शास्त्र

और पुराण भी नहीं रचे गए थे। उस समय यह सब चीजें सतपुरुष के अंदर थी।

हे धर्मदास! रचना की कहानी सुनो, जिसे कोई नहीं जानता। रचना इन सब घटनाओं के बाद शुरू हुई। सतपुरुष की इस कहानी को चारों वेद भी नहीं जानते, क्योंकि उस समय वेदों की उत्पत्ति ही नहीं हुई थी। यह संसार वेदों के द्वारा बताए गए रास्तों को मानता है, लेकिन ज्ञानी सच्चा रास्ता बताते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति और सतपुरुष की रचना

हे धर्मदास! मैं उस समय की बात बताता हूँ जब सतपुरुष गुप्त रूप में रह रहा था। उस समय दुनिया नहीं थी। कोई आकार नहीं था, कोई देह नहीं थी। आकाश–पाताल और मृत्युलोक भी नहीं थे। केवल धंधुकारा ही था। जब सतपुरुष की इच्छा हुई उसने आत्माओं को रचा और उन आत्माओं देखकर बहुत खुश हुआ।

सोलह बेटों की रचना

पहले शब्द से, संसार और समुन्द्र बनाए गए, जिसमें वह रहने लगा। फिर उसने चारों संसारों का सिंहासन बनाया और कमल के ऊपर बैठ गया। जहाँ सतपुरुष बैठा था वहाँ इच्छा की रचना हुई। सतपुरुष की इच्छा से अठासी द्वीपों की रचना हुई। सारे संसारो में उसकी इच्छा का निवास है। उसकी इच्छा में बहुत ही खुशबू है।

दूसरे शब्द से, सतपुरुष ने 'कुरमा' को बनाया उसने आपके चरणों में लगे रहने की इच्छा रखी।

तीसरे शब्द से, सतपुरुष के बेटे 'ज्ञान' का जन्म हुआ। सतपुरुष ने उसे रचना में जाने का आदेश दिया।

चौथे शब्द से, बेटे 'विवेक' की रचना की गई। उसे रचना में रहने का आदेश दिया गया।

पाँचवें शब्द से 'काल निरंजन' का अवतार हुआ। एक बहुत तेज रोशनी अस्तित्व में आई। उसकी रचना सतपुरुष के शरीर के सबसे

सुंदर अंग से की गई है। इसी वजह से वह आत्मा को इतना परेशान करता है। आत्मा सतपुरुष का अभिन्न अंग है कोई भी उनके शुरुआत और अंत के बारे में नहीं जानता।

छठे शब्द से, 'सहज' का जन्म हुआ।

सातवें शब्द से, 'संतोष' को बनाया गया।

आठवें शब्द से, 'सुरत' इस सुंदर संसार में आई।

नौवें शब्द से, 'खुशी' का जन्म हुआ।

दसवें शब्द से, 'माफी' का जन्म हुआ।

ग्यारहवें शब्द से, एक बेटे 'निष्काम' का जन्म हुआ।

बारहवें शब्द से, 'जल–रंगी' नाम के बेटे की रचना हुई।

तेरहवें शब्द से, 'अचिंत' को रचा गया।

चौदहवें शब्द से, 'प्यार' को रचा गया।

पंद्रहवें शब्द से, 'दीन दयाल' को रचा गया।

सोलहवें शब्द से, 'धीरज' का जन्म हुआ।

सत्तहरवें शब्द से, 'योग–सन्त' को बनाया गया।

'शब्द' ने सारे बेटों की रचना की। 'शब्द' ने सारे संसारो और समुन्द्रों की रचना की। हर संसार में सतपुरुष का अभिन्न हिस्सा ये जीव रहने लगे। जीव बहुत ही सुंदर हैं वहाँ हमेंशा खुशी रहती है। सारे बेटे सतपुरुष का सिमरन करते हैं अमृत को पीते और खुशी मनाते हैं। यह एक अदभुत रचना है। सारे संसारो को सतलोक की रोशनी से रोशनी मिलती है। यहाँ तक कि सूरज और चंद्रमा भी सतपुरुष के एक बाल की रोशनी से चमकते हैं। सतगुरु खुशी का स्त्रोत है। वहाँ दुख, दर्द और मोह नहीं हैं। सतपुरुष के दर्शन करके जीव खुश हो रहे हैं।

5. काल निरंजन का आगमन

हे धर्मदास! यह सब होने के बाद, इसी तरह से बहुत दिन बीत गए। काल निरंजन ने इस तरह का खेल खेला। उसने सत्तर युग तक एक पैर पर खड़े होकर सतपुरुष की भक्ति की और उसे अपने ऊपर खुश कर लिया। काल ने यह एक बहुत ही मुश्किल भक्ति की थी, जिस वजह से सतपुरुष खुश हो गए। सतपुरुष के वचन उस तक पहुँचे और उससे पूछा– कि तुमने यह भक्ति क्यों की है?

काल निरंजन ने अपना सिर झुकाकर कहा–कृपया मुझे रहने के लिए थोड़ी सी जगह दे दें। सतपुरुष ने उसे आदेश दिया, हे मेरे बेटे! तुम मानसरोवर चले जाओ। काल निरंजन बहुत खुश हुआ और मानसरोवर चला गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो वह खुशी से भरपूर था। उसने फिर सतपुरुष को याद किया और फिर से सत्तर युगों तक भक्ति की। यह भक्ति भी उसने एक ही पैर पर खड़े होकर की। दयावान सतपुरुष को उस पर दया आ गई।

सतपुरुष की सहज से बातचीत

सतपुरुष ने सहज को बुलाकर कहा–हे सहज! काल निरंजन के पास जाओ और उससे पूछो उसने इस बार मुझे क्यों याद किया है? उसने एक बहुत ही मुश्किल अभ्यास किया है। इस वजह से मैंने उसे तीनों संसारों का मालिक बना दिया है। मैंने यह सब उसकी सेवाओं का देखते हुए किया है। वह प्यारा अब तीनों संसारों को पा चुका है और बहुत खुश है। अब जाकर उससे पूछो, वह जो कुछ भी कहे मुझे आकर बताओ।

सहज का काल निरंजन के पास जाना

सहज सिर झुकाकर काल निरंजन के पास पहुँचा और उसने कहा–हे मेरे भाई! सतपुरुष ने तुम्हारी भक्ति को स्वीकार कर लिया है। अब तुम मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए?

काल निरंजन ने सहज से कहा–हे सहज मेरे भाई! जाओ और

सतपुरुष से यह बेनती करो कि मुझे इतनी छोटी जगह पंसद नहीं है। मुझे कोई बहुत बड़ा साम्राज्य चाहिए। काल निरंजन की बात सुनने के बाद सहज सतपुरुष के पास गया और काल निरंजन का संदेश उन्हें दे दिया।

सहज के शब्दों को सुनने के बाद सतपुरुष ने यह कहा–मैं काल निरंजन से बहुत खुश हूँ। मैंने उसे तीनों संसार दे दिए हैं। उससे जाकर कहो वह वहाँ पर अपनी रचना कर सकता है।

हे सहज! जल्दी से जाकर काल निंरजन को यह बताओ कि उसे खाली मंडल दिया जा चुका है जहाँ वह अपना खुद का ब्रह्मांड बना सकता है। सतपुरुष ने जो कुछ भी सहज को बोला था वह उसने जाकर काल निरंजन को बता दिया।

कबीर साहब ने कहा–सहज के शब्दों को सुनकर काल निरंजन बहुत खुश और थोड़ा सा अचम्भित भी था। काल निरंजन ने कहा–सुनो, प्यारे सहज! मैं किस तरह से इस संसार को बना सकता हूँ? उस दयावान भगवान ने मुझे यह साम्राज्य तो दे दिया है पर मुझे इसे विकसित करने का तरीका नहीं आता? कृपया मुझ पर थोड़ी सी दया करो और मुझे उस रहस्य के बारे में बताओ?

हे मेरे भाई सहज! मेरी इतनी सी बेनती सतपुरुष को कह देना कि मैं इन नौ ब्रह्मांडों को कैसे बनाऊँ? मुझे वह दें जो इन ब्रह्मांडों की रचना के लिए चाहिए। फिर सहज सतलोक गया वहाँ उसने सतपुरुष के आगे अपना सिर झुकाया। सतपुरुष ने पूछा–हे सहज! मुझे बताओ तुम यहाँ क्यों आए हो?

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–सहज ने सतपुरुष को वह सब कुछ बता दिया जो काल निरंजन ने उससे कहा था। उसने निरंजन की सारी इच्छाऐं और बेनतियाँ बता दी। फिर सतपुरुष ने यह आदेश दिया–हे सहज! मेरे शब्दों को सुनो जो कुछ भी रचना के लिए चाहिए वह कुरमा के अंदर है। काल निरंजन को कुरमा के पास जाकर सिर झुकाना चाहिए और जो कुछ भी उसे चाहिए वह कुरमा से माँग ले।

सहज का काल निरंजन के पास जाना

सहज काल निंरजन के पास गया, उसने सतपुरुष के आदेश उस तक पहुँचा दिए और कहा–तुम अपना शीश झुकाकर कुरमा के पास जाओ और जो कुछ भी तुम्हें चाहिए उससे माँगो। जब तुम अपना शीश कुरमा के आगे झुका दोगे वह तुम पर दया कर देगा। तुम्हें वह सब मिल सकता है जो तुम्हे चाहिए।

निरंजन का कुरमा के पास जाना

निरंजन, अपने दिल में खुशी और दिमाग में अंहकार लेकर कुरमा के पास पहुँचा, वहाँ जाकर वह कुरमा के पास खड़ा हो गया। पर उसने ना तो कुरमा को बुलाया और ना ही उसके आगे अपना सिर झुकाया। कुरमा अमृत की तरह खुशी देने वाला है, उसके अंदर गुस्सा नहीं।

अहंकार से भरा हुआ काल निरंजन जब यह देखता है कि कुरमा बहुत बड़ा और शान्त है। कुरमा के शरीर के बारह भाग हैं लेकिन मेरे शरीर के छह भाग हैं। काल निरंजन कुरमा के आस–पास गुस्से से घूमता है और सोचता है कि जो कुछ रचना के लिए चाहिए, इससे कैसे लिया जाए?

फिर काल निरंजन ने कुरमा के सिरों के ऊपर हमला किया, कुरमा के सिरों में से ब्रह्मा, विष्णु और शिव की किस्मत बाहर आई। उसने अपने नाखुनों से कुरमा का पेट फाड़ दिया, जिसमें से पाँच तत्व–हवा, आकाश, सूरज, चाँद, सितारे बाहर आए।

मत्स्य, शेषनाग और वरहा जो स्तम्भ इस धरती को आश्रय देते हैं वे सब बाहर आ गए। इस तरह से पृथ्वी की रचना शुरू हुई। जब काल ने कुरमा के सिर को खींचा तो पसीना बाहर आया, उस पसीने की बूँद फैली तो पृथ्वी उसके ऊपर घूमने लगी। जिस तरह मलाई दूध के ऊपर रहती है उसी तरह से पृथ्वी पानी के ऊपर रहती है।

यह धरती वरहा के दाँतों के ऊपर टिकी है। धरती के ऊपर बहुत तेज हवाऐं चलने लगी। इस आकाश को एक अंडे की तरह मानों और

सोचो कि इस धरती का क्या अस्तित्व है? कुरमा के पेट से उसके बेटे 'कुरमा' का जन्म हुआ। जिसके ऊपर शेषनाग और वरहा खड़े हैं। शेषनाग के सिर को पृथ्वी की तरह मानों जिसके नीचे वह बेटा कुरमा निवास करता है। कुरमा का बनाया गया बेटा एक अंडे के अंदर है, जो असली कुरमा है। वह अलग से सतलोक के अंदर रहता है। वहाँ वह पहले की तरह ही सतपुरुष की भक्ति करता है।

कुरमा ने सतपुरुष से कहा–निरंजन मेरे पास आया था, अपना चरित्र दिखाते हुए मेरे शरीर पर चढ़कर उसने मेरा पेट फाड़ दिया, आपके वचनों को नहीं माना।

सतपुरुष ने कुरमा से कहा–वह तुम्हारा छोटा भाई है। बड़ों का यही तरीका होता है उन्हें छोटो की बुरी बातों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए, छोटों से प्यार करना चाहिए। सतपुरुष की बातें सुनकर कुरमा खुश हुआ वह अमृत था हमेशा खुशी में रहा।

फिर निरंजन ने सतपुरुष को याद किया और बहुत सारे युगों तक उसकी भक्ति की। लेकिन यह भक्ति उसने अपनी इच्छाओं के लिए की। क्योंकि रचना बनाने के बाद वह बहुत पछताया और उसने सोचा कि मैं इन संसारों को किस तरह से विकसित करूँ?

मैं, बीज के बिना स्वर्ग, यह नष्ट होने वाले संसार और इसके नीचे वाले संसार का क्या करूँ? मैं किस चीज से यह शरीर बनाऊँ? इसलिए अगर मैं दोबारा भक्ति करूँ तो मैं वह माँग सकता हूँ, जिससे मैं, अपने इन तीनों संसारो में जीवन डाल सकूँ। उसने फिर से सतपुरुष को याद किया और चौंसठ युगों तक एक पैर के ऊपर खड़े होकर भक्ति की।

सतपुरुष जो कि दया का सागर हैं, निरंजन की सेवा से बहुत प्रसन्न हुए। सतपुरुष ने दोबारा से सहज को निरंजन के पास भेजा और कहा–''अब निरंजन क्या नई चीज माँग रहा है? उसे वह सब दे दो जो उसे चाहिए। उससे कहो कि सब आशाएं छोड़कर ब्रह्मांड की रचना करे।''

जब वह वहाँ गया तो काल निरंजन एक पैर के ऊपर खड़ा

होकर भक्ति कर रहा था। सहज को देखकर वह बहुत खुश हुआ और समझ गया कि सतपुरुष उससे खुश हैं। सहज ने पूछा–हे काल निरंजन! अब तुम यह भक्ति क्यों कर रहे हो? अपना सिर झुकाकर निरंजन ने कहा–''मुझे कोई ऐसी जगह दो जहाँ मैं रह सकूँ?'' फिर सहज ने कहा–हे निरंजन सुनो! सतपुरुष ने तुम्हे सब कुछ दे दिया है। सतपुरुष ने यह आदेश दिया है कि जो कुछ भी कुरमा के पेट से बाहर आया है वह तुम्हे दे दिया जाए। तुम्हें, तीन संसारो का साम्राज्य दे दिया गया है। अब बिना किसी भय से इस ब्रह्मांड की रचना करो।

फिर निरंजन ने कहा–मैं, इस ब्रह्मांड की रचना कैसे करूँ? तुम अपने हाथों को सतपुरुष के आगे जोड़कर उनसे कहना कि मैं उनका सेवक हूँ, कोई बेगाना नहीं। मैं किसी और के ऊपर विश्वास नहीं कर सकता, ना ही किसी और के ऊपर निर्भर हूँ। मैं रोज उनको याद करता हूँ। सतपुरुष से यह कहो कि कृपया करके मुझे वह बीज दें जो कभी नष्ट नहीं होता, जिससे मैं रचना कर सकूँ।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–फिर सहज सतपुरुष के पास गया। उसने सतपुरुष को निरंजन की बेनती के बारे में बताया। सतपुरुष ने सहज को सतलोक वापिस जाने का आदेश दिया। वह दयावान सतपुरुष अच्छे और बुरे कर्मों को नहीं देखता वह सेवा से वश में किया जा सकता है।

अध्या की रचना

फिर सतपुरुष ने अपनी इच्छा से एक औरत की रचना की। जिसका शरीर आठ अंगों का बना था, उसके आठ हाथ थे। वह औरत सतपुरुष के बाँई तरफ खड़ी हो गई, अपना सिर झुकाकर उसने सतपुरुष से पूछा–हे सतपुरुष! मेरे लिए क्या आदेश है।

सतपुरुष ने कहा–बेटी! निरंजन के पास जाओ। निरंजन के साथ मिलकर ब्रंह्मांड की रचना करो। फिर सतपुरुष ने उसे जीवों का बीज दे दिया जिसका नाम 'सोहंग' है। जीव और सोहंग के बीच कोई फर्क नहीं

है। जीव, सतपुरुष का एक अभिन्न अंग है। सतपुरुष ने तीन शक्तियाँ अभय, चैतनी व उल्लंघनी बनाई।

सतपुरुष ने अध्या को चौरासी लाख जन्मों का जड़ बीज देकर कहा कि तुम मानसरोवर जाकर काल निरंजन के साथ जुड़ जाओ। वह, सतपुरुष के आगे सिर झुकाकर मानसरोवर चली गई।

निरंजन का अध्या को देखकर आकर्षित होना

निरंजन, उस औरत को देखकर बहुत खुश हुआ। अध्या को देखकर निरंजन इस तरह से व्यवहार करने लगा जैसे कि वह कोई बहुत बड़ी हस्ती हो। उसके शरीर के हर अंग को देखकर वह उत्तेजित हो गया, और उस औरत को निगल गया।

हे धर्मदास! तुम काल के इस स्वभाव के बारे में सुनो–जब काल निरंजन उस औरत को निगल गया तो वह बहुत ही हैरान हुई, मदद के लिए चिल्लाई और बोली, काल मुझे अपना भोजन बना चुका है।

फिर सतपुरुष को याद आया कि कुरमा के साथ क्या हुआ था? काल ने कैसे कुरमा को अपने वश में करके उस पर हमला किया था? उसके तीनों सिरों को कुचल दिया था। सतपुरुष दयावान तो है पर वह सब जानता है। काल के इस चरित्र को जानते हुए सतपुरुष ने उसे अभिशाप दिया जिसके बारे में अब मैं तुम्हें बताऊँगा।

सतपुरुष का निरंजन को अभिशाप

सतपुरुष ने काल निरंजन को अभिशाप दिया। अगर तुम रोज, एक लाख जीवों को खाओगे? तो सवा लाख जीव जन्म लेगें।

सतपुरुष सोचने लगे कि मैं काल को कैसे खत्म करूँ? वो भयानक है, जीवों को परेशान करेगा। मैं उसका नाश भी नहीं कर सकता और उसे रोक भी नहीं सकता। वह मेरा नालायक पुत्र है। अगर मैं उसे मिटाकर अपने आपमें समा लूँ तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा।

सतपुरुष ने जोगजीत को बुलाया और उसे काल निरंजन के

स्वभाव के बारे में बताया। जोगजीत से कहा–जल्दी जाओ और काल को पीटकर मानसरोवर से भगा दो। अब, वह मानसरोवर में नहीं रह सकता। निरंजन के पेट के अंदर जो औरत है उससे कहो–वह मेरे 'शब्द' को याद करे और निरंजन के पेट से बाहर आ जाए। उसे इस अच्छे कर्म का फल दिया जाएगा। तुम जाओ और निरंजन को बता दो कि वह औरत अब उसकी है।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–सतपुरुष के आगे अपना सिर झुकाकर जोगजीत मानसरोवर चला गया। जब काल ने जोगजीत को देखा तो वह बहुत डर गया। काल ने उससे पूछा–तुम यहाँ क्यों आए हो? तुम्हें यहाँ किसने भेजा है? जोगजीत ने कहा–हे निरंजन! तुमने उस औरत को खा लिया है। सतपुरुष ने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं तुम्हें यहाँ से निकाल दूँ। जोगजीत ने उस औरत से पूछा–तुम इसके पेट में क्यों हो? इसके पेट को फाड़कर बाहर आ जाओ और सतपुरुष की महिमा को याद करो।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–यह सुनते ही निरंजन गुस्से से जल गया और जोगजीत से लड़ पड़ा। जोगजीत ने सतपुरुष को याद किया सतपुरुष की रोशनी और शक्ति प्राप्त की। सतपुरुष ने आदेश दिया कि काल के माथे के बीचोंबीच पूरे जोर से मारो। जोगजीत ने वैसा ही किया जैसा उसको आदेश दिया गया था।

जब जोगजीत ने उसे पीटा तो निरंजन सतलोक से बहुत दूर नीचे जा गिरा। वह सतपुरुष से बहुत ज्यादा डरा हुआ था और खुद ब खुद ही खड़ा हो गया। वह औरत निरंजन के पेट से बाहर आ गई और उसे देखकर डर गई। वह कशमकश में थी और काल निरंजन से डरी हुई थी। वहाँ खड़ी होकर इधर–उधर ज़मीन को देखते हुए सोचने लगी।

काल निरंजन ने कहा–हे औरत सुनो! मेरा डर अपने दिल से निकाल दो। सतपुरुष ने तुम्हें मेरे लिए बनाया है। चलो, अब हम इस ब्रह्मांड की रचना करें। मैं तुम्हारा आदमी हूँ और तुम मेरी औरत हो। उस औरत ने कहा–तुम ऐसी बातें क्यों करते हो? तुम मेरे बड़े भाई हो। उस औरत ने फिर कहा–सुनो पिताजी! तुम इस तरह की बात क्यों करते हो?

जबकि तुम्हारा मेरा रिश्ता बाप–बेटी का है। क्योंकि तुमने मुझे अपने पेट में डाला था। पहले तुम मेरे बड़े भाई थे, अब मेरे पिता हो। मेरी तरफ पवित्र दृष्टि से देखो, अगर तुम मेरी तरफ वासना से देखोगे तो तुम पापी बन जाओगे।

निरंजन ने कहा–सुनो भवानी! मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ। मैं पाप और पुण्य से नहीं डरता क्योंकि मैं ही इनको बनाने वाला हूँ। पाप और पुण्य मुझसे ही जन्म लेते हैं। मुझसे लेखा–जोखा पूछने वाला कोई नहीं। मैं पाप और पुण्य को फैला दूँगा। जो भी इस पाप और पुण्य में फँस जाएगा वह हमारा होगा। इसीलिए, मैं जो कहता हूँ उसे समझो और मानो। सतपुरुष ने तुम्हें मुझे दे दिया है, मेरे शब्दों को मानो।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–यह सुनते ही वह औरत हँसी, वे एक–दूसरे से सहमत हो गए, वे दोनों बहुत खुश थे। वह मीठी आवाज में आकर्षित करने वाले शब्द बोली और निरंजन से सम्बंध बनाने के बारे में सोचने लगी। उसके मीठे शब्द सुनकर निरंजन बहुत खुश हुआ और उसने उसके साथ सम्बंध बनाने का फैसला कर लिया।

औरत ने कहा–मेरे पास काम इन्द्री नहीं है। निरंजन ने अपने नाखून से उसका काम अंग बना दिया। इस तरह से रचना के लिए एक दरवाजा बन गया। उसके काम अंग से खून निकलने लगा क्योंकि उसे नाखून से नुकसान पहुँचा था। तबसे इसी तरह से सम्बंध बनते आए हैं।

हे धर्मदास! रचना की कहानी सुनो–जिसको कोई इंसान नहीं जानता। काल ने तीन बार सम्बंध बनाए और ब्रह्मा, विष्णु, शिव का जन्म हुआ। जब काल और वह औरत भोगों को भोग रहे थे तब रचना शुरू हुई।

6. भव सागर की रचना

धर्मदास, इसके बाद क्या हुआ उसे समझो–अग्नि, हवा, पानी, पृथ्वी और आकाश यह सब कुरमा के पेट से बाहर आए और तीनों गुण उसके सिर से बाहर आए। इस तरह इन तीनों गुणों की सहायता से निरंजन ने ब्रह्मांड की रचना की।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–निरंजन ने तत्वों से गुणों को मिलाकर अपनी प्रकृति का घोल बनाया और उसकी तीन बूँदे उस औरत के काम अंग में डाल दी, जिससे तीन भाग बने। पाँच तत्वों और तीन गुणों के मिलन से इस संसार की रचना हुई।

पहली बूँद से ब्रह्मा का जन्म हुआ, उसे रजोगुण और पाँच तत्व दे दिये गए। दूसरी बूँद से विष्णु का जन्म हुआ, उसे सतोगुण और पाँच तत्व दे दिये गए। तीसरी बूँद से शिव का जन्म हुआ, उसे तमोगुण और पाँच तत्व दे दिये गए। पाँच तत्वों और तीन गुणों का मिलन हुआ और इस तरह उनके शरीर बनाए गए। इसलिए बार–बार इस संसार का नाश होता है। कोई भी इसकी शुरुआत की रचना के रहस्य को नहीं जानता।

निरंजन ने उस औरत से कहा–मेरी रानी! मेरी बात मानो, तुम्हारे पास रचना का बीज है, इसकी मदद से ब्रह्मांड की रचना करो। वैसा ही करो जैसा मैं कहता हूँ। मैंने तुम्हें तीन बेटे दिए हैं। अब मैं अपना ध्यान सतपुरुष की सेवा में लगाना चाहता हूँ। इन तीनों बच्चों को ले जाओ और संसार के ऊपर राज करो। मेरे होने का रहस्य किसी को मत बताना। मेरे तीनों बेटों को कभी भी मेरे दर्शन नहीं होंगे। अगर कोई मुझे ढूँढने की कोशिश करेगा तो वह अपनी जिंदगी बर्बाद कर रहा होगा। संसार में, इस तरह के विचार फैला दो कि कोई भी आत्मा कभी भी सतपुरुष के बारे में ज्ञान प्राप्त ना कर सके। जब मेरे तीनों बेटे बड़े हो जाएं, तो उन्हें समुन्द्र मंथन करने के लिए भेज देना।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–उस औरत को ये सब बातें बताकर निरंजन अदृश्य हो गया। वह खाली जगह में एक गुफा के अंदर

रहने लगा। उसका रहस्य कौन जान सकता है? अब अपने मन को निरंजन समझो। जब कोई अपने मन को हराकर सतपुरुष का ज्ञान प्राप्त करता है, सतपुरुष अपने आपको उस इंसान के अंदर प्रगट कर देता है।

जीव मूर्ख हो गए हैं और सोचते हैं कि काल निरंजन को जीता नहीं जा सकता। कर्मों की लहरों में पड़कर वह जन्म के बाद जन्म लेते हुए दु:ख–दर्द को सह रहे हैं। काल निरंजन जीवों को दु:ख देता है और उन्हें बहुत सारे कर्मों में लगा देता है। वह खुद यह खेल खेलता है और इसका नतीजा जीवों को भुगतना पड़ता है।

समुन्द्र मंथन और चौदह रत्नों की रचना

जब तीनों लड़के बड़े हो गए, तो उनकी माँ ने उन्हें समुन्द्र–मंथन करने के लिए कहा। वे खेल खेल रहे थे, जाना नहीं चाहते थे। धर्मदास सुनो और समझो–वहाँ क्या हुआ? उस समय निरंजन ने योगाभ्यास किया और बहुत तेज आँधी चलने लगी। जब उसने साँस लिया तो वेद बाहर आ गए। यह बात बहुत कम लोगों को पता है कि वेद, काल निरंजन के साँस लेने से बाहर आए थे।

फिर वेदों ने प्रार्थना की और पूछा–हे निरंजन! हमारे लिए क्या आदेश है? वेदों से कहा गया कि समुन्द्र में जाकर रहो, जो तुम्हें ढूँढ लेगा तुम उसके साथ रहना। यह आवाज कहाँ से आई, यह नहीं देखा जा सका। सिर्फ एक गहरी रोशनी दिखाई दी। वेद अपनी ही रोशनी से जगमगाने लगे, जैसे कि सूरज की रोशनी से संसार जगमगाता है। वेद वहाँ आ गए, जहाँ काल निरंजन ने समुन्द्र की रचना की थी। जब वेद समुन्द्र की गहराइयों में चले गए तो काल निरंजन ने अध्या से ध्यान के द्वारा बात की। उससे पूछा कि उसने बच्चों को समुन्द्र–मंथन के लिए क्यों रोका हुआ है? निरंजन ने उससे कहा–जल्दी से तीनों बच्चों को समुन्द्र–मंथन के लिए भेज दो। मेरे वचनों को दृढ़ निश्चय से मानो। फिर वह खुद समुन्द्र के अंदर चला गया। अध्या ने अपने तीनों लड़कों को आशीर्वाद देते हुए कहा–हे मेरे बच्चो! जल्दी से समुन्द्र के पास जाओ, वहाँ तुम्हें बहुत सारा ख़ज़ाना मिलेगा।

ब्रह्मा ने उसकी बात मान ली और समुन्द्र की तरफ चल पड़ा, बाकी दोनों भाई उसके पीछे–पीछे चल पड़े ।

तीनों बच्चे, हंस के प्यारे–प्यारे बच्चों की तरह खेलते हुए जा रहे थे। एक–दूसरे को पकड़ते हुए, एक–दूसरे के पीछे भागते हुए वे अजीब ढंग से चल रहे थे। कभी वे चलते, कभी भागते, कभी हाथ हिलाते हुए खड़े हो जाते। वेद भी उस समय की सुंदरता को ब्यान करने के लिए वहाँ मौजूद नहीं थे। वे तीनों समुन्द्र के पास जाकर खड़े हो गए और सोचने लगे कि इसे किस तरह मथा जाए?

पहली बार, समुन्द्र मंथन : हर किसी ने बारी–बारी समुन्द्र का मंथन किया तो उन्हें तीन चीजें मिली। ब्रह्मा को वेद, विष्णु को आग और शिव को जहर मिला। वे तीनों चीजें लेकर खुशी–खुशी अपने घर अपनी माँ के पास आ गए और जो भी चीजें मिली, वे उसे दिखा दी। उनकी माँ ने कहा–तुम ये चीजें अपने–अपने पास रखो।

दूसरी बार, समुन्द्र मंथन : दोबारा से समुन्द्र का मंथन करो, जो भी तुम्हें मिले, उसे अपने–अपने पास रखो। यह कहते हुए अध्या ने एक चाल चली और तीन लड़कियाँ बना दी। उन सबमें अपनी प्रकृति का कुछ अंश मिला दिया। ये लड़कियाँ अपनी माँ के सामने आकर खड़ी हो गई। उनकी माँ ने उन्हें अपने तीनों बेटों के बीच में बाँट दिया। तीनों बेटे समुन्द्र मंथन करने गये थे वे लड़कियों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। जब उन्होंने इस बार समुन्द्र का मंथन किया तो उन्हें तीन लड़कियाँ मिली, जिन्होंने उन्हें बहुत खुश किया। वे, उन लड़कियों को अपने साथ लेकर आए और अपनी माँ के सामने अपना सिर झुका दिया।

माँ ने कहा–मेरे बच्चो सुनो! ये औरतें तुम्हारे काम के लिए बनाई गई हैं । हर बेटे को एक–एक औरत दे दी गई और उन्हें उनके साथ आनंद लेने का आदेश दे दिया गया। ब्रह्मा तुम सावित्री ले लो, विष्णु तुम लक्ष्मी ले लो और शिव तुम पार्वती ले लो। ये उनकी माँ के आदेश थे। अध्या ने उन्हें जो कुछ भी दिया वह उन्होंने सिर झुकाकर स्वीकार कर

लिया। औरतों को देखकर वे इस तरह खुश थे जिस तरह चकोर चाँद को देखकर खुश होता है। तीनों भाई काम–वासना में खो गए। इस तरह से देव और दैत्यों का जन्म हुआ।

तीसरी बार, समुन्द्र मंथन : अपना सिर झुकाते हुए तीनों बेटे चले गए। उन्होंने फिर समुन्द्र मंथन किया जो कुछ भी उन्हें मिला उसे बिना विलम्ब किए आपस में बाँट लिया। चौदह रत्नों की खान बाहर आई जो वह अपनी माँ के पास ले आए, तीनों भाई बहुत खुश थे।

चार तरह के जीवों की रचना

फिर उनकी माँ ने कहा–तुम तीनों जाओ और ब्रह्मांड की रचना करो। अध्या ने अंडज की रचना की। ब्रह्मा ने जेरज की रचना की। विष्णु ने पानी से जन्म लेने वाले जीवों की रचना की। शिव ने बीज से जन्म लेने वाले जीवों की रचना की। चौरासी लाख योनियाँ बनाई गई। धरती को आधा पानी और आधी धरती रहने दिया। जो बीज से जन्में उनमें एक तत्व। जो पानी से जन्में उनमें दो तत्व। अडंज से जन्में उनमें तीन तत्व। जेरज से जन्में उनमें चार तत्व होते हैं। इंसान में पाँच तत्व और तीन गुण सुंदर बनाने के लिए मौजूद हैं।

ब्रह्मा ने वेदों को पढ़ा और उन्हें पढ़कर उसके मन में प्यार जागा। वेद कहते हैं–एक सतपुरुष है वह निरंकार है, उसका कोई आकार नहीं। वह एक ज्योति की तरह है और इस खाली जगह में रहता है। उसे इस शरीर में रहते हुए देखा नहीं जा सकता। उसका सिर स्वर्गों में है और उसके पैर नीचे के संसार में हैं। यह सब जानने के बाद ब्रह्मा मदहोश हो गया। उसने विष्णु से कहा–वेदों ने मुझे असली पुरुष के बारे में बताया है। उसने शिव से भी कहा–वेदों का निचोड़ यह है कि सतपुरुष एक है लेकिन हम उसके रहस्य को नहीं जानते।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–फिर ब्रह्मा अपनी माँ के पास आया। उसके पैर छूते हुए उसने कहा–हे माँ! वेदों ने मुझे यह बताया है कि एक और रचयिता है। हम पर दया करो और हमें यह बताओ कि हमारे

पिता कहाँ हैं? अध्या ने कहा–सुनो ब्रह्मा! तुम्हारा कोई पिता नहीं है, सब कुछ मुझसे ही बना है। मैं ही सारी रचना का पालन करती हूँ। ब्रह्मा ने कहा–माँ! ध्यान से सुनो–वेद इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि एक सतपुरुष है, जो कि गुप्त–रूप में है। अध्या ने कहा–हे मेरे बेटे ब्रह्मा! मेरे अलावा और कोई रचयिता है ही नहीं। मैंने ही तीनों संसारों और सात समुन्द्रों की रचना की है।

ब्रह्मा ने कहा–माँ! मैं, इस बात से सहमत हूँ कि इस सबकी रचना करने वाली आप हैं, पर वेद यह कहते हैं कि एक अलख निरंजन सतपुरुष है। अगर आप ही इस सबकी रचयिता हो तो वेदों में सतपुरुष का जिक्र क्यों है? आप मुझसे खेल मत खेलो, सच्चाई बताओ? जब ब्रह्मा ने जिद्द की तो अध्या सोचने लगी कि अब क्या किया जाए?

मैं, इसे कैसे समझाऊँ? यह मेरी बात नहीं मानता। अगर मैं, इसे निरंजन के बारे में बता दूँ तो यह उसे किस तरह स्वीकार करेगा? निरंजन ने ही मुझसे कहा है कि कोई उसके दर्शन नहीं पा सकता। अगर मैं इसे यह बताऊँ कि वह अदृश्य है तो मैं इसे निरंजन कैसे दिखा सकती हूँ? ध्यान से सोचते हुए उसने अपने बेटे से कहा–अलख निरंजन अपने दर्शन नहीं देता। ब्रह्मा ने कहा–मुझे बताओ कि वह कहाँ है? अच्छाई या बुराई की चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे शब्दों में विश्वास नहीं करता। पहले तुमने मुझसे झूठ बोला अब तुम कहती हो वह अपने दर्शन नहीं देता।

मुझे उसके दर्शन अभी करवाओ, मेरे सारे शक दूर करो। अध्या ने कहा–''सुनो ब्रह्मा! मैं तुम्हें सच्चाई बताती हूँ उसका सिर सातवें स्वर्ग में और पैर नीचे सातवें संसार में है। अगर तुम उसके दर्शन करना चाहते हो तो एक फूल अपने हाथ में लेकर अपना सिर उसके चरणों में झुका दो।'' यह सुनकर ब्रह्मा परेशान हो गया उसके दिमाग में अपने पिता के दर्शन करने का विचार पनप गया। अपनी माँ के आगे सिर झुकाते हुए उसने निश्चय किया कि वह अपने पिता के दर्शन पाकर ही वापिस लौटेगा। वह उत्तर की तरफ चला गया, विष्णु भी अपने पिता के दर्शन पाना चाहता था इसलिए वह भी नीचे के संसार की तरफ चला गया। लेकिन शिव ने अपने ध्यान को भटकने नहीं दिया, वह अपनी माता की सेवा में लगा रहा। जब बहुत

दिन बीत गए तो अध्या अपने बच्चों की चिन्ता करने लगी।

विष्णु का पिता की खोज से लौट आना, पिता तक ना पहुँच पाना

पहले, विष्णु अपनी माँ के पास वापिस आकर कहने लगा–मैं, अपने पिता के दर्शन नहीं कर सका। शेषनाग के जहर से मेरा शरीर काला हो गया। मैं परेशान होकर वापिस आ गया। यह सब सुनकर अध्या बहुत प्रसन्न हुई। अपना हाथ उसके सिर के ऊपर रखकर वह बोली–''हे मेरे बच्चे! तुमने मुझसे सच कहा।''

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा–हे मेरे भगवान! मेरा भ्रम दूर करो, अब मुझे ब्रह्मा के बारे में बताओ–क्या उसे अपने पिता के दर्शन हुए या वह भी निराश होकर वापिस आ गया? मुझे अपना सेवक समझते हुए मेरे जन्म को सफल बनाओ और बताओ कि इसके बाद क्या हुआ?

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–धर्मदास! तुम मुझे बहुत प्यारे हो। मेरे वचनों को दृढ़निश्चय से मानते हुए अपने हृदय में रखना। ब्रह्मा अपने पिता के दर्शन करना चाहता था इसलिए उसे वहाँ पहुँचने में ज्यादा समय नहीं लगा। वह उस जगह पर पहुँच गया जहाँ कोई सूरज कोई चंद्रमा नहीं सिर्फ शून्य मंडल था। उसने, बहुत तरह से प्रार्थना की और ज्योति का ध्यान किया। उस शून्य मंडल के बारे में विचार करने में उसके चार युग बर्बाद हो गए, फिर भी उसे अपने पिता के दर्शन नहीं हुए।

जब चार युग तक ब्रह्मा वापिस नहीं आया तो अध्या को चिन्ता हुई ''कि मेरा सबसे बड़ा बच्चा कहाँ है? वह कब वापिस आएगा, मैं क्या रचना रचूँ कि ब्रह्मा वापिस आ जाए?

गायत्री की रचना

अध्या ने अपने शरीर को मसलकर उसकी मैल से एक लड़की की रचना की। शक्ति का रूप उसमें मिलाकर उसे गायत्री नाम दे दिया। गायत्री अपना सिर झुकाकर दोनों हाथों को जोड़ते हुए प्रार्थना करती है–''माँ! तुमने मेरी रचना क्यों की? मुझे बताओ, ताकि मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन कर सकूँ?''

अध्या ने कहा–''बेटी! ब्रह्मा तुम्हारा सबसे बड़ा भाई है। वह आकाश में अपने पिता के दर्शन करने के लिए गया है जाओ और उसे वापिस ले आओ। उसे बता दो कि उसे अपने पिता के दर्शन कभी नहीं होगें। वह ऐसे ही जन्म बर्बाद ना करे। उसे वापिस लाने के लिए जो कुछ भी करना पड़े, वह करो।''

गायत्री ब्रह्मा की खोज में जाती है

अपनी माँ के वचनों को हृदय में लेकर गायत्री उस रास्ते पर चली गई। वहाँ पहुँचकर उसने एक ज्ञानी पुरुष को देखा, जिसकी आँखे बंद थी। कुछ दिनों तक वह वहाँ रही फिर उसने एक तरकीब सोची कि यह किस तरह उठेगा, मुझे अब क्या करना चाहिए?'' अपनी माँ को याद करते हुए वह सोचने लगी और सोचती चली गई। काफी समय बाद अपनी माँ के साथ सम्पर्क स्थापित करने में कामयाब हुई। जब गायत्री ने अध्या से सम्पर्क स्थापित किया तो उसे यह सन्देश प्राप्त हुआ कि ब्रह्मा तभी जागेगा जब तुम उसे छुओगी। कुछ देर सोचने के बाद गायत्री ने ब्रह्मा के चरण–कमल छुए।

जब ब्रह्मा का ध्यान भंग हुआ वह जाग गया और गुस्से में व्याकुल होकर कहने लगा–''वह पापी कौन है? जिसने मुझे समाधि से उठाया है? मैं तुम्हें श्राप दूँगा तुमने मेरा ध्यान भंग किया है।'' गायत्री ने कहा–''पहले मेरी बात सुनो, फिर श्राप देना। मैं तुम्हें सच्चाई बताती हूँ। मुझे, तुम्हारी माँ ने तुम्हें वापिस बुलाने के लिए भेजा है अब तुम जल्दी से चलो तुम्हारे बिना रचना कौन रचेगा?'' ब्रह्मा ने कहा–''मैं कैसे जा सकता हूँ मैंने अभी तक अपने पिता के दर्शन नहीं किए?'' गायत्री ने कहा–''तुम्हें उसके दर्शन हो जाएंगे पर अभी तुम मेरे साथ चलो, नहीं तो पछताओगे।''

ब्रह्मा ने कहा–अगर तुम इस बात की गवाही दो कि मैं अपने पिता के दर्शन कर चुका हूँ और मेरी माँ को इस बात का विश्वास दिलवा दो तो ही मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। यह सुनते ही गायत्री ने कहा–अगर तुम मेरी इच्छा पूरी करो तो मैं यह झूठ बोल सकती हूँ। ब्रह्मा ने कहा–अपनी

बात मुझे अच्छी तरह से समझाओ? गायत्री ने कहा–मेरे साथ संबंध बनाओ तभी मैं झूठ बोलूँगी।'' यह बहुत ही स्वार्थी बात है पर मैं तुम्हें ऐसा करने के लिए कह रही हूँ। इसे एक अच्छी बात और दान की चीज मानते हुए ऐसा करो। यह सब सुनकर ब्रह्मा ने अपने दिल में सोचा कि ''अब क्या करना चाहिए?'' अगर मैं इसकी बात नहीं मानता तो मेरा काम नहीं हो पाएगा। यह मेरी गवाही नहीं देगी और मुझे अपनी माँ के सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा। मैंने अपने पिता को नहीं देखा अगर मैं पाप के बारे में सोचूँगा तो मेरा लक्ष्य पूरा नहीं होगा। इसलिए मुझे इसकी बात मान लेनी चाहिए। ब्रह्मा ने उसके साथ संबंध बनाए। ब्रह्मा के दिमाग से अपने पिता के दर्शनों की दृढ़ता खत्म हो गई, अच्छे विचारों की जगह बुरे विचार आ गए।

पुहुपावती की रचना : जब, ब्रह्मा ने गायत्री को अपनी माँ के पास चलने के लिए कहा तो उसने कहा–''मेरे पास एक विचार है, मुझे एक और गवाह बनाने दो।'' ब्रह्मा ने कहा–''माँ को विश्वास दिलवाने के लिए कुछ भी करो।'' गायत्री ने अपने शरीर की गंदगी उतारकर एक बेटी की रचना की, उसमें अपना गुण मिलाकर उसे सावित्री नाम दे दिया। गायत्री ने सावित्रि से कहा–''कि तुम यह कहना कि ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन हुए हैं।'' सावित्रि ने कहा–''मैं इस बारे में कुछ नहीं जानती, मैं झूठी गवाही नहीं दूँगी।'' यह सुनकर वे दोनों बहुत चिन्तित हुए। गायत्री ने सावित्रि को बहुत तरीकों से मनाने की कोशिश की पर सावित्रि नहीं मानी। आखिरकार सावित्रि ने यह शब्द कहे–''अगर ब्रह्मा मेरे साथ संबंध बनाए मैं तभी झूठ बोलूँगी।'' गायत्री ने ब्रह्मा से कहा–''इसके साथ संबंध बनाओ तो ही हमारा काम पूरा होगा।'' ब्रह्मा ने सावित्रि के साथ संबंध बनाकर पापों का और बोझ अपने सिर पर उठा लिया। सावित्रि को पुहुपावती भी कहते हैं। अब वह तीनों माँ की तरफ चल पड़े।

अध्या द्वारा ब्रह्मा, गायत्री और सावित्रि को श्राप

ब्रह्मा ने अपनी माँ को नमस्कार किया। उसकी माँ ने उससे उसकी कुशलता पूछी, हे ब्रह्मा! क्या तुम्हें अपने पिता के दर्शन हुए? ये दूसरी औरत तुम कहाँ से लाए हो? ब्रह्मा ने कहा–''ये दोनों मेरी गवाह हैं

कि मैंने अपने पिता के दर्शन अपनी आँखों से किए हैं।'' माँ ने गायत्री से पूछा–ध्यान से विचार करके मुझे सच्चाई बताओ,'' क्या तुमने ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन करते हुए देखा है?'' गायत्री ने कहा–''ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन हुए हैं।'' ब्रह्मा ने अपने पिता के सिर पर फूल अर्पण किए और जल चढ़ाया है।

हे मेरी माँ! यह एक सच्चाई है, उन्हीं फूलों में से यह पुहुपावती बाहर आई। आप इस लड़की से पूछ लो कि ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन हुए हैं? फिर माँ ने पुहुपावती से पूछा,''जब ब्रह्मा ने उनके माथे को छुआ तो क्या हुआ?'' हे पुहुपावती! मुझे दर्शन की कहानी पूरे विस्तार से बताओ। फिर पुहुपावती ने कहा–हाँ माँ! यह सच है इस बुद्धिमान को अपने पिता के दर्शन हुए हैं।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–इन गवाहों की बातें सुनने के बाद अध्या बहुत हैरान हुई, उसे समझ नहीं आया कि इसके पीछे क्या रहस्य है?

अध्या की चिन्ता : अध्या ने सोचा, अलख निरंजन ने मुझे दृढ़निश्चय से कहा था कि कोई भी, कहीं भी उसे नहीं देख सकता। अध्या ने अलख निरंजन का ध्यान किया। निरंजन ने अध्या को बताया कि ब्रह्मा को मेरे दर्शन नहीं हुए हैं। ब्रह्मा झूठे गवाह लेकर आया है। ये तीनों झूठ बोल रहे हैं इनकी बात पर विश्वास मत करो।

अध्या का ब्रह्मा को श्राप देना : यह सुनकर अध्या को बहुत गुस्सा आया उसने ब्रह्मा को श्राप दे दिया कि कोई भी तुम्हारी पूजा नहीं करेगा, तुमने झूठ बोला है, कुकर्म किए हैं, तुम्हारे सिर पर नर्कों का बोझ है। तुम्हारे वंशज भी झूठ बोलेंगे, वे अंदर से पापी होंगे। वे लोगों को पुराणों की कहानियाँ सुनाएंगे मगर खुद उस पर अमल नहीं करेंगे। वे देवी–देवताओं की बहुत तरीकों से भक्ति करेंगे और दान के लिए गले काटेंगे। जो लोग उनके शिष्य बनेंगे उन्हें कभी भी आध्यात्मिक खजाना नहीं मिलेगा। अपने निजि स्वार्थ के लिए वे संसार में अपनी पूजा का गढ़

मजबूत करेंगे। वे अपने आपको ऊँचा और दूसरों को नीचा मानेंगे। हे ब्रह्मा! तुम्हारा कुल कलंकित होगा।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–जब, अध्या ने ब्रह्मा को श्राप दिया वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

अध्या का गायत्री को श्राप देना : गायत्री, अब तुम्हारी बारी है। तुम्हारे पाँच पति होंगे। तुम्हारी कुल बहुत ही ज्यादा फैलेगी और नष्ट भी हो जाएगी। तुम कई बार जन्म लोगी और ऐसा खाना खाओगी जो खाने लायक नहीं होगा। अपने स्वार्थ के लिए तुमने झूठ बोला है। तुम झूठी गवाह क्यों बनी? गायत्री ने इस श्राप को स्वीकार कर लिया फिर अध्या सावित्रि की तरफ देखने लगी।

अध्या का सावित्रि को श्राप देना : हे पुहुपावती! तुमने झूठ बोलकर अपना जन्म खराब कर लिया है। तुम्हारा निवास गंदगी में होगा। जाओ और नर्क में जाकर दुःख भोगो क्योंकि तुमने काम–वासना के लिए झूठ बोला है। जो तुम्हारा पालन–पोषण करेगा उसका वंश खत्म हो जाएगा। जाओ और केवड़ा–केतकी का अवतार लो।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–उन सबको श्राप दिया गया क्योंकि उन्होंने बहुत ही बेवकूफों वाली गलती की थी। औरत को काम–वासना की चीज बनाना भी काल पावर की सबसे बड़ी चाल है, ब्रह्मा, शिव यहाँ तक कि शंकदी और नारद भी इससे नहीं बच पाए। हे धर्मदास सुनो! सिर्फ वही इससे बच पाता है जो मन, वचन और कर्म से गुरु के चरणों से जुड़ा रहता है।

अध्या का पछतावा और अलख निरंजन से डर : उन्हें श्राप देने के बाद अध्या पछताती और सोचती है–''अब अलख निरंजन मेरे साथ क्या करेगा? मैं माफी के योग्य नहीं हूँ।''

विष्णु का काला होकर वापिस आना : अध्या प्यार से विष्णु से पूछती है, ''मेरे प्यारे बेटे! मुझे सच बताना जब तुम अपने पिता के दर्शन करने गए थे तब तुम गोरे थे, अब काले कैसे हो गए?'' विष्णु ने अध्या से

कहा–मैं अपने पिता के दर्शन करने के लिए अक्षत फूल हाथ में लेकर पाताल के रास्ते पर चल पड़ा। मैं शेषनाग की तरफ खिंच गया, जिसके जहर से मैं काला हो गया। उस समय मैंने एक आवाज सुनी जिसके बारे में मैं तुम्हें बताता हूँ। उस आवाज ने कहा–विष्णु अपनी माँ के पास जाकर उसे सच्चाई बता दो। सतयुग, त्रेता युग के बाद जब द्वापर युग का चौथा हिस्सा आएगा तब 'कृष्ण' के रूप में तुम्हारा अवतार होगा। उस समय तुम अपना बदला ले सकोगे। तुम कालिंदी नदी में शेषनाग को एक धागे के ऊपर चिपका दोगे। अगर कोई ताकतवर अपने से कमजोर को सताता है तो उसका बदला मैं लेता हूँ। फिर मैंने तुम्हारे पास वापिस आकर सच्चाई बता दी, कि मैंने अपने पिता के दर्शन नहीं किए। मेरा शरीर जहर की आग से काला पड़ गया।

अध्या, विष्णु को रोशनी के दर्शन देती है : इतना सुनते ही अध्या खुश हो गई, उसने विष्णु को अपनी गोद में बिठा लिया और कहा– मेरे प्यारे बेटे! अब मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के दर्शन कराऊँगी और तुम्हारे मन के भ्रम को मिटाऊंगी।

सबसे पहले अपने ज्ञान की आँखों से देखो और जो मैं कहती हूँ उसे अपने दिल से मानो। अपने मन को अपना रचयिता समझो। स्वर्ग या इससे नीचे के संसार में सिर्फ मन ही फैला हुआ है। मन अस्थायी और असत्य है। यह एक क्षण में बहुत सारे धोखे दिखा देता है। मन को कोई, कभी भी नहीं देख सकता। मन को निरंकार कहो और दिन–रात उसकी इच्छा के हिसाब से खुश रहो। अपने ध्यान को अंदर केन्द्रित करते हुए अंदर के खालीपन को देखो जहाँ पर प्रकाश जगमगा रहा है। अपने साँस को काबू में करते हुए गगन तक पहुँच जाओ, फिर आकाश के पथ पर चलो। विष्णु ने अपने मन के साथ वैसा ही किया जैसा कि उसकी माँ ने कहा था।

अपनी साँस को काबू में करके वह अंदर गुफा में गया और ध्यान करने लगा। आकाश में से आँधी की एक लहर से तेज आवाज हुई। उस आवाज को सुनकर उसका मन उत्सुक हो गया और सोचने लगा। उसे

वहाँ खाली जगह में सफेद, पीले, हरे और लाल रंग के बादल दिखाई दिए। उसके बाद धर्मदास! मन ने अपने आपको उसे वहाँ दिखाया। उसने रोशनी दिखाई जिसे देखकर विष्णु बहुत खुश हो गया। विष्णु ने अपनी माँ के सामने पूरी दीनता और निर्भरता से अपना सिर झुकाया। ''हे मेरी माँ! तुम्हारी कृपा से मैंने भगवान का दर्शन कर लिया है।''

धर्मदास ने कबीर साहब से विन्रमता से पूछा–हे भगवान! मैं इस बात पर थोड़ा कशमकश में हूँ। उस औरत ने उसे मन से विचार करने के लिए कहा। क्या इसी तरह से सब जीवों को भटकाया गया है?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! यह काल का स्वभाव है। इसी वजह से विष्णु को सतपुरुष का ज्ञान नहीं हुआ। उस औरत ने अमृत को छिपाते हुए बड़ी चालाकी से अपने बेटे को भी जहर दे दिया। काल और जिस रोशनी को विष्णु ने देखा था इन दोनों में कोई फर्क नहीं है। सच को समझने के बाद सच्चे धर्म से जुड़ जाओ। जब एक इंसान ज्योति जलाता है उस ज्योति को देखकर पतंगा उसके पास आता है वह उस ज्योति को अपना प्यारा समझता है पर जैसे ही उसे छूता है राख बन जाता है। अंजाने में वह ऐसे ही अपनी जान गँवा देता है।

काल उस ज्योति की तरह ही है। यह क्रूर काल किसी को नहीं छोड़ता। उसने विष्णु के करोड़ों ही अवतारों को खा लिया। ब्रह्मा और शिव को भी तकलीफें देने के बाद अपना खाज बना लिया। काल ने जीवों के लिए इतनी विपत्तियां खड़ी की हैं कि उनका वर्णन मैं कभी नहीं कर सकता। यह कसाई काल इतना निर्दयी है कि रोज एक लाख जीवों को अपना खाज बना लेता है।

धर्मदास ने कहा–मेरे भगवान! मेरे मन में एक शक आ गया है। अध्या को सतपुरुष ने बनाया था। अध्या निरंजन द्वारा निगल ली गई थी और सतपुरुष की अपार दया से ही उसके पेट से बाहर आ सकी थी। पर उसी अध्या ने धोखा किया सतपुरुष को छोड़कर यम को प्रगट कर दिया। उसने सतपुरुष का यह रहस्य अपने बेटों को भी नहीं बताया, उनसे भी काल निरंजन की भक्ति करवाई। अध्या ने ऐसा क्यों किया? उसने सतपुरुष

को छोड़कर काल से दोस्ती क्यों की?

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! औरत के लक्ष्णों को सुनो। जब एक परिवार में लड़की होती है उसे बहुत सुख–सुविधाओं से पाला जाता है। उसे खाना, कपड़ा और बिस्तर सब कुछ दिया जाता है। घर के लोग उसे पराया समझकर मान देते हैं। इन सब रस्मों को प्यार से निभाते हुए उसे उसके पति के साथ भेज दिया जाता है। जब वह लड़की अपने पति के घर जाती है तो पति के रंग में रंग कर अपने माता–पिता को भी भूल जाती है। धर्मदास यह औरत का गुण होता है। अध्या भी पराई बनकर काल का एक हिस्सा बन गई। इसलिए उसने विष्णु को सतपुरुष दिखाने की बजाय काल का रूप दिखा दिया।

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा–हे मेरे भगवान! अब मैं इस रहस्य को जान गया हूँ, मुझे बताओ इसके बाद क्या हुआ?

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–अध्या ने ब्रह्मा के घमंड को तोड़ दिया और अपने प्यारे बेटे विष्णु को बुलाकर कहा–''हे विष्णु! तुम्हें यह वरदान है कि तुम सब देवताओं में सबसे ज्यादा पूजे जाओगे।'' तुम्हारे मन में जो भी इच्छा होगी मैं उसे पूरा करूँगी। ब्रह्मा, बेदखल किया जाता है क्योंकि उसे झूठ और बुरी आदतों से प्यार था। अब तुम सभी देवताओं में ऊँचे हो सब तुम्हारी पूजा करेंगे।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–इस तरह अध्या ने अपनी दया से विष्णु को सर्वोच्च बना दिया। फिर वह शिव के पास गई, शिव अपनी माँ को देखकर खुशी से भर गया।

अध्या का शिव को आशीर्वाद देना : अध्या, शिव से कहती है,''मेरे प्यारे बच्चे शिव! तुम बताओ तुम्हारे दिल में क्या है? तुम्हें जो भी अच्छा लगता है वह माँगो तुम्हारी माँ तुम्हें देगी। मैं, तुम्हें तुम्हारी इच्छा के अनुसार वरदान देने के लिए दृढ़निश्चयी हूँ।'' शिव ने अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा–''माता! मैं वही करूँगा जो तुम मुझे आदेश दोगी। मैं सिर्फ यही वरदान माँगता हूँ कि मेरे शरीर का कभी भी विनाश ना हो।''

अध्या ने कहा–''ऐसा कभी नहीं हो सकता कोई भी अविनाशी नहीं बन सकता। अगर तुम योगा करके अपनी साँसों को काबू में कर लो तो तुम्हारा शरीर चार युगों तक रहेगा। जब तक, धरती और आकाश है तुम्हारे शरीर का कभी भी नाश नहीं होगा।''

धर्मदास ने कहा–मुझे सब रहस्य पता चल गए हैं। अब मुझे ब्रह्मा के बारे में बताएं, अध्या से श्राप मिलने के बाद ब्रह्मा ने क्या किया?

कबीर साहब ने कहा–जब विष्णु और शिव को वरदान मिले तो वे बहुत खुश हुए। श्राप मिलने के बाद ब्रह्मा ने बहुत दु:खी होकर विष्णु से कहा–''तुम मेरे भाई हो और देवताओं में सर्वोच्च हो। माता की तुम पर कृपा है। जबकि मुझे श्राप मिला हुआ है। हे मेरे भाई! मैं अपने कर्मों की वजह से पछता रहा हूँ माता को कैसे दोष दूँ? अब कुछ ऐसा करो जिससे माता के वचनों पर चलते हुए मेरा वंश भी चलता रहे।''

विष्णु ने कहा–''अपने मन से सारा शक और चिन्ता निकाल दो। तुम मेरे बड़े भाई हो। जो भी मेरा भक्त होगा वह तुम्हारे परिवार की भी सेवा करेगा। मैं सारी दुनिया में यह विश्वास फैला दूँगा कि मैं, ब्राह्मण के बिना किए गए यज्ञ और पूजा को स्वीकार नहीं करूँगा। जो ब्राह्मण को पूजेंगे वे अच्छा काम कर रहे होंगे। वही मुझे प्यारे होंगे सिर्फ उन्हीं को मैं अपने पास रहने के लिए जगह दूँगा।'' जब विष्णु ने यह कहा तो ब्रह्मा खुश हो गया। हे मेरे भाई! तुमने मेरे मन की पीड़ा को खत्म कर दिया है अब मैं खुश हूँ।

<u>काल का दक्षता पूर्वक संचालन</u> : धर्मदास! काल के कार्यक्षेत्र की तरफ देखो। उसने सारे संसार को धोखा दिया है। वह जीवों को इच्छाओं में रखते हुए भुलक्कड़ बना देता है। जन्म के बाद, हर जन्म में तकलीफें देता है। बाली, हरिश्चन्द्र, वान, वेराचन और कुन्ती के पुत्र बहुत अच्छे और त्यागी राजा थे। यह सारा संसार जो काल के काबू में है जानता है कि उन सबके साथ क्या हुआ? क्योंकि काल अपनी शक्ति से उनकी बुद्धि को काबू में रखता है। मन की लहरों में बहते हुए जीव भूल चुके हैं,

वे नहीं जानते कि उन्हें वापिस अपने घर कैसे जाना है?

धर्मदास ने कहा–मेरे भगवान! मुझे इसके बाद की कहानी बताओ? आपकी दया से अब मैं काल के इस धोखे को समझ रहा हूँ। आपने मुझे इस भव सागर में डूबने से बचा लिया है। अब मुझे बताओ कि उनके श्राप किस तरह से खत्म हुए?

गायत्री का अध्या को श्राप : कबीर साहब ने धर्मदास से कहा– धर्मदास! अब मैं तुम्हें कल्पना ना किए जा सकने वाले संसार के ज्ञान के बारे में बताऊँगा। जब गायत्री ने अपनी माँ के द्वारा दिए गए श्राप को स्वीकार किया तो उसने अपनी माँ को श्राप दिया, ''तुम उन पाँचों की माँ बनोगी जिनकी मैं पत्नी बनूँगी। तुम बिना आदमी की सहायता के एक बेटे को जन्म दोगी जिसे सारा संसार जानेगा।'' इस तरह वे दोनों ही अपने आपस के श्रापों की वजह से दुखी हुई। निर्धारित किए गए समय पर वे दोनों ही इंसानी शरीर में आई।

संसार की रचना का खास वर्णन : यह सब होने के बाद संसार रचा गया। चौरासी लाख योनियाँ और चार तरह की रचना बनाई गई। अध्या ने अंडज की रचना की। ब्रह्मा ने जेरज की रचना की। विष्णु ने नमी से जन्म लेने वालों की रचना की और शिव ने बीज से जन्म लेने वालों की रचना की। फिर शरीरों की रचना का काम शुरू हुआ। जिसने शरीर बनाए हैं उसे जानो। इस तरह चार तरह की रचनाएं चारों दिशाओं में फैल गई। हे धर्मदास! अब तुम चारों तरह के जीवन की रचना की कहानी सुनो।

चार तरह के जीवन

धर्मदास ने अपने हाथ जोड़ते हुए पूछा–हे सतगुरु! कृपा करके मुझे चार तरह के जीवों की रचना के बारे में बताओ। किस तरह से चौरासी लाख योनियों के शरीरों को बाँटा जाता है? उनका जीवनकाल क्या होता है? कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! मैं तुम्हें जन्मों के बारे में बताता हूँ।

चौरासी लाख योनियों की गिनती : नौ लाख तरह के पानी के

जीव और चौदह लाख तरह के पक्षी हैं। सत्ताईस लाख तरह के कीड़े–मकोड़े और तीस लाख तरह के पेड़–पौधे हैं। चार लाख तरह के जीव सोच–समझ सकते हैं, जिनमें इंसानी योनि सबसे ऊपर है। दूसरी योनियों में जीव भगवान को नहीं समझ सकते। कर्मों में बंधे हुए आते और चले जाते हैं।

इंसानी योनि सर्वोच्च क्यों है? : धर्मदास ने अपना सिर कबीर साहब के चरणों में झुकाया और यह बेनती की कि सब जन्मों में जीव एक समान ही होता है फिर उनमें एक जैसा ज्ञान क्यों नहीं होता? यह अंतर क्यों है? मुझे बताओ कि बीज, नमी, अंडज, जेरज से जन्मे हुए जीवों में कौन से तत्व हैं?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! बीज से जन्मे, जीवों में पानी का एक तत्व। नमी से जन्मे, जीवों में हवा और आग दो तत्व। अंडज से जन्मे, जीवों में पानी, हवा और आग तीन तत्व। जेरज से जन्मे, जीवों में पृथ्वी, आग, पानी और हवा चार तत्व होते हैं। इंसानी जामें में पाँच तत्व होते हैं जिस वजह से इंसान को ज्यादा ज्ञान होता है। यह नाम प्राप्त करके सतलोक जा सकता है।

सब इंसानों में एक जैसी बुद्धि क्यों नहीं होती? : धर्मदास ने कहा–हे कैदियों को छुड़ाने वाले! मेरी यह शंका भी दूर करो। सब इंसान, औरत और मर्द में एक जैसे तत्व होते हैं फिर भी इनकी बुद्धि एक जैसी क्यों नहीं होती? कुछ में दया, पवित्रता, सन्तुष्टि और क्षमाशीलता होती है। कुछ अपराधी और कुछ ठंडे दिल वाले होते हैं। कुछ काल जितने क्रूर होते हैं दूसरों को मारकर खा जाते हैं। कुछ बहुत दयालु होते हैं भगवान के बारे में सुनकर खुश होते हैं। लेकिन कुछ को काल के गुणगान गाना ही अच्छा लगता है। मेरे भगवान! मुझे समझाओ ये अलग–अलग गुण अलग–अलग इंसानों में क्यों होते हैं?

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–धर्मदास! मैं तुम्हें स्त्री और पुरुष के अंदर के गुणों के बारे में बताऊँगा जिससे इंसान बुद्धिमान या

बेवकूफ बन जाता है। जो आत्माएं, इंसानी शरीर में शेर, साँप, कुत्ता, लोमड़ी, कौवा, गिद्ध, सूअर, बिल्ली जैसे शरीरों से आती हैं वे ऐसा खाना खाती हैं जो खाने लायक नहीं होता। उन्हें बुराईयों से भरा हुआ इंसान समझो, वे पिछले जन्म का स्वभाव नहीं छोड़ते। बहुत अच्छे कर्म ही उन्हें मुक्त करवा सकते हैं। इसी वजह से, वे इंसानी जामें में रहते हुए भी जानवरों जैसा व्यवहार करते हैं। आत्मा, जिस भी शरीर से आई है उसका स्वभाव उसी मुताबिक होता है। वे पापी, हिंसात्मक और हत्यारे बनकर आते हैं। उनके गुण बदले नहीं जा सकते।

योनि प्रभाव मिटाने का तरीका : जब कोई सतगुरु से मिलता है, सतगुरु उसे ज्ञान दे देता है तो वह अपनी पशुओं जैसी हरकतें छोड़ देता है। भाई! नाम के सेंड पेपर का इस्तेमाल करके ही आत्मा के ऊपर से जंग हटाया जा सकता है। जब एक धोबी कपड़े धोता है तो वह साबुन का इस्तेमाल करता है जिन कपड़ो में थोड़ा मैल होता है उन्हें धोने में कम मेहनत लगती है। जिन कपड़ो में बहुत ज्यादा गंदगी होती है उन्हें धोने में ज्यादा मेहनत लगती है। इस इंसान की प्रकृति कपड़े और गंदगी जैसी ही है। कुछ आत्माएं थोड़ा समझाने और थोड़ी मेहनत करने से ही ज्ञान प्राप्त कर लेती हैं।

धर्मदास ने कहा–यह तो कुछ ही शरीरों का वर्णन था, पर अब मुझे हर तरह की रचना के बारे में बताओ। जब एक आत्मा इंसानी शरीर में चारों तरह की खानियों से आती हैं तो उनमें क्या–क्या गुण होते हैं?

चार खानियों के लक्षण

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! मैं तुम्हें रचना की चार खानियों के लक्षण बताऊँगा। आत्मा, चारों तरह की खानियों से भटककर इंसानी शरीर में आती है। आत्मा ने मनुष्य देह में आने से पहले जो शरीर छोड़ा होता है उसके लक्षणों के मुताबिक ही इंसान को जन्म मिलता है। अब मैं, तुम्हें आत्माओं के अच्छे और बुरे गुणों के बारे में बताऊँगा, जो कि उनके पिछले जन्म के शरीरों पर आधारित हैं।

बीज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों की पहचान : मैं, तुम्हें उन आत्माओं के बारे में बताऊँगा जो बीज खानि से इंसानी जामें में आती हैं। आत्मा, शरीर अपनी पिछली योनि के आधार पर ही लेती है। इन आत्माओं के पास क्षणिक बुद्धि होती है इन्हें अपना मन बदलने में ज्यादा समय नहीं लगता।

ये लम्बे कुरते, कमरबन्द और साफे पहनते हैं। इन्हें राजदरबार में सेवा करना अच्छा लगता है। ये घोड़े की सवारी करते हैं और अपनी कमर में तीन तलवारे बाँधकर रखते हैं। ये आँखों के इशारों से अपने आपको व्यक्त करते हुए दूसरे आदमियों की पत्नियों के साथ प्रणय चेष्टा करते हैं। ये बहुत ही मिठास से बोलते हैं इनके अंदर काम होता है। ये दूसरों के घरों में झाँकते हैं जब पकड़े जाते हैं तो इन्हें राजा के पास लाया जाता है। जब लोग इन पर हँस रहे होते हैं तब भी इन्हें शर्म महसूस नहीं होती।

ये एक क्षण भक्ति और दूसरे ही क्षण सेवा करने लगते हैं। ये एक क्षण बड़े ध्यान से धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं और दूसरे ही क्षण नाचना शुरू कर देते हैं। एक क्षण बहुत हिम्मत वाले होते हैं दूसरे ही क्षण डरपोक बन जाते हैं। ये एक क्षण बहुत ईमानदार होते हैं और दूसरे ही क्षण दूसरों के ऊपर बहुत से आरोप लगाने शुरू कर देते हैं। एक क्षण धार्मिक होने का नाटक करते हैं दूसरे ही क्षण बुरे कर्म करते हैं। ये खाते समय अपने–आपको खुजलाते हैं और हमेशा अपने हाथों और टांगों को मसलते रहते हैं। खाने के बाद सो जाते हैं अगर कोई इन्हें उठाता है तो उसे मारने के लिए दौड़ते हैं। इनकी आँखे हमेशा लाल रहती हैं।

धर्मदास! इन योनियों से आने वाले जीवों का मन कभी भी स्थिर नहीं रहता। ये जो कुछ भी हासिल करते हैं उसे एक क्षण में गँवा देते हैं। ऐसे जीव जब सतगुरु से मिलते हैं तो सतगुरु उनके पिछले जन्मों के सब असर खत्म कर देता है। जब ये जीव गुरु के चरणों में अपने आपको समर्पित कर देते हैं तो गुरु इन्हें सतलोक भेज देता है।

उष्मज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों की पहचान

कबीर साहब कहते हैं–सुनो धर्मदास! मैं तुम्हें उष्मज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों का रहस्य बता रहा हूँ, ये शिकार करके जीवों को मारते हैं और उन्हें अलग–अलग तरीकों से पकाकर खाते हैं। ये नाम और भगवान के ज्ञान की निन्दा करते हैं। ये चौका और नारियल के रस्म की भी निन्दा करते हैं। ये बोलने के बहुत से तरीके जानते हैं और इन्हें दूसरों को समझाने का बहुत शौंक होता है। ये लोगों की भीड़ में झूठ बोलते हैं। टेढ़ी–मेढ़ी पगड़ियाँ पहनते हैं और उसका एक छोर लटकता हुआ छोड़ देते हैं।

ये दया या सच्चाई अपने साथ नहीं लाते और उन लोगों पर हंसते हैं, जो दूसरों की मदद करते हैं। ये तिलक और चन्दन की धूड़ी अपने माथे पर लगाते हैं। चमकीले कपड़े पहनकर बाजार में घूमते हैं। इनके दिल में पाप होता है, लेकिन दयालु होने का दिखावा करते हैं। इनके दांत लम्बे और शरीर डरावना होता है। आँखें पीली और गहरी होती हैं। ऐसे जीव निश्चय ही यम के पास जाते हैं।

अंडज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों की पहचान : मैं तुम्हें अंडज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों के बारे में बताता हूँ– इनमें आलस, नींद, काम, गुस्सा और गरीबी होती है, इन्हें चोरी करना अच्छा लगता है। ये बहुत सुस्त होते हैं, इनमें माया की बहुत जबरदस्त लालसा होती है। इन्हें निन्दा करना बहुत पसन्द होता है। ये कभी रोते, कभी हंसते तो कभी गाते हैं। ये भूत–प्रेतों की सेवा करना पसन्द करते हैं। जब ये दूसरों को दान देते हुए देखते हैं तो इन्हें बहुत ईर्ष्या होती है।

ये दूसरों से बहस करते हैं और अपने मन में भगवान के ज्ञान के लिए कोई जगह नहीं रखते। ये गुरु, सतगुरु को नहीं मानते और वेदों शास्त्रों का अपमान करते हैं। ये दूसरों को अपने से नीचा और अपने आपको ऊँचा समझते हैं। ये नहाते नहीं, गंदे कपड़े पहनते हैं। इनकी आँखें गंदगी से भरी रहती हैं और मुंह से लारें टपकती रहती हैं। इन्हें जुआ खेलना अच्छा लगता है। इन्हें गुरु चरणों की महिमा के बारे में ज्ञान नहीं होता।

इनका सिर झुका हुआ, टांगें लम्बी होती हैं, ये हमेशा सोते ही रहते हैं।

जेरज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों की पहचान : धर्मदास सुनो! अब मैं तुम्हें जेरज खानि से मनुष्य देह में आने वाले जीवों के लक्षण बताता हूँ। ये सन्यासी की तरह चुप रहते हैं। ये धार्मिक किताबों को पढ़ने के बाद ही धार्मिक कार्य करते हैं। ये धार्मिक स्थानों पर जाकर योगा और समाधि लगाते हैं। ये अपने मन को सतगुरु के चरणों में लगाते हैं, वेदों और पुराणों की बातें करते हैं। ये लोगों के समूह में बैठकर अच्छी बातें करते हैं। ये राजा बन सकते हैं। औरतों में रस लेते हैं पर कभी भी अपने मन में कोई शंका नहीं लाते। इन्हें दौलत की खुशी पसंद है, ये आरामदायक बिस्तर पर सोते हैं। इन्हें अच्छा खाना पसंद है अक्सर लोंग और पान खाते हैं। ये अपना बहुत सा पैसा दान करने में खर्च करके अपने दिल को पवित्र करते हैं। इनकी आँखें चमकीली, शरीर मजबूत होता है। इनके हाथों में स्वर्ग होते हैं ये हमेशा ही मूर्तियों के सामने झुकते हैं। ये बहुत ही नम्रता वाले जीव होते हैं। दृढ़निश्चय से शब्द के रास्ते पर चलते हैं।

मनुष्य देह से मनुष्य देह में आने वाले जीवों की पहचान : धर्मदास! अब उन आत्माओं के बारे में सुनो जो इंसानी जामें से इंसानी जामें में आती हैं। धर्मदास ने कहा–हे मेरे भगवान! मेरे मन में एक शंका आ गई है कृपया करके मुझे समझाएं? आपने पहले यह बताया है कि चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद एक आत्मा इंसानी शरीर में आती है। मुझे इसका रहस्य बताओ?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! जो इंसान अपने समय से पहले मर जाता है वह इंसानी जामें में दोबारा से आता है। जो बेवकूफ लोग इस बात को नहीं समझते वे इसे जलते दीपक की बत्ती से समझ सकते हैं। अगर तेल से भरा हुआ दीपक आंधी के झोंके से बुझ जाए तो उसे दोबारा से जला दिया जाता है। इसी तरह से आत्मा दोबारा से इंसानी जामें में आती है। मैं तुम्हें ऐसे जीवों के लक्षण बताता हूँ।

ऐसे इंसान दूसरे इंसानों से बहादुर होते हैं। भय कभी भी उनके पास नहीं आता। ये माया और संसारिक चीजों की तरफ आकर्षित

नहीं होते। इन्हें देखते ही इनके दुश्मन काँपने लग जाते हैं। ये सच्चे शब्द में विश्वास रखते हैं इन्हें निन्दा के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता। ये हमेशा ही सतगुरु के लिए प्यार रखते हैं और दीनता से बोलते हैं। ये ज्ञान की खोज करते हैं और लोगों को जाहिर नहीं होने देते। ये लोगों को सच्चे नाम के बारे में बताते हैं। धर्मदास! जिस इंसान में ऐसे लक्षण हों उसे इंसानी जामें से आया हुआ समझो।

जिसे शब्द मिल जाता है वह बार–बार जन्म–मरण की गंदगी से मुक्त हो जाता है। जिस जीव को नाम और सिमरन मिल जाता है वह सतलोक पहुँच जाता है। ऐसी आत्मा जो गुरु के शब्द को दृढ़निश्चय के साथ स्वीकार करती है वह अमृत की तरह अमूल्य हो जाती है। जिस आत्मा के पास सतनाम की ख्याति होती है काल उसे नहीं रोकता।

चौरासी लाख योनियाँ क्यों बनाई गई?

धर्मदास ने कहा–आपने मुझे चार तरह की खानियों के बारे में बता दिया है। अब मैं, जो कुछ भी पूछूँ उसके बारे में कृपया करके बताओ? ये चौरासी लाख योनियाँ क्यों बनाई गई?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! इंसानी शरीर प्रसन्नता और खुशी देने वाला है। सिर्फ इंसानी जामें में ही गुरु का ज्ञान पाया जा सकता है। चौरासी लाख योनियों को भुगतने के बाद ही इंसानी जामा मिलता है। यह मूर्ख अपनी पिछली योनियों की आदत नहीं छोड़ता। सच्चे नाम की तरफ नहीं लगता, लगातार काल के मुँह में जाता है। इसे हर बार समझाया जाता है लेकिन यह फिर भी उन्हीं समस्याओं को आमंत्रित करता है अगर इंसानी जामें में शब्द–नाम को प्राप्त कर ले तो अपने निज–धाम वापिस जा सकता है।

प्यार को समझते हुए, शरीर से ऊपर उठकर जो जीव शब्द–नाम में दृढ़ता प्रगट कर लेता है, सिमरन का प्रशाद ग्रहण कर लेता है। सतगुरु की दया से रास्ते पर आ जाता है। कौवे की आदत को छोड़कर

वह हंस का रास्ता अपना लेता है। इस तरह की आत्मा सच्चे गुरु को पहचान लेती है।

धर्मदास ने कहा–हे मेरे भगवान! वह दिन मेरे लिए बहुत अच्छा था जिस दिन मैंने आपके दर्शन पाए। मुझ पर दया करो और मुझे यह वरदान दो कि मैं दिन–रात आपके चरणों में ही लगा रहूँ। एक क्षण के लिए भी मेरा मन ना भटके। हे दया के सागर! मैं अपने–आपको आप पर कुर्बान करता हूँ। मुझे और ज्यादा स्पष्ट करके समझाओ कि चारों तरह की खानियों की जिंदगी बनाने के बाद क्या किया गया?

काल का जीवों को कैद करना

कबीर साहब ने कहा–सुनो धर्मदास! काल का खेल इस तरह का है जिसे पंडित और काज़ी भी नहीं समझ पाए। वे काल को ही भगवान समझते हैं। अमृत छोड़कर विष पीते हैं। जीव जिनके अंदर पाँच तत्व और तीन गुण हैं उनके साथ चौदह यम हैं। इस तरह इंसानी जामें की रचना हुई।

ओंकार ही वेदों की जड़ है। ओंकार में ही सारा संसार खोया हुआ है। ओंकार ही निंरजन है। सतपुरुष और उसका नाम गुप्त है। ब्रह्मा ने अट्ठासी हजार जीवों को जन्म दिया, शास्त्र और पुराण बनाए। जिनके अंदर जीव फँस गए। ब्रह्मा जीवों को गलत रास्ते पर डालकर भ्रमित करता है और उन्हें 'अलख निरंजन' की भक्ति करने में लगा देता है। वेदों की शिक्षाओं को मानते हुए सभी आत्माएं भूल चुकी हैं सतपुरुष के रहस्य को कोई नहीं जानता। हे धर्मदास! समझो निरंजन ने किस तरह यह खेल रचा है?

पहले राक्षस, देवी–देवता, ऋषि–मुनि बनाए। फिर काल ने अपने आपको रक्षक के रूप में अवतरित करके राक्षसों का नाश किया। इस तरह काल जीवों को बहुत सारे नाटक दिखाता है। जिसको देखकर जीव उस पर विश्वास करते हैं कि यही हमारा भगवान, रक्षक है। अपना नाटक जीवों को दिखाते हुए अन्त में वह उन्हें खा जाता है। फिर ब्रह्मा ने अढ़सठ तीर्थ, कर्म, पाप और पुण्य बनाए। बारह राशियां, सत्ताइस ग्रह, सात दिन और पन्द्रह तिथियाँ बनाईं, चार युगों की रचना की। मिनट, सैकिंड और

साँस लेने का समय निर्धारित किया। कार्तिक और माघ के महीनों को शुभ माना गया। काल के इस खेल को कुछ ही लोग समझ सकते हैं।

तीर्थ यात्रा और पवित्र जगहों को महत्व दे दिया। इस तरह जीव अपने भ्रम को नहीं छोड़ते और अपने आपको नहीं पहचानते। जीव अच्छे और बुरे कर्मों में फँसे हुए हैं। जीव सच्चे शब्द के बिना बचाए नहीं जा सकते। सच्चे शब्द के बिना जीव काल के मुँह में चले जाते हैं।

जब तक हम सतपुरुष की डोरी नहीं पकड़ते, अलग–अलग शरीरों में भटकते रहते हैं। काल, आत्माओं को बहुत तरह से भ्रमित करता है इसलिए जीव सतपुरुष के रहस्य को नहीं जान पाते। जीव अपने फायदे के लिए लोभ में फँसे हुए हैं। अपनी इच्छाओं की वजह से वे काल का भोजन बन जाते हैं। काल के इस नाटक को कोई नहीं जानता।

पहले सतयुग के रीति–रिवाज सुनो। जिसमें काल आत्माओं को खा जाता है। काल बहुत ही विशाल और क्रूर कसाई है। काल हर रोज एक लाख आत्माओं को खाता है। इसके पास एक पत्थर है जो दिन–रात गर्म रहता है। यह जीवों को उस पर डाल देता है। जीवों को जलाता हुआ उन्हें दर्द देता है। फिर उन्हें चौरासी लाख योनियों में धकेल देता है। यह उन्हें अलग–अलग शरीरों में भटकने के लिए मजबूर कर देता है। जीवों ने बहुत तरह से चिल्लाने की कोशिश की। गर्म पत्थर की गर्मी से जीव चिल्लाए। हे भगवान! ''हमारी सहायता करो काल हमें असहनीय दर्द दे रहा है।''

जब सतपुरुष ने आत्माओं की ऐसी दयनीय स्थिति देखी तो सतपुरुष को उन पर दया आ गई। फिर उस दयालु भगवान ने मुझे बुलाया और बहुत सारी बातें समझाई। आत्माओं को जगाने के लिए कहा। साथ ही यह भी कहा जो भी मुझे देखेगा वह ठंडक महसूस करेगा।

मैंने, सतपरुष के आदेशों को मानकर उनके शब्दों को अपने सिर का ताज बनाया। मैं उसी क्षण सतपुरुष के आगे सिर झुकाकर चल पड़ा। मैं, वहाँ पर खड़ा हो गया जहाँ जीवों को जलाया जा रहा था। मुझे देखकर उन जीवों ने पुकारा, हे भगवान! हमारी रक्षा करो, हमें बचाओ। मैंने

जोर से सतशब्द बोला और जीवों को सतपुरुष के शब्द के साथ जोड़ दिया।

जीवों की प्रार्थना

हे प्रभु! ''आप धन्य हैं आपने हमें इस आग से बचाया है। हे प्रभु! कृपया करके हमें यम से बचा लो, हम पर दया करो।''

मैंने आत्माओं को समझाया कि अगर मैं बल का प्रयोग करूँगा तो सतपुरुष के वचनों को नहीं रख पाऊँगा। ''फिर जब तुम संसार में जाकर इंसानी जामा धारण करोगे तो शब्द से प्यार करना। सतपुरुष के नाम और सिमरन को पहचानना। जब तुम शरीर पाकर सत–शब्द में मग्न हो जाओगे तभी तुम्हारी आत्मा सतलोक जा सकती है।''

जहाँ आसा तहाँ वासा

जहाँ पर तुम्हारी इच्छा होती है तुम वहीं जन्म लेते हो। इस शरीर में रहकर तुम जो भी इच्छा रखते हो वह इच्छा अंत में तुम्हें वहीं ले जाती है। इस संसार में शरीर ग्रहण करने के बाद अगर तुम सतपुरुष को भूल जाओगे तो काल तुम्हें खा जाएगा।''

जीवों ने कहा–''हे भगवान! जब हम शरीर में जाते हैं तो इस ज्ञान को भूल जाते हैं। यमराज को याद करके सोचेते हैं कि यही सतपुरुष है, जिसका कोई आकार नहीं। राक्षस, मनुष्य, मुनि और तैंतीस करोड़ देवी देवता सभी निरंजन की रस्सी से बँधे हुए हैं।''

कबीर साहब ने जीवों से कहा–''हे जीवो सुनो! यह मन का एक धोखा है क्योंकि मन की वजह से ही काल का शिकंजा और भी मजबूत हो जाता है।''

काल ने अपनी कार्यकुशलता का इस्तेमाल करते हुए बहुत सारे रसों–कसों की रचना की। तीर्थ–यात्रा, व्रत, जप, योग ये सब काल के फंदे हैं। कोई नहीं जानता कि इनसे कैसे बचा जाए? काल खुद शरीर धारण करता है और अपनी पूजा करवाता है। काल बहुत ही बुरा है, जीव इसके काबू में हैं। जन्म–जन्मांतरों में वे काल के द्वारा दंडित किए जाते हैं क्योंकि वे सच्चे नाम को नहीं पहचानते।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–मैंने, जीवों को ज्ञान दिया, ''कि जब तुम शरीर ग्रहण करके संसार में जाओगे तब मैं तुम्हें शब्द का रहस्य बताऊँगा। जब तुम सतनाम की रस्सी पकड़ लोगे तो मैं तुम्हें यमों से छुड़वा दूँगा।'' जीवों को जगाने और खुशी देने के बाद मैं सतपुरुष के पास गया। सतपुरुष को जीवों की दयनीय स्थिति के बारे में बताया। वह दयालु सतपुरुष जिसके चरणों में हमारी सुरक्षा है उसने मुझे बहुत से तरीके बताए जिससे जीवों को शब्द याद दिलाकर वापिस बुलाया जा सकता है।

धर्मदास ने कहा–सतगुरु! मुझे बताओ वह कौन सा शब्द है जो जीवों को बचाता है? कबीर साहब ने कहा–सतपुरुष ने मुझे जीवों को 'शब्द' याद दिलाकर वापिस लाने के लिए कहा। भगवान ने मुझे वह दिया जो अदृश्य है। नाम मुक्ति देने वाला है। सतपुरुष ने मुझे वह अधिकार और चिह्न दिया जिससे जीवों को उससे जोड़ा जा सकता है।

वह आवाज, जुबान के बिना बनाई गई है लेकिन एक पूर्ण सन्त की मदद से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। पाँच अमृत, मुक्ति की जड़ हैं। वह आत्मा जिसे इस तरह से नाम मिल जाता है उसे बार–बार अलग–अलग गर्भों में नहीं जाना पड़ता। सतपुरुष ने मुझे उन जीवों की कुल का उद्धार करने के लिए कहा, जिन्हें नाम मिला हुआ था। ऐसी आत्माएं नाम की रस्सी पकड़कर सतलोक में जाएंगी इन्हें देखकर काल भी भयभीत हो जाएगा।

सतपुरुष ने मुझसे कहा, जब तुम जीवों को अपना शिष्य बनाना तो उन्हें यम से मुक्त कर देना। मैंने तुम्हें यह ज्ञान दे दिया है, अब तुम अपने शिष्यों को यह ज्ञान दे सकते हो।

गुरु की महिमा

इंसान को गुरुमुख का शब्द हमेशा ही अपने दिल में रखना चाहिए। उसे दिन–रात नाम का अमृत पीना चाहिए। जिस तरह एक औरत में, अपने पति के लिए प्यार होता है उसी तरह एक शिष्य में अपने गुरु स्वरूप के लिए प्यार होना चाहिए। उसे हर क्षण गुरुमुख की सुंदरता को देखना चाहिए। सेवक की हालत चकोर जैसी होनी चाहिए उसके लिए गुरु

चन्द्र जैसा होना चाहिए। जिस तरह से एक अच्छी पत्नी हमेशा अपने पति के चरणों में लगी रहती है वह सपने में भी किसी और आदमी के बारे में नहीं सोचती, वह दोनों ही कुलों का नाम रोशन करती है।

जिस तरह से एक अच्छी पत्नी अपने पति को याद करती है उसी तरह से शिष्य को भी अपने गुरु के आदेश को मानना चाहिए। धर्मदास! गुरु से बड़ा कोई नहीं है। भ्रम को छोड़कर सतगुरु की भक्ति करो। जो लोग तीर्थ यात्रा करते हैं, देवी–देवताओं की सेवा करते हैं और अपने सिर का भी बलिदान दे देते हैं, इससे उनको कोई फायदा नहीं होता। यह संसार भ्रम में भूला हुआ है।

हे धर्मदास! गुरु भक्ति कभी बदली नहीं जा सकती, यह बहुत महान है। गुरु भक्ति से अच्छा और कुछ भी नहीं है। जप–तप, योग, व्रत, दान और धार्मिक कर्म गुरु भक्ति की तुलना में तुच्छ हैं। अगर सतगुरु दया करे तो ही कोई मुक्त व सुरक्षित हो सकता है।

जो गुरु की शरण में गए, उन्होंने इस जीवन के भव सागर को पार कर लिया। अगर कोई पूर्ण गुरु को धारण करता है तो गुरु उसे सच व झूठ का ज्ञान करवा देता है। पूर्ण गुरु सच्चाई का रास्ता दिखाता है। पूर्ण गुरु सतपुरुष का संदेश देता है और जन्म–जन्मांतर की पीड़ा को खत्म कर देता है।

उसको ही पूर्ण सन्त की तरह स्वीकार करो जो सच्चखंड दिखाता है। उसी के शब्दों को सच मानो, जो तीन को छोड़कर चौथे में जाता है। यह शरीर पाँच और तीन के काबू में है। गुरु की शिक्षा का यही निचोड़ है।

सिमरन करने से प्राणी अपने आपको शब्द में मिला लेता है। शरीर धारण करने का यही मकसद है, वह ना कभी आता है ना कभी जाता है। शरीर में ही बिना शरीर का बन जाता है।

7 . कबीर साहब का आगमन

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! मैं बहुत ही नसीब वाला हूँ जिसे आपने अपना दर्शन दिया। मैं, आपकी महानता का वर्णन नहीं कर सकता। मैं अंजान जीव था आपने मुझे जगा दिया है। मुझे आपके अमृत से भरे शब्द बहुत अच्छे लगते हैं। आपके शब्द सुनकर मोह और अंहकार भाग जाते हैं। अब, आप मुझे यह बताओ कि आप इस संसार में पहली बार कैसे आए?

सतपुरुष के आदशों को मानते हुए कबीर साहब आत्माओं को जगाने के लिए आते हैं और रास्ते में निंरजन से मिलते हैं।

हे धर्मदास! अब तुमने मुझसे यह पूछ लिया है तो मैं तुम्हें हर युग की कहानी बताऊँगा। जब सतपुरुष ने मुझे आज्ञा दी तो मैं जीवों के लिए इस पृथ्वी पर आया। सतपुरुष को नमस्कार करने के बाद मैंने चलना शुरू किया और निरंजन के दरबार में पहुँचा।

पहली बार जब मैं आत्माओं के लिए आया मेरे सिर पर सतपुरुष का तेज था। उस युग में मेरा नाम 'अचिंत' था। मुझे देखकर अन्यायी निरंजन मेरे नज़दीक आया और गुस्से से उत्तेजित होकर मुझसे पूछा, ''जोगजीत! तुम यहाँ क्यों आए हो? क्या तुम मुझे मारने आए हो? मुझे सतपुरुष के शब्द बताओ?''

मैंने कहा–''हे निरंजन! मैं संसार में जीवों के लिए जा रहा हूँ। तुम बहुत ही चालाक हो तुमने आत्माओं को बहुत ही धोखे दिए हैं। तुम लगातार आत्माओं को परेशान करते हो। तुमने सतपुरुष के रहस्य को छिपाकर अपनी ख्याति ही जीवों के सामने दिखाई है। तुम उस गर्म पत्थर पर आत्माओं को जलाकर, उन्हें खा जाते हो। इसलिए सतपुरुष ने मुझे आदेश दिया है कि मैं आत्माओं को जगाकर उन्हें सतलोक वापिस ले जाऊँ। इससे वह तुम्हारे दुःखों से बच जाएंगी। मैं, संसार में जाकर आत्माओं

को परवाना देकर सतलोक भेज दूँगा।'' यह सुनकर काल ने रूद्र रूप धारण कर लिया और मुझे डराने की कोशिश की।

निरंजन ने कहा–''मैंने सत्तर युग तपस्या की, तभी सतपुरुष ने मुझे यह राज्य और महानता दी। जब मैंने चौंसठ युगों तक फिर तपस्या की तो उसने मुझे रचनाओं के आठ खंड दिए। तुमने मुझे मारकर बाहर फैंक दिया इसलिए जोगजीत! अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।''

मैंने निरंजन से कहा मैं तुमसे नहीं डरता। मेरे पास सतपुरुष की ज्योति और बल है। फिर मैंने सतपुरुष की ज्योति का सिमरन किया और शब्द के हथियार से उस नाकारात्मक शक्ति पर हमला किया। तभी मैंने उसकी तरफ देखा उसका माथा काला पड़ चुका था। उस समय काल की स्थिति एक पर कटे पक्षी की तरह थी। वह बहुत ही गुस्से में आ गया पर कुछ कर नहीं सका और मेरे पैरों में गिर गया।

निरंजन ने कहा–''सुनो ज्ञानी! मैं तुमसे बेनती करता हूँ तुम मेरे भाई हो फिर भी मैंने तुम्हारा विरोध किया, यह मेरी गलती है। मैं तुम्हें सतपुरुष के बराबर मानता हूँ। मेरे अंदर तुम्हारे लिए और कोई भी भाव नहीं है। तुम सब कुछ जानने वाले महान भगवान हो। अब माफी का छाता मेरे ऊपर भी फैला दो।'' जैसे सतपुरुष ने मुझे यह राज्य दिया, तुम्हें भी मुझे एक तोहफा देना चाहिए। तुम सोलह बेटों में सबसे बड़े और सतपुरुष के बराबर हो।

ज्ञानी ने कहा–''सुनो निरंजन! तुम परिवार में एक कलंक हो। मैं आत्माओं को वापिस लेने जा रहा हूँ। मैं, उन्हें सतनाम और 'सतशब्द' में दृढ़ कर दूँगा। मैं, सतपुरुष के आदेश से आत्माओं को जीवन के भव सागर से मुक्त कराने आया हूँ। इस समय, मैं सतपुरुष की आवाज से तुम्हें एक क्षण में बाहर निकाल सकता हूँ।''

निरंजन ने बेनती की–''मैं तुम्हारा दास हूँ, मुझे गैर मत समझो। हे ज्ञानी! मेरी यह बेनती है कि तुम मेरा नुकसान मत करो। सतपुरुष ने मुझे यह राज्य दिया है अगर तुम भी कुछ दे दो तो मेरा मकसद पूरा हो

जाएगा। अब मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे। तुम आत्माओं को मुझसे ले जा सकते हो। मैं, तुम्हें कहता हूँ कि जीव तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, मेरे पास ही आएंगे। ये जिस पिंजरे में फँसे हुए हैं वह बहुत ही मजबूत है।

मैंने, वेद–शास्त्र, स्मृतियाँ और बहुत तरह के साधन बनाए हुए हैं। सतपुरुष की बेटी तीनों देवों की प्रधान है। उन तीनों ने भी बहुत सारे पिंजरे बनाए हुए हैं और वे अपने मुँह से मेरा ही ज्ञान देते हैं। वे आत्माओं से मन्दिरों, देवों और पत्थरों की पूजा करवाते हैं और उन्हें व्रत, तीर्थ–यात्रा, जप और तप में लगाए रखते हैं। मैंने तपस्या, त्याग, धार्मिक क्रियाक्रम, व्यवहार के नियम और बहुत तरह के पिंजरे बनाए हैं। इसलिए ज्ञानी! अगर तुम संसार में जाओगे तो आत्माएं तुम्हारी बात नहीं मानेंगी।''

ज्ञानी ने कहा–''सुनो हे अन्यायी! 'सतशब्द' के द्वारा मैं, वे सारे फंदे नष्ट कर दूँगा जो तुमने बनाए हैं। जो आत्माएं मेरे शब्द को पकड़ लेंगी वे सब तुम्हारे शिकंजों से आजाद हो जाएंगी। जब आत्माएं मेरे शब्द को पहचानेंगी तो तुम्हारे द्वारा बनाए गए भ्रमों को छोड़ देंगी। तुम्हारी रचना से ऊपर उठ जाएंगी और मैं उन्हें सतनाम की समझ देकर सतलोक वापिस ले जाऊँगा।''

मैं, आत्माओं को उस दयावान सतपुरुष के शब्द के साथ जोड़ दूँगा। ऐसी आत्माएं पवित्र और संतुष्ट हो जाएंगी। सतपुरुष का सिमरन करने से वे नाम का गुणगान करेंगी। मैं, तुम्हारे सिर पर अपना पैर रखकर आत्माओं को वापिस सतलोक भेज दूँगा।

मैं, नाम का अमृत फैलाकर आत्माओं को जगा दूँगा। हे निरंजन! मैं तुम्हारे घमंड को तोड़ दूँगा। भक्ति में निपुण होकर आत्माएं परवाना प्राप्त कर लेंगी। मैं उन्हें सतपुरुष के नाम के साथ जोड़ दूँगा। ऐसी आत्मा के नजदीक शैतान शक्ति नहीं आ पाएगी।

इतना सुनते ही काल भयभीत हो गया और अपने हाथ जोड़कर उसने प्रार्थना की, ''हे भगवान! तुम दयावान हो मुझ पर दया करो। सतपुरुष ने मुझे श्राप दिया है कि मैं रोज एक लाख जीवों को खाऊँगा। अगर सारी

आत्माएं ही सतलोक पहुँच जाएंगी तो मेरी भूख कैसे मिटेगी? सतपुरुष ने मुझ पर दया करके मुझे संसार का यह राज्य दिया है। तुम्हें भी मुझ पर दया करनी चाहिए। मैं जो भी माँगूं मुझे वरदान के रूप में दे देना चाहिए। सतयुग, द्वापर और त्रेता इन तीनों युगों में बहुत कम आत्माएं सतलोक वापिस जानी चाहिए। जब चौथा युग (कलयुग) आएगा तब बहुत सारी आत्माएं तुम्हारे पास आ सकती हैं। मुझसे इस बात का वायदा करके तुम संसार में जा सकते हो।''

ज्ञानी ने कहा–''हे काल! तुम बहुत ही धोखेबाज हो। तुमने जीवों को बहुत ही पीड़ा दी है। मैं, तुम्हारी बात को समझ सकता हूँ। तुमने मुझसे भी धोखा किया है। तुमने मुझसे जो भी बेनती की है मैं उसे मानता हूँ। जब कलयुग आएगा तो मैं अपने अवतार को भेजूँगा।

पहली आठ आत्माएं जोकि सुकृत जैसी ही हैं इस संसार में आएगीं। उसके बाद नई आत्मा धर्मदास के घर जाएंगी। आत्माओं की खातिर, सतपुरुष के बयालिस अवतार संसार में आएंगे। कलयुग में वे इस पंथ को समझाकर उन्हें सतलोक वापिस पहुँचाएंगे। मैं हमेशा उन आत्माओं के साथ होऊँगा जिनको वे सत–शब्द का परवाना दे देंगे। ऐसी आत्माएं कभी भी यम के पास नहीं जाएंगी।''

निरंजन ने कहा–''हे भगवान! तुम यह पंथ बना सकते हो। आत्माओं को मुक्ति देते हुए उन्हें सतलोक वापिस ले जा सकते हो। जब भी मैं, किसी आत्मा पर तुम्हारा चिह्न देखूँगा तो मैं भी झुक जाऊँगा। मैंने सतपुरुष की आज्ञा को मान लिया है।''

काल, कबीर साहब को अपने बारह पंथों के बारे में बताता है

आप, एक पंथ की स्थापना करोगे और आत्माओं को सतलोक वापिस ले जाओगे। मैं, आपके नाम पर जीवों को बारह पंथ समझाऊँगा। मैं बारह यम, संसार में भेजूँगा जो कि आपके नाम पर पंथ को फैलाएंगे। 'मृत्यु–अंधा', मेरा संदेशवाहक सुकृत के घर में अवतरित होगा। पहले मेरा संदेशवाहक जन्म लेगा फिर आपका अवतार। इस तरह से मैं, सतपुरुष

के नाम पर आत्माओं को भटकाऊँगा। आत्माएं जो इन बारह पंथो पर चलेंगी वे मेरे मुँह में आ जाएंगी। मैं, आपसे प्रार्थना करता हूँ दया करके मेरी यह बेनती भी मान लो।

काल, कबीर साहब से जगन्नाथ मंदिर बनाने का वरदान माँगता है।

जब कलयुग का पहला भाग आएगा तो मैं एक साधु का रूप धारण करूँगा। फिर मैं जगन्नाथ नाम धारण करके राजा इंद्रदमन के पास जाऊँगा। राजा, मेरा एक मन्दिर बनावाएगा जो कि बार–बार समुन्द्र के पानी से तबाह हो जाएगा। समुन्द्र, सात बार अपना बदला लेने आएगा। इसलिए वह मन्दिर नहीं बचेगा समुन्द्र की लहरें उसे डुबो देंगी।

हे ज्ञानी! सबसे पहले आप उस महासागर के किनारे पर जाना। आपको देखकर वह समुन्द्र मंदिर को डुबो नहीं पाएगा। इस तरह से मैं वहाँ पर स्थापित हो जाऊँगा। इसके बाद आप वहाँ अपना अवतार भेज सकते हो। फिर आप भव सागर में अपना रास्ता बनाकर आत्माओं को सतपुरुष के नाम के द्वारा बचा सकते हो।

ज्ञानी ने कहा–''हे निरंजन! तुम जो कुछ मुझसे माँग रहे हो मैं उसे अच्छी तरह से समझता हूँ। बारह पंथो की स्थापना करते हुए तुम अमृत की जगह जहर दोगे।'' फिर मैंने सोचा जो सतपुरुष ने कहा है वह भी व्यर्थ नहीं हो सकता। इसलिए ''हे अधर्मी! मैं तुम्हें बारह पंथ बनाने की इ़जा़जत देता हूँ। पहले तुम्हारा सन्देशवाहक जन्म लेगा फिर मेरा अवतार। मैं उस महासागर के किनारे जाकर देखूंगा कि जगन्नाथ मंदिर की स्थापना हो जाए। उसके बाद मैं अपना पंथ बनाऊँगा और आत्माओं को सतलोक वापिस ले जाऊँगा।''

निरंजन कबीर साहब को धोखा देकर ज्ञान का रहस्य जानने की कोशिश करता है।

निरंजन ने कहा–''हे ज्ञानी! मुझे नाम का वह चिह्न बता दो ताकि मैं उन आत्माओं को पहचान सकूँ। मैं, उन आत्माओं के नजदीक

नहीं जाऊँगा जो मुझे वह चिह्न दिखा देंगी।''

ज्ञानी ने कहा–''अगर मैं, तुम्हें वह चिह्न बता दूँगा तो तुम आत्माओं के लिए पीड़ा का कारण बन जाओगे। मैं तुम्हारा धोखा समझ चुका हूँ, तुम यह खेल नहीं खेल सकते। मैं तुम्हें साफ–साफ बता रहा हूँ। मैंने नाम की ख्याति अपने अंदर छिपा रखी है। दूर चले जाओ जिन्होंने मेरा 'नाम' लिया हो उन्हें छोड़ दो। अगर तुम ऐसी आत्माओं को रोकने की कोशिश करोगे तो तुम बच नहीं सकोगे।''

निरंजन ने कहा–''जो आत्माएं, नाम की तरफदारी करें उन्हें वापिस ले जाओ। मैं, ऐसी आत्माओं के निकट नहीं जाऊँगा जो तुम्हारा गुणगान करेंगी। जो आत्माएं, जीवन का भव सागर पार करके तुम्हारी शरण में आ जाएंगी मैं उनके पैरों को अपने शीश पर रखूँगा। मैं जिद्दी हो गया था आपको पिता मानते हुए मैंने एक बच्चे की तरह बरताव किया। अगर बच्चा करोड़ों गलतियाँ भी करता है तो पिता एक भी गलती अपने दिल पर नहीं लेता। अगर पिता बेटे की रक्षा नहीं करेगा तो उसकी रक्षा और कौन करेगा? निरंजन उठा और झुका। ज्ञानी इस संसार में आ गए।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–जब मैंने देखा कि निरंजन भयभीत है तो मैंने वह जगह छोड़ दी। हे बुद्धिमान धर्मदास! फिर मैं इस संसार में आया।

कबीर साहब की ब्रह्मा से भेंट

फिर मैं, उस समझदार ब्रह्मा से मिला, मैंने उसे शब्द के बारे में बताया। उसने मेरी बात को बहुत ध्यान से सुना और सतपुरुष की पहचान के बारे में कई सवाल पूछे। निरंजन जो मन के अंदर ही बैठा है, उसने सोचा मेरा सबसे बड़ा बेटा मुझे छोड़ देगा, इसलिए उसने ब्रह्मा की बुद्धि को ही बदल दिया।

ब्रह्मा ने कहा–''प्रभु का कोई स्वरूप नहीं, कोई गुण नहीं। उसको कहीं पर भी बाँधकर नहीं रखा जा सकता। वह ज्योति के रूप में

खाली जगह में रहता है। वेद, उसका वर्णन सतपुरुष के रूप में करते हैं और मैं वेदों को मानता हूँ।''

कबीर साहब की विष्णु से भेंट

जब मैंने ब्रह्मा को पूर्ण रूप से काल में विश्वास रखते हुए देखा तो मैं वहाँ से विष्णु के पास चला गया। मैंने विष्णु को सतपुरुष की बातें बताई पर उसने भी काल के नियंत्रण की वजह से मेरे संदेश को स्वीकार नहीं किया।

विष्णु ने कहा–''मेरे जैसा कौन है? मेरे पास चार पदार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। मैं, ये चीजें किसी को भी दे सकता हूँ।''

ज्ञानी ने कहा–''हे विष्णु सुनो! तुम्हारे पास मोक्ष कहाँ है? मोक्ष तो अक्षर से आगे है। जब तुम खुद ही स्थायी नहीं हो तो दूसरों को स्थायी कैसे बना सकते हो? तुम झूठ बोलते हुए अपना ही गुणगान क्यों करवा रहे हो?''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–मेरी ऐसी निडर बाणी सुनकर विष्णु को बहुत ही शर्म महसूस हुई। वह अपने आपसे ही डर गया। फिर मैं नागलोक में गया, मैंने शेषनाग से कहा, ''सतपुरुष के रहस्य को कोई नहीं जानता, सब काल की शरण में हैं।'' शेषनाग ने कहा, ''हे भाई! बचाने वाले को पहचानो। वही एक है जो तुम्हें यम से बचा सकता है। जिसको ब्रह्मा, विष्णु और शिव याद करते हैं, वेद भी उसकी प्रशंसा करते हैं। वह पुरुष ही मेरा रक्षक है और तुम्हें भी बचाएगा।'' मैंने उससे कहा, ''एक और बचाने वाला है अगर तुम मुझमें विश्वास करो तो मैं तुम्हें उससे मिलवा सकता हूँ।'' पर अपने जहर की वजह से शेषनाग का स्वभाव बहुत ही गर्म था। उसने मेरे शब्दों को अपने दिल में नहीं लिया।

सुनो, हे भाग्यवान और बुद्धिमान धर्मदास! मैं फिर मृत्युलोक में आया। जब मैं इस नष्ट होने वाले संसार में आया तो मैंने सतपुरुष का कोई भी जीव नहीं देखा। सबने यम का चोला पहन रखा था। वे उसी को मान रहे थे जो उन्हें खा जाता है। फिर मैंने शब्द को याद किया। माया में बँधे हुए जीव मुझे नहीं पहचान सके।

मैंने सोचा, काल के द्वारा फैलाए सारे भ्रमों को दूर करके मुझे सच्चा काल लोगों को दिखाना चाहिए। आत्माओं को यम से बचाकर मुझे उन्हें उस अविनाशी मंडल में पँहुचाना चाहिए। इसी वजह से मैं इस संसार में भ्रमण कर रहा हूँ पर कोई भी मुझे नहीं पहचानता। सब जीव काल के नियंत्रण में हैं। अमृत छोड़कर जहर पी रहे हैं। फिर मैंने सोचा, यह सतपुरुष का आदेश नहीं है। सतपुरुष का आदेश तो यह है कि मैं सिर्फ उन्हें ही वापिस ले जाऊँ जो 'शब्द' को पहचानकर उसे दृढ़निश्चय से पकड़ते हैं। हे धर्मदास! इसके बाद जो हुआ मैं तुम्हें बताता हूँ–

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, और सनक सभी शून्य समाधि में चले गए उन्होंने निरंजन से कहा, ''हे रचयिता! हम किसका नाम जपें? किस नाम की भक्ति करें?'' सब उस खाली मंडल में सोच रहे थे जैसे एक सीप पानी की बूँद में सोचती है। फिर निरंजन ने यह हल निकाला और उस खाली गुफा से कई बार रा–रा बोला और मा शब्द माया में से बोला। दोनों शब्दों को जोड़कर उन्हें 'राम' नाम दे दिया गया। फिर सारा संसार 'राम' के शब्द से जुड़ गया। कोई भी काल के इस जंजाल को नहीं समझ पाया। इस तरह से राम के नाम की रचना हुई।

धर्मदास ने कहा–हे पूर्ण सतगुरु! आपके ज्ञान के प्रकाश से मेरा अंधकार दूर हो गया है। माया और मोह दोनों ही बहुत गहरा अंधेरा हैं, जिससे जीव बाहर नहीं आ सकते। आपने सच्चा ज्ञान मेरे अंदर प्रगट कर दिया है शब्द को पहचानकर मेरा मोह दूर हो गया है। मैं, बहुत ही भाग्यवान हूँ कि आप मुझे मिल गए हैं। आपने मुझ नीच को जगा दिया है। मुझे बताओ कि आपने सतयुग में किसको मुक्त किया?

8. सतयुग में सत–सुकृत का अवतार

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! सतयुग के बारे में सुनो। मैं, तुम्हें उन आत्माओं के बारे में बताता हूँ जिन्हें मैंने नाम दिया। सतयुग में मेरा नाम सत–सुकृत था। सतपुरुष की आज्ञा से, मैं आत्माओं को जगाने आया।

राजा ढ़ोनढ़ाल की कहानी : मैं, राजा ढ़ोनढ़ाल के पास गया उसे 'सच्चा–शब्द' सुनाया। राजा ढ़ोनढ़ाल एक बहुत ही साधु प्रवृति का अच्छा आदमी था। उसने मेरे शब्द को पूरे दृढ़ निश्चय के साथ पकड़ा। मेरे चरणों को छूने के बाद शान्ति देने वाला प्रशाद और पानी लिया। उसने 'सार–शब्द' को पहचाना और गुरु के चरणों का ध्यान किया।

खेमसरी की कहानी : ढ़ोनढ़ाल को शब्द में जगाने के बाद मैं, मथुरा शहर में पहुँचा। वहाँ खेमसरी बहुत सारी औरतों, बूढ़े लोगों और बच्चों के साथ भागता हुआ मेरे पास आया। खेमसरी ने कहा, ''हे आदि पुरुष! आप कहाँ से आए हो?'' मैंने उसे शब्द के बारे में, सतपुरुष और यम के बारे में भी बताया। यह सुनकर वह यम के धोखे को समझ गया और उसके अंदर प्यार प्रगट हो गया। लेकिन उसके मन में एक शंका थी कि वह सतलोक देखकर ही मेरी बात पर विश्वास करेगा। मैं, उसके शरीर को वहीं छोड़कर उसकी आत्मा को एक क्षण में सतलोक ले गया। उसे सतलोक दिखाने के बाद मैं उसकी आत्मा को वापिस ले आया। अपने शरीर में वापिस आने के बाद उसे पछतावा हुआ। उसने कहा–हे प्रभु! मुझे उस मंडल में वापिस ले चलो। यहाँ काल की बहुत दु:ख–तकलीफें हैं।

भाई! जब तक टीका नहीं होता अपने ध्यान को नाम में ही जोड़े रखो। तुमने मेरे सतलोक को देख लिया है इसके बारे में जीवों को बता दो। अगर एक गाय जोकि शेर के द्वारा खा ली जाने वाली है उसे कोई बहादुर आदमी बचा लेता है तो उस बहादुर आदमी की बहुत प्रशंसा होती है। शेर, बहादुर आदमी से डरता है। इसी तरह से जीव, काल का खाज हैं। अगर कोई एक भी आत्मा को भक्ति की तरफ लगा देता है तो उसे दस लाख गायों को बचाने के बराबर फल मिलता है। खेमसरी मेरे चरणों में

गिर गया और कहने लगा, ''हे भगवान मुझे बचा लो।''

सत–सुकृत ने कहा–''सुनो हे खेमसरी! यह यम का देश है। नाम के बिना भय को नहीं हटाया जा सकता। सतपुरुष की रस्सी पकड़कर आत्मा, यम के जाल को तोड़ देती है। जो भी सतपुरुष का तोहफा 'नाम' ले लेता है वह इस जीवन के भव सागर में वापिस नहीं आता।'' खेमसरी ने कहा–''मुझे वह परवाना दे दो। हे भगवान! जो आत्माएं मेरे घर में हैं उन्हें भी नाम का तोहफा दो। मेरे घर में अपने चरण डालो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–खेमसरी ने अपने परिवार को समझाते हुए कहा–भाईयो! जो भी आत्मा की मुक्ति चाहते हैं, वे सतपुरुष के शब्द को स्वीकार करें। वही एक है जो हमें यमों से बचा सकता है, मेरी बात पर विश्वास करो। सब आत्माओं ने दृढ़ निश्चय के साथ विश्वास किया, वे सब खेमसरी के साथ आ गए। वे मेरे चरणों में आकर बोले–हे भगवान! हमें मुक्ति दो ताकि यम हमें परेशान ना करें। जब मैंने इतने मजबूर आदमी और औरतों को देखा तो यह कहा–जो मेरा शब्द स्वीकार करेगा, उसे कोई नहीं रोक सकता। जो आत्मा मेरी बताई बातों पर विश्वास करेगी काल उसे कोई पीड़ा नहीं दे सकेगा। जिनके पास सतपुरुष के नाम का परवाना होगा, यमराज उनके पास नहीं आएगा।

सत–सुकृत ने खेमसरी से कहा–''आरती के लिए जरूरी सामान ले आओ, ताकि मैं, तुम्हारी आत्मा के उस दर्द को खत्म कर दूँ, जो काल ने रचा है।'' खेमसरी ने कहा–हे भगवान! मुझे समझाओ कि आरती के लिए क्या–क्या चाहिए? सुनो खेमसरी! आरती के लिए मिठाईयाँ, पान का पत्ता, कपूर, केला व आठ तरह के सूखे मेवे, पाँच बर्तन, सफेद कपड़े का एक टुकड़ा, केले के पेड़ के सात पत्ते, एक नारियल और एक सफेद फूल लाओ और चंदन की मदद से एक सफेद चौका बनाओ। सुपारी से सीमा और शब्द से चौका बनाओ। अच्छी, पवित्र चीजें और गाय का सफेद घी लाओ।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–मेरे शब्दों को सुनकर खेमसरी जल्दी ही सब कुछ ले आया। उसने सफेद छत्र लगा दिया। अब वह जानना चाहता था कि आरती किस तरह होती है? सतपुरुष की इच्छा के अनुसार

पाँच पवित्र शब्दों की रचना हुई। मैं ध्यान में, चौके पर बैठ गया और वह ध्वनि प्रगट हुई जो कभी भी नष्ट नहीं होती। सही समय पर चौके की रस्म पूरी हुई और उस अखंड ज्योति के प्रकाश की किरणें वहाँ प्रगट हुई। जब शब्द की मदद से चौके की रस्म पूरी हुई व नारियल को पत्थर के ऊपर मारा गया तो काल का सिर फट गया और सारे दर्द दूर हो गए। नारियल के टूटने पर एक खुश्बू बाहर आई, जिसने सतपुरुष का संदेश दिया। मैंने उन्हें पाँच शब्द बताए, उस समय उन्हें सतपुरुष का नाम मिल गया।

भाई! उस समय, एक क्षण के लिए सतपुरुष वहाँ आए और बैठे। सब लोगों ने उठकर आरती की रस्म पूरी की। फिर दोबारा से घर में आरती की रस्म पूरी की गई। एक तिनका तोड़ा गया सबसे पहले खेमसरी ने पानी पिया, फिर बाकी के सब जीवों ने सम्मान के साथ पानी पिया। मैंने उन्हें ध्यान के बारे में बताया। नाम का ध्यान करके उनकी आत्माएं बच जाएंगी। मैंने उन्हें जीने के तरीके बताए और कहा कि नाम का सिमरन करके उनकी आत्माएं वापिस निज–घर चली जाएंगी।

उन बारह आत्माओं को सतपुरुष का 'नाम' देने के बाद मैं उस शांति के सागर में चला गया। मैंने सतपुरुष के चरणों को छुआ, उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझे अपनी गोद में बिठा लिया। उस आत्माओं के स्वामी ने मुझसे बहुत तरीकों से मेरी खैरियत के बारे में पूछा। भाई! मैं उस जगह की ख्याति को देखकर बहुत खुश हुआ, जो बहुत ही सुंदर थी।

हे धर्मदास! आत्मा के प्रकाश की ख्याति का वर्णन नहीं किया जा सकता। सतलोक में एक आत्मा का प्रकाश सोलह सूरज के प्रकाश के बराबर है। मैं, कुछ समय तक वहाँ रहा, फिर अपने अनुयायियों को देखने के लिए आया। मैंने अपने बारे में किसी को भी नहीं बताया और किसी आत्मा ने भी मुझे नहीं पहचाना। मैंने, उन आत्माओं को सतलोक भेज दिया, जिन्हें मैंने नाम दिया था। वे सतलोक में सतपुरुष के अन्तहीन बसंत में खुशी से रहने लगी।

9. त्रेता युग में मनिंदर का अवतार

सतयुग पूर्ण हो गया और त्रेता युग शुरू हुआ। मैं, मनिंदर का नाम धारण करके आत्माओं को समझाने के लिए आया। जब मैं आत्माओं को समझाने आया, तो निरंजन डरा हुआ था और वह सोचने लगा कि ये आत्माओं को सतपुरुष के संसार में वापस ले जाकर मेरे भव सागर को नष्ट कर देगा। मैंने बहुत छल–बल से यह भव सागर बनाया है, पर ज्ञानी के डर की वजह से मैं, उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता। ज्ञानी के पास सतपुरुष की ख्याति है। इसी वजह से मेरे जाल उस पर असर नहीं करते।

हे धर्मदास! नाम की महिमा से आत्माएं अपने घर वापिस चली जाती हैं और काल को कुछ नहीं मिलता। सतपुरुष के नाम की महिमा एक शेर है और काल एक हाथी है। नाम को पकड़कर आत्माएं सतलोक पहुँच जाती हैं।

सतगुरु के शब्द से जुड़े रहो और जो गुरु कहता है, वही करो। सब कर्म, भ्रम और मन जो भी कहता है, उसको छोड़ दो अपना ध्यान नाम में लगाए रखो।

मैंने बहुत सारी आत्माओं से पूछा, ''तुम्हें यम से कौन बचाएगा?'' वे निर्दोष आत्माएं भ्रम के काबू में होने की वजह से बोलीं–हमें बनाने वाला वह आदि पुरुष है। विष्णु हमेशा से हमारा रक्षक है और वही हमें यम से बचा सकता है। कुछ शिव की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहे थे और कुछ चंडी देवी को गा रहे थे।

मैंने सोचा, कि अगर मैं सतपुरुष से आज्ञा ले लूँ तो काल को खत्म करके ये आत्माएं वापिस ले जा सकता हूँ। अगर मैं अपने बल का प्रयोग करूँगा तो मेरा वायदा टूट जाएगा। इसलिए आत्माओं को समझाते हुए उन्हें धीरे–धीरे वापिस ले जाना पड़ेगा।

लंका में विचित्र भट्ट की कथा

चारों दिशाओं में जाने के बाद मैं, लंका गया वहाँ मुझे विचित्र भट्ट मिला, उसे मुझ पर विश्वास था। उसने मुझसे मुक्ति का संदेश पूछा, मैंने उसे ज्ञान का उपदेश सिखाया। विचित्र भट्ट का भ्रम दूर हो गया। वह बहुत ही विनम्र होकर मेरे पैरों पर गिरकर कहने लगा, ''हे स्वामी! मुझे अपनी शरण में ले लो। आप सतपुरुष के सुख का निवास हो। आज मुझे संतुष्ट करके मेरी आत्मा की रक्षा करो।'' मैंने उसे खेमसरी की तरह आरती की रस्म पूर्ण करने के लिए कहा। वह प्यार से आरती का सामान ले आया, शब्द की ध्वनि बजी, तिनका तोड़ते हुए मैंने उसे सिमरन और ध्यान का तोहफा दे दिया।

विचित्र भट्ट की पत्नी महल में गई और उसने मंदोदरी रानी को बताया, ''कि एक बहुत ही सुंदर योगी आया है जो बहुत ही ज्ञानी है। मैं उसकी महानता का वर्णन नहीं कर सकती। वह अच्छे से अच्छे गुणों से परिपूर्ण है। मैंने उस जैसा कोई नहीं देखा। मेरे पति ने उसकी शरण लेकर अपना जन्म सफल बना लिया है।''

मंदोदरी की कहानी

यह सुनकर मंदोदरी रानी भी दर्शनों के लिए तड़फ उठी। वह अपनी एक सेविका के साथ हीरे और सोना लेकर आई। उसने अपना सिर मेरे चरणों में झुकाया और आशीर्वाद लिया। मंदोदरी ने कहा, ''यह मेरे लिए एक बहुत ही शुभ दिन है। मैं हाथ जोड़कर आपसे भीख माँगती हूँ मैंने आप जैसा सन्यासी कभी नहीं देखा। आपका शरीर और आपके कपड़े पवित्र हैं। मेरा काम जिस भी तरीके से हो सकता है बताओ? मेरी जाति और परिवार को भूल जाओ। हे सर्वशक्तिमान! मुझे ऐसी औरत बनाओ जिसका पति सदा जिंदा रहे। मुझे अपने हाथ से सहारा देकर इस डूबने वाले संसार से बचाओ। आप बहुत ही दयावान हो।''

मनिंदर ने मंदोदरी से कहा–''हे रावण की प्यारी पत्नी सुनो! नाम की महिमा से यम के फँदे कट जाते हैं। तुम अपने ज्ञान की नजरों से

देखो मैं तुम्हे सच और झूठ के बारे में बता रहा हूँ। सतपुरुष अजर–अमर हैं। वह इन तीनों संसारो में सबसे अलग हैं। जो भी भगवान को याद करता है वह आवागमन से मुक्त हो जाता है।''

मेरे शब्दों को सुनकर उसके भ्रम दूर हो गए। उन शब्दों को स्वीकार करके उसके दिल में प्यार जागृत हो गया। मैंने उसे नाम देकर सतपुरुष की रस्सी से जोड़ दिया, सतपुरुष के चिह्न दे दिए। वह उस रस्सी को लेकर बहुत खुश हुई।

फिर मैं, रावण के महल में गया और दरबान से कहा, ''राजा को बुला लाओ।'' दरबान ने बहुत ही नम्रता से उत्तर दिया, ''राजा रावण बहुत ही शक्तिशाली हैं। शिव की शक्ति की वजह से वह किसी से नहीं डरते। किसी की बातों को नहीं मानते, वह बहुत ही घमंडी हैं।''

मैंने दरबान से कहा–''मेरे शब्दों को मानो। रावण तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।'' दरबान तभी रावण के पास गया। हाथ जोड़कर वह रावण के सामने खड़ा होकर बोला, ''एक सिद्ध आया है उसने मुझसे कहा है कि मैं आपको बुलाकर लाऊँ।''

यह सुनकर रावण गुस्से में आ गया और बोला, ''हे दरबान! तुम मूर्ख हो कि तुम मुझे बुलाने आ गए? यहाँ तक कि शिव के बेटे भी मेरे दर्शन नहीं कर सकते। दरबान मुझे बताओ कि सिद्ध कैसा है? उसने कैसे कपड़े पहने हुए है?'' दरबान ने कहा–''हे रावण! वह सफेद है, उसके गले में सफेद हार है। उसका तिलक बहुत सुंदर है। वह चन्द्र जैसा सफेद है।''

मंदोदरी रानी ने कहा–''हे रावण! सतपुरुष की सुंदरता ऐसी ही होती है। अगर तुम जल्दी से जाकर उससे जुड़ जाओ तो तुम्हारा राज्य दृढ़ हो सकता है। तुम अपना नाम और प्रसिद्धि छोड़कर उनके चरणों में झुक जाओ।'' यह सुनकर रावण क्रोधित हुआ अपने हाथ में तलवार लेकर कहने लगा–मैं अभी उसका सिर काट डालूँगा, वह भिखारी मेरा क्या कर सकता है?

रावण ने मनिंदर के पास आकर अपनी तलवार से उस पर

सत्तर बार हमले किए। मनिंदर के हाथ में एक तिनका ही कवच के रूप में था। इतना बड़ा रावण बार–बार उस तिनके पर ही आक्रमण कर रहा था क्योंकि रावण को बहुत घमंड था। मनिंदर ने तिनके को कवच के रूप में इस्तेमाल किया ताकि रावण को शर्म आए।

मंदोदरी ने कहा–''सुनो हे रावण! अपना अहम और घमंड त्यागकर विनम्रता धारण कर लो। सतपुरुष के सामने झुककर उनके चरण पकड़ लो ताकि आपका राज्य सदा के लिए रहे।''

रावण ने कहा–''मैं शिव की भक्ति करूँगा जिसने मुझे यह अटल राज्य दिया है। मैं, सिर्फ उन्हीं के चरणों में झुकूँगा।''

यह सुनकर मनिंदर ने कहा, ''हे राजा! तुम बहुत ही घमंडी हो। तुमने मेरे भेद को नहीं समझा। रामचन्द्र आएंगे और तुम्हें मार डालेंगे, कुत्ते भी तुम्हारा माँस नहीं खाएंगे।'' मैं रावण की बेइज्जती करके अवध नगर की तरफ चल पड़ा।

मधुकर की कहानी

जब मैं, अवध नगर आ रहा था तो रास्ते में मुझे मधुकर नाम का एक ब्राह्मण मिला। उसने मेरे पैरों को छुआ और अपना सिर मेरे आगे निर्भरता से झुका दिया, मुझसे अपने घर आने की प्रार्थना की। उस गरीब ब्राह्मण ने अंदर के ज्ञान को समझ लिया और मुझसे बहुत ज्यादा प्यार किया।

जब मैंने उसे पूरी तरह से अपनी शरण में देखा तो उसे सतपुरुष का संदेश दिया जिसे सुनकर वह बहुत खुश हो गया। जिस तरह से पानी के बिना अंकुर जल जाते हैं और पानी मिलने पर फिर हरे हो जाते हैं। उसी तरह से मधुकर 'शब्द' मिलने पर खुश हो गया। सतपुरुष के बारे में सुनकर उसने खुशी से कहा, ''हे सन्त मुझे सतलोक दिखा दो।''

मैंने कहा–''चलो! मैं तुम्हें सतलोक दिखा देता हूँ। सतलोक दिखाने के बाद मैं तुम्हे वापिस ले आऊँगा।'' मैं, उसके शरीर को धरती पर छोड़कर उसकी आत्मा को उस मंडल में ले गया जिस मंडल का कभी

नाश नहीं होता। सतलोक की महिमा को देखकर मधुकर बहुत खुश हुआ और उसका मन मान गया।

मधुकर ने मेरे चरणों में गिरकर कहा–''हे भगवान! अब मेरी प्यास बुझ गई है, अब आप मुझे वापिस संसार में ले चलो। जो आत्माएं मेरे पास आएंगी मैं उन्हें यह ज्ञान दूँगा।'' फिर मैं, उसकी आत्मा को वापिस इस संसार में ले आया और वह दूसरी बार शरीर में प्रविष्ट हो गया। मधुकर के घर में सोलह आत्माएं रह रही थी जिनको मैंने सतपुरुष का संदेश दिया।'' सबने मधुकर की बातों पर विश्वास करके मुक्ति का परवाना हासिल किया।

मधुकर ने कहा–''मेरी प्रार्थना सुनो! सबको सतलोक दे दो। यम की इस धरती पर इतना दु:ख–दर्द है कि आत्मा को कोई भी पानी नहीं देता। हे आत्माओं के भगवान! हम पर दया करो। यह काल का राज्य है वह आत्माओं को तंग करता है। यहाँ पर बहुत तरह के दु:ख–दर्द हैं, जीवन और मृत्यु है। काम, क्रोध, तीव्र इच्छा, लालच और माया बहुत ही ताकतवर हैं। इन्हें दूर करके हमें अपने घर ले चलो।

इस तरह सोलह आत्माएं सतलोक चली गईं। काल के दूत उन्हें इस तरह देख रहे थे जैसे अखाड़े में हारे हुए पहलवान हों। उन आत्माओं ने सतपुरुष के चरणों को छूकर कहा–आपने हमारे जन्म–मरण की पीड़ा को खत्म कर दिया है।

10. द्वापर युग में करुणामयी का अवतार

त्रेता के बाद द्वापर युग आया और फिर से उस नाकारात्मक शक्ति ने आत्माओं पर हमला किया। जब द्वापर युग आया तो सतपुरुष ने मुझे बुलाया और कहा, ''हे ज्ञानी! संसार में जाकर आत्माओं को काल से बचाओ। दु:खी आत्माओं के फँदे काट दो। काल को खत्म करके आत्माओं को वापिस ले आओ।'' फिर मैंने सतपुरुष से कहा, ''हे शब्द परवानी! मुझे आज्ञा दो।''

सतपुरुष ने कहा–''सुनो योग सन्तरायन! शब्द का एहसास करवाकर आत्माओं को मुक्त करवाओ। अगर इस बार काल गलत व्यवहार करे तो उसे मेरे शब्द से बाहर भगा देना। आत्माएं काल के जाल में फँसी हुई हैं कोई भी तरीका अपनाकर उन्हें महान परमानंद में वापिस ले आओ। जब आत्माओं को काल की प्रकृति के बारे में पता चलेगा तो वे शरण ले लेंगी। वे नहीं जानती कि ज्ञान को किस तरह पहचाना जाए।

संसार में जाकर सहज तरीके से प्रगट होवो और आत्माओं को मुक्त कराओ। जो आत्माएं तुम्हें स्वीकार करेंगी वे मुझे पा लेंगी। जो तुममें विश्वास करेगा काल उसे नहीं खाएगा। जाओ और आत्माओं को बाहर निकालो तुम्हारे साथ मेरी महिमा है। तुममें और मुझमें काई अंतर नहीं। जो तुममे और मुझमे अंतर समझेंगे काल उनके दिल में जगह बना लेगा। जल्दी से संसार में जाकर आत्माओं को भव सागर से पार करवाओ।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–सतपुरुष के आदेश से मैं अपना सिर झुकाकार संसार में आया। हे धर्मदास! जब सतपुरुष की आवाज बजने लगी तो काल मेरे चरणों में आ गया। मेरी शरण में आने के बाद काल निरंजन ने मुझसे बहुत तरह के सवाल किए, ''तुम इस बार संसार में क्यों आए हो? मुझे इस बारे में कुछ जानकारी दो। तुम मेरे बड़े भाई हो। मैं तुमसे भीख माँगता हूँ कि सारे संसार को जागृत मत करो।''

ज्ञानी ने कहा–''निरंजन सुनो! बहुत कम आत्माएं हैं जो मुझे

पहचानेंगी। कोई भी शब्द में विश्वास नहीं करता क्योंकि तुमने आत्माओं को बहुत चालाकी से धोखे में रखा हुआ है।'' इतना कहते ही मैंने अपने पैर मृत्युलोक में रख दिए और परमारथ का शब्द पुकारा। मैं सतलोक का शरीर छोड़कर इंसानी शरीर में आ गया। द्वापर युग में मेरा नाम करुणामयी पड़ा। मेरी आवाज को किसी ने नहीं सुना क्योंकि वे सब काल के भ्रम की संगलो में फँसे हुए थे।

रानी इन्द्रमति की कहानी

फिर मैं गढ़–गिरिनार आया वहाँ राजा चन्द्र विजय रहता था। उसकी रानी बहुत ही समझदार थी वो साधुओं की महिमा को समझती थी। वह छत पर खड़ी होकर साधुओं का इंतजार किया करती थी। मुझे रानी के प्यार के बारे में पता था इसलिए मैं उसके घर वाली सड़क पर चल पड़ा। जब रानी ने मुझे देखा तो अपनी नौकरानी से कहा, ''उस साधु को जल्दी से बुला लाओ।''

उस नौकरानी ने आकर मेरे चरणों को पकड़ लिया और मुझे रानी के शब्द बताए, ''कि मेरी रानी आपके दर्शन करना चाहती है। उसने यह संदेश भेजा है 'कि हे दीन दयाल! मुझे अपने दर्शन देकर मेरी पीड़ा दूर करो।'' मैंने कहा–मैं राजा, महाराजाओं के घरों में नहीं जाता। राजा का काम नाम और ख्याति देना है। मैं साधु हूँ राजा के घर नहीं जाऊँगा।

नौकरानी ने वापिस जाकर रानी के सामने हाथ जोड़कर कहा, कि साधु ने मेरी प्रार्थना नहीं मानी। वह कहता है कि ''मैं राजा–महाराजाओं के घर नहीं जाता।'' यह सुनते ही रानी इन्द्रमति दौड़ते हुए मेरे पास आई और सिर झुकाकर मुझे प्रणाम किया। रानी इन्द्रमति ने कहा, ''हे भगवान! मुझ पर दया करो, कृपया करके अपने चरण मेरे घर में रख दो।''

उसके प्यार को देखते हुए मैं उसके घर गया। मुझे सिंहासन दिया गया और रानी ने मेरे पैर धोए। फिर उसने पैरों को पोंछने के लिए एक तौलिया दिया। दोबारा से उसने मेरे पैर धोए और वह पानी पी लिया। मेरे पैरों को पोंछते हुए उसने अपनी जिंदगी को धन्य समझा। इसके बाद

उसने खाने के लिए इजाजत माँगी और कहा, ''हे भगवान! मुझे खुश कर दो। आपका बचा हुआ खाना मेरे घर में रहेगा तो मैं उसे प्रशाद समझकर खा लूँगी।''

करुणामयी ने कहा–''सुनो हे रानी! मुझे बहुत ज्यादा भूख नहीं लगती मेरा भोजन नाम का अमृत है। मैं तुम्हें सारांश में बताता हूँ–मेरा शरीर उन शरीरों से अलग है जिनमें तत्व और गुण होते हैं। तत्व और प्रकृतियाँ काल की रचना हैं। काल ने पाँच तत्वों का नाशवान शरीर और जीने के लिए पिच्चासी तरह की हवाएं बनाई हैं। शरीर में एक हवा है जिसे आत्मा 'सोहांग' कहते हैं। आत्मा परमात्मा की अंश है। काल आत्मा को बहुत सारे लालच देते हुए अपने फँदों में फँसाकर रखता है।

मैं, इस संसार में आत्माओं को मुक्त कराने के लिए आया हूँ। जो आत्माएं मुझे पहचानती हैं, मैं उन्हें मुक्त करा देता हूँ। काल ने अपनी चालों से आत्माओं को बहुत तरह से धोखा दिया है। काल ने बनावटी पानी और हवा बनाए हैं जब वह खत्म हो जाते हैं तो आत्मा की बहुत बुरी स्थिति हो जाती है। मेरा शरीर इन सब चीजों से अलग है क्योंकि मेरा शरीर काल नें नहीं बनाया। मेरे शरीर में कभी ना खत्म होने वाला शब्द है।''

ये सब बातें सुनकर रानी ने आश्चर्य चकित होकर कहा, ''हे भगवान! मैं हैरान हूँ कि आप जैसा और कोई नहीं है।'' मुझ पर दया करके मुझे सारा रहस्य समझाओ।''

हे भगवान! आप इन सबसे अलग कैसे हो गए? अपनी पहचान देकर मेरी प्यास बुझाओ। मैं बहुत हैरान हूँ कि आपके जैसा कोई भी नहीं है? आप कौन हो? कहाँ से आए हो? आपको यह चिन्तामुक्त शरीर कहाँ से मिला? हे गुरुदेव, आपका क्या नाम है? मुझे आपके रहस्यों के बारे में नहीं पता इसलिए मैं आपसे ऐसे प्रश्न पूछ रही हूँ।

करुणामयी ने कहा–''हे इन्द्रमति! उस सुंदर कहानी को सुनो। मैं तुम्हें पवित्र गुणों के बारे में बताऊँगा। मेरा देश इन तीनों संसारो से अलग है वहाँ यम नहीं है। वह सच्चे पुरुष का देश, सुंदर सतलोक है।

सच्चे नाम को प्राप्त करने के बाद ही वहाँ पहुँचा जा सकता है।

सतपुरुष का शरीर, एक अद्‌भुत रोशनी है। वहाँ आत्मा की सुंदरता बहुत ही मनमोहक है। सतपुरुष की महिमा इतनी है कि इन तीनों संसारों में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसका मैं उदाहरण दे सकूँ? इस मंडल में सूरज और चन्द्रमा जैसी चमकीली कोई भी चीज नहीं है। मैं, सतपुरुष के मुख की सुंदरता का वर्णन कैसे करूँ? अब मैं तुम्हें आत्माओं की सुंदरता के बारे में बताऊँगा।

एक आत्मा की ज्योति सोलह सूरज के बराबर है। वहाँ पर आत्माएं अग्र–वासना से संतुष्ट रहती हैं। वहाँ पर कभी भी रात नहीं होती। सतपुरुष के शरीर की रोशनी हमेशा रहती है। बहुत ही भाग्यशाली आत्माएं वहाँ पहुँचती हैं, मैं उस मंडल से आया हूँ, मेरा नाम करुणामयी है। मैं तुम्हें सुखधाम के वचन कहता हूँ। मैं सतयुग, त्रेता और इस द्वापर युग में भी आया। जो आत्माएं जाग जाती हैं मैं उन्हें वापिस सतलोक पहुँचा देता हूँ।''

रानी इन्द्रमति ने कहा–''हे भगवान! आप दूसरे युगों में भी आए, उन युगों में आपके क्या नाम थे?'' करुणामयी ने कहा–''सतयुग में मेरा नाम सत–सुकृत और त्रेता में मेरा नाम मनिन्दर था। हर युग में मेरे अलग–अलग नाम थे। जिन्होंने भी मुझे पहचाना मैंने उन्हें सतलोक पहुँचा दिया।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–हे धर्मदास! मैंने उसे सब कुछ समझाकर पहले और दूसरे युगों की कहानियों के बारे में भी बताया। जिनको सुनकर वह बहुत ही उत्सुक हो गई उसने और भी बहुत सारी बातें पूछी। उसने रचना की शुरुआत और अंत भी पूछा। मैंने उसे काल की प्रकृति के बारे में भी बताया।

मैंने उसे बताया कि किस तरह सोलह बेटों का जन्म हुआ? किस तरह कुरमा का पेट फाड़ा गया। किस तरह काल ने अध्या को निगल लिया फिर उसे बाहर निकाला गया। किस तरह धरती और आकाश बने। किस तरह से तीनों बेटो ने समुन्द्र का मंथन किया। मैंने उसे वह तरीके

बताए जिससे काल आत्माओं को धोखे देता था। यह सब सुनकर उसके सारे भ्रम दूर हो गए।

रानी ने खुश होकर मेरे चरण पकड़ लिए और हाथ जोड़कर मुझसे कहा, ''हे भगवान! मुझे काल से बचा लो। मैं यह सारा राजपाठ आपके ऊपर न्यौछावर करती हूँ। मुझे अपनी शरण में ले लो, मेरे बंधनों को काटकर मुझे मुक्त कर दो।''

करुणामयी ने कहा–''हे इन्द्रमति! मेरे शब्दों को सुनो। मैं तुम्हारे बंधन काट दूँगा। अब मैं, तुम्हें नाम देता हूँ। नाम लेकर भव सागर पार करो। आरती की रस्म निभाओ, आरती के लिए जरूरी सामान ले आओ। मुझे तुम्हारे राजपाठ की कोई जरूरत नहीं, मुझे धन–दौलत अच्छा नहीं लगता। मैं इस संसार में आत्माओं को जगाने के लिए आया हूँ।

सब आत्माएं सतपुरुष की हैं, लेकिन भ्रम और मोह की वजह से किसी और की हो गई हैं। यह यमराज की चाल है। काल के नियंत्रण में होने की वजह से आत्माएं मुझसे लड़ती हैं और मोह की वजह से मुझे नहीं पहचानती। अमृत को छोड़कर जहर से प्यार करती हैं। घी को छोड़कर पानी पीती हैं। बहुत कम आत्माएं, शब्द को परखने के बाद मुझे पहचानती हैं।''

इन शब्दों को सुनकर इन्द्रमति बहुत मिठास से बोली–''आपने मुझे खुशी दी है। आपकी दया से ही मैंने उसे पहचान लिया है, जिसको नापा नहीं जा सकता। हे भगवान! आप ही सतपुरुष हो, जिसने सब मंडल बनाए हैं। मैं दिल से विश्वास करती हूँ कि आपसे महान कोई नहीं है। अब मुझे आरती के लिए जो चाहिए, वह बताओ।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–हे धर्मदास! मैंने उसे खेमसरी की तरह बता दिया, ''चौंके की रस्म निभाकर तैयार हो जाओ, फिर मैं तुम्हें नाम दूँगा।'' जिन चीजों की जरूरत थी, रानी ले आई और चौके पर बैठकर वह शब्द को स्वीकार करने के लिए दृढ़ हो गई। आरती की रस्म निभाते हुए उसे परवाना मिला। फिर उसे सतपुरुष का ध्यान, सिमरन और

नाम मिला। नाम प्राप्त करते ही रानी अपना सिर झुकाते हुए खड़ी हो गई। रानी ने राजा से कहा–अगर तुम्हें मुक्ति चाहिए तो इनकी शरण में आ जाओ, यह मौका दोबारा नहीं मिलेगा।''

राजा चन्द्र विजय ने कहा–''हे रानी! तुम मेरी पत्नी हो। हमारी भक्ति अलग–अलग नहीं हो सकती। मैं तुम्हारी भक्ति का प्रताप देखूँगा कि मैं सतलोक कैसे पहुँचूँगा, मेरे सब दु:ख–दर्द कैसे दूर होंगे?''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–रानी फिर से मेरे पास आई, मैंने उसे काल के चरित्र बताए और ये शब्द कहे ''सुनो रानी! काल छल करके धोखा देता है। काल एक साँप के रूप में आकर तुम्हें काटेगा। मैं तुम्हें वह मंत्र याद दिलाऊँगा, जिस मंत्र को याद करने से काल का विष दूर हो जाएगा। मैंने, तुम्हें सबसे ऊँचा शब्द दे दिया है, इसलिए काल का जहर तुम्हारे अंदर नहीं फैलेगा। फिर काल एक और छल करेगा। काल एक ऊँची आत्मा बनकर आएगा और ज्ञान के बारे में इस तरह समझाएगा, जैसे कि 'वह' मैं हूँ।'' वह तुम्हें कहेगा, ''हे रानी! मुझे पहचानो मैं काल का नाश करने वाला ज्ञानी हूँ। इस तरह से काल तुम्हें धोखा देने के लिए आएगा, पर मैं तुम्हें बता देता हूँ कि तुमने उसे कैसे पहचानना है? काल का माथा छोटा, पूरा शरीर सफेद है। फिर रानी ने बेनती की–हे भगवान! मुझे सतलोक ले चलो, ताकि मेरी सारी समस्याएं खत्म हो जाएं। मुझे उस मंडल में ले चलो, जिसका कभी अन्त नहीं होता।''

मैंने रानी से कहा–अब तुम्हारा भ्रम दूर हो चुका है। काल से तुम्हारा नाता टूट चुका है, तुम्हें ज्ञान मिल चुका है। दिन–रात मेरे नाम को बार–बार दोहराओ। जब, काल तुम्हें धोखा दे तो नाम का सिमरन करना। तुम अपने आपको नाम के साथ जोड़े रखना।

रानी इन्द्रमति ने कहा–''हे भगवान! मैं आपके शब्द अपने दिल में ले रही हूँ, आप जो कह रहे हो उसे समझ रही हूँ। आप अंतरयामी भगवान हो। मैं आपसे एक बेनती करती हूँ कृपया करके आप दोबारा मेरे पास आना और मेरी आत्मा को सतलोक ले जाना।''

ज्ञानी ने कहा–''सुनो हे रानी! मैं तुम्हें एक बात साफ–साफ बता रहा हूँ, काल बहुत सारी चालों के साथ आएगा। तुम उसे मान–अपमान मत देना, मुझे देखते ही काल भाग जाएगा। उसके बाद मैं, तुम्हारी आत्मा को सतलोक ले जाऊँगा। मेरे द्वारा दिया हुआ शब्द दिन–रात पूरे ध्यान से दोहराती रहो।'' इतना कहते ही मैं वहाँ से गुप्त हो गया। फिर काल साँप के रूप में आया। आधी रात बीतने पर रानी, राजा की सेवा करके अपने महल में वापिस आई। अपने पलंग पर लेटी तो साँप ने उसके माथे पर डस लिया। तब इन्द्रमति ने कहा, साँप ने मुझे काट लिया है। यह सुनकर राजा घबरा गया और जल्दी से रानी के पास आया उसने जहर निकालने वाले को बुलाया और उससे कहा–''अगर तुम साँप का जहर निकालकर मेरी प्रिया को जिन्दा कर दोगे तो मैं तुम्हें छोटा–सा राज्य दे दूँगा।''

रानी उस पवित्र शब्द को दोहरा रही थी, उसने अपना ध्यान भगवान की तरफ रखा और कहा, ''इस पूरी इंसानियत का भगवान बहुत दूर नहीं है। मेरे सतगुरु ने मुझे मंत्र दिया है, यह जहर मुझ पर असर नहीं करेगा, जिस तरह सूरज की रोशनी आने से अंधेरा दूर हो जाता है।'' मेरा गुरु बहुत महान है। वह उठकर खड़ी हो गई। उसे देखकर राजा बहुत खुश हुआ। जहर निकालने वाले को वापिस भेज दिया गया।

यमदूत ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास गए। उन्होंने कहा, ''जहर की ताकत ने काम नहीं किया। वहाँ नाम की महिमा की दीवार थी।'' विष्णु ने कहा–''सुनो यमदूत! अपने शरीर को सफेद कर लो और रानी को धोखा देकर यहाँ लाओ।'' उस दूत ने अपने पूरे शरीर को सफेद कर लिया और अपने पूरे जोश के साथ रानी के पास गया।

दूत ने रानी से कहा–''हे रानी! तुम उदास क्यों हो? तुम मुझे क्यों नहीं पहचानती? मैंने तुम्हें नाम और मंत्र दिया था, मेरा नाम ज्ञानी है। मैं काल को मार दूँगा। जब काल साँप बनकर तुम्हें डंसने आया तो मैंने ही आकर तुम्हारी रक्षा की। अपने बिस्तर को छोड़कर मेरे पैर छुओ। अब मैं तुम्हें लेने आया हूँ, तुम्हें भगवान के दर्शन करवाऊँगा।''

तब इन्द्रमति ने वह चिह्न देखे जो उसके गुरु ने बताए थे। वह तीन लकीरें देखकर हैरान हो गई जो पीली, सफेद और लाल रंग की थी। रानी ने उसे दोबारा देखा, उसका माथा छोटा था। रानी के सारे शक यकीन में बदल गए। उसने कहा, ''दूत अपने देश वापिस चले जाओ क्योंकि मैंने तुम्हारे रूप को पहचान लिया है। अगर एक कौआ अपने ऊपर बहुत सारा मेकअप भी लगा लेता है फिर भी वह हंस जैसा सुंदर नहीं बन सकता। मेरा गुरु पूर्ण है।''

यह सुनकर दूत ने गुस्से में आकर इन्द्रमति से कहा–''मैं तुम्हें बार–बार समझा रहा हूँ पर तुम समझती नहीं। तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।'' यह कहकर दूत रानी के पास आया और उसने रानी के मुँह पर थप्पड़ मारा, रानी जमीन पर गिर पड़ी। फिर इन्द्रामति ने सिमरन किया और कहा, ''हे ज्ञानी! मेरी मदद करो। काल मुझे कई तरीकों से परेशान कर रहा है। हे भगवान! यम के इस फंदे को काट दो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–हे धर्मदास! जब रानी ने मुझे बुलाया तो मैं उसकी आवाज सुनकर दूर नहीं रह सका। एक क्षण में वहाँ पहुँच गया। मुझे देखकर रानी बहुत खुश हुई, उसके मन से काल का डर दूर हो गया। मेरे वहाँ पहुँचने से काल भाग गया और रानी का शरीर पवित्र हो गया।

इन्द्रमति ने हाथ जोड़कर कहा–''हे भगवान! मेरी एक प्रार्थना मान लो। मैंने काल की छाया को पहचान लिया है। अब मैं इस देश में और नहीं रहूँगी। यहां काल की बहुत पीड़ाएं हैं।'' मुझे अपने देश ले चलो। इतना कहकर वह बहुत दु:खी हो गई और कहने लगी, ''मुझे सतपुरुष के पास अभी ले चलो।''

कबीर साहब ने धर्मदास ने कहा–सबसे पहले, मैं रानी को अपने साथ ले गया, तभी उसके कर्मों का भुगतान हो गया। मैं उसे मान सरोवर ले गया, जिसे देखकर वह बहुत हैरान हुई। मैंने उसे अमृत सरोवर में से अमृत चखाया। इसके बाद उसके पैर कबीर सागर में डाल दिए।

इसके पीछे सुरत का भव सागर है, वहाँ पहुँचकर रानी पवित्र हो गई। जब मैंने उसे सतलोक के द्वार पर खड़ा किया तो वह बहुत खुश हो गई। आत्माएं उससे गले मिली। उसके लिए स्वागत का गीत गाकर आरती की रस्म निभाई। सब आत्माओं ने उसका सत्कार करते हुए कहा, ''तुम एक बहुत ही भाग्यशाली आत्मा हो, जिसने सतगुरु को पहचान लिया है। यह अच्छी बात है कि तुम काल के जंजाल से मुक्त हो गई हो। तुम्हारा सारा दर्द और पीड़ा खत्म हो गई है। हे आत्मा! हमारे साथ चलकर सतपुरुष के दर्शन करो और उनके आगे अपना सिर झुकाओ।'' इन्द्रमति ने उत्साहित होकर अन्य आत्माओं के साथ खुशी के गीत गाए। फिर मैंने सतपुरुष से प्रार्थना की, ''जो आत्माएं आपके पास आई हैं, आप इन्हें दर्शन दो। हे दीनदयाल मुक्तिदाता! इन पर दया करो।'' तभी फूल खिल गया और यह शब्द सुनाई दिए, ''सुनो हे ज्ञानी! योग सन्तरायन आत्माओं को लेकर आओ और इन्हें दर्शन करवाओ।''

तब ज्ञानी ने आत्माओं को सतपुरुष के दर्शन करवाए। सतपुरुष के दर्शन पाकर आत्माएं सुंदर हो गई। उन आत्माओं ने सिर झुकाकर अपना ध्यान सतपुरुष में लगा दिया। जिस तरह कमल का फूल सूरज की रोशनी पाकर खिल जाता है, उसी तरह सतपुरुष के दर्शन करने के बाद आत्माओं की जन्म–जन्मांतर की पीड़ा खत्म हो जाती है।

इन्द्रमति का करुणामयी और सतपुरुष को एक ही रूप में देखना

जब इन्द्रमति ने सतपुरुष के अद्‌भुत सौन्दर्य को देखा तो खुश होकर उनके चरणों से लिपट गई। सतपुरुष ने अपने दोनों हाथ उसकी आत्मा पर रख दिए। वह इस तरह खुश हो गई, जैसे कमल का फूल सूरज की रोशनी में खिल जाता है। फिर सतपुरुष ने रानी से कहा, ''जाओ और करुणामयी को बुलाकर लाओ।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–वह मेरे पास आई और मेरे रूप को देखकर हैरान हो गई। रानी ने कहा, ''यह तो बहुत ही आश्चर्य की बात है। मुझे सतपुरुष और करुणामयी में कोई फर्क नहीं दिखता। जो

भी गुण मैंने सतपुरुष में देखे हैं, करुणामयी में भी वही सारे गुण हैं।'' हे भगवान! अब मैं आपको पहचान गई हूँ, आप ही सतपुरुष हो। आप अपने आपको सेवक कहते हो, आपने अपनी महिमा क्यों छिपाई? मैं आपकी जय–जयकार करती हूँ।

हे दया के सागर! आप महान हो। आपका नाम सारे दुःखों, चिंताओं को दूर करता है, आप बहुत ही पवित्र, महिमामयी, कभी न खत्म होने वाले हो। आप इस संसार का सहारा हो। हे भगवान! आप ही सबकी रचना करने वाले हो। आप ही मुझे अपना समझकर, काल के जाल से छुड़ाकर सुख–सागर में लाए हो।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–फिर वह कमल बंद हो गया और सारी आत्माएं अपने–अपने घरों में चली गई। ज्ञानी ने रानी से कहा, ''हे आत्मा! अब तुम्हारा दर्द और सारी चिन्ताएं खत्म हो चुकी हैं। तुम्हारा रूप सोलह सूरज जैसा हो गया है। सतपुरुष ने तुम पर दया करके तुम्हारे दर्द और शक को समाप्त कर दिया है।''

रानी इन्द्रमति ने दोनों हाथ जोड़कर कहा–''हे भगवान! मेरी एक बेनती है। मैं अपनी अच्छी किस्मत की वजह से ही आपके चरणों में पहुँची हूँ। यहाँ आकर मैंने सतपुरुष का दर्शन पाया है। अब मेरा शरीर सुंदर हो गया है, लेकिन अभी मुझे एक चिन्ता है। मेरे पति राज्य के मोह में बंधे हुए हैं। हे आत्माओं के स्वामी! उन्हें यहाँ ले आओ नहीं तो मेरा राजा, काल के मुँह में चला जाएगा।''

ज्ञानी ने कहा–''हे आत्मा! अब, तुम्हें हंस का रूप मिल चुका है, तुम राजा को क्यों बुला रही हो? उसने भक्ति नहीं की, उसके पास परवाना नहीं। वह सच के बिना ही संसार में भटक रहा है।''

''हे भगवान! मैंने संसार में रहकर आपकी भक्ति बहुत तरीकों से की। राजा मेरी भक्ति के बारे में जानता था। उस बुद्धिमान ने मुझे कभी भी यह सब करने से नहीं रोका। इस संसार की प्रकृति बहुत कठिन है, अगर पत्नी, पति को छोड़कर दूसरी जगह जाती है तो संसार उसे गन्दे–

गन्दे नामों से पुकारता है। राजा का काम ख्याति, दम, गुस्सा और चालाकी से जुड़ा होता है। जब मैं साधु–सन्तों की सेवा करती थी तो राजा यह जानकर खुश होता था। हे भगवान! अगर राजा ने मुझे भक्ति करने की इजाजत ना दी होती तो मेरा काम कैसे पूरा हो सकता था?

मैं राजा की प्रिय थी, उसने मुझे कभी भी नहीं रोका। मैं साधुओं की सेवा, शब्द के रास्ते की प्राप्ति के लिए करती थी। अगर राजा ने मुझे रोका होता तो मैं आपके चरणों में कैसे पहुँचती? मैं नाम नहीं पा सकती थी। वह बुद्धिमान राजा बहुत ही महान है। आप उसकी आत्मा को ले आओ, आप दया के सागर हो। कृपया करके राजा के बंधन भी काट दो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–यह सुनकर ज्ञानी हँसा और बिना विलम्ब किए चल पड़ा। बहुत जल्दी ही वह गढ़–गिरिनार आ गया क्योंकि राजा की मृत्यु का समय नजदीक था, वह यम से घिरा हुआ था और बहुत ही तकलीफ में था। वहाँ जाकर सतगुरु ने उसे आवाज लगाई, लेकिन यमराज ने राजा को नहीं छोड़ा।

हे भाई! जब कोई भक्ति नहीं करता तो उसके साथ यही होता है। समय पूरा होने पर यम उसकी आत्मा को बहुत दुःख देते हैं। मैंने जल्दी से चन्द्रविजय का हाथ पकड़ा और उसे लेकर सतलोक आ गया।

राजा को देखकर रानी ने राजा के पैर छुए। इन्द्रमति ने कहा, ''राजा! मुझे पहचानो मैं तुम्हारी पत्नी हूँ।'' राजा ने कहा, ''हे बुद्धिमान आत्मा! तुम्हारी सुन्दरता सोलह सूरज और चन्द्रमा जैसी है। तुम्हारा अंग–अंग चमक रहा है। मैं तुम्हें अपनी पत्नी कैसे कह सकता हूँ? तुमने खुद भक्ति की और मुझे भी बचाया। उस गुरु की जय–जयकार करो, जिसने तुम्हें भक्ति में दृढ़ किया और तुम्हारी भक्ति से ही मैं अपने सच्चे घर में पहुँच सका हूँ। बहुत जन्मों में मैंने अच्छे कर्म किए होंगे, इसलिए मुझे अच्छे कर्मों वाली पत्नी मिली। मैंने अपने मन को राजपाठ के कामों में ही लगाए रखा, इसलिए मैं सतगुरु की भक्ति को प्राप्त नहीं कर सका। अगर तुम मेरी पत्नी ना होती तो मैं नर्क में जा चुका होता। मैं तुम्हारे गुणों का

वर्णन नहीं कर सकता। जैसी पत्नी मुझे मिली है, वैसी ही पत्नी सारे संसार को मिले।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–यह शब्द सुनकर ज्ञानी हँसा और फिर चन्द्रविजय से बोला, ''राजा तुम बहुत ही बुद्धिमान हो। जो आत्मा मेरे शब्द को स्वीकार कर लेती है, वह सतपुरुष के दरबार में आ जाती है। जो स्त्री पुरुष मेरी बात मान लेते हैं, वे हंस का रूप धारण कर लेते हैं।'' राजा ने सतपुरुष के स्वरूप का ध्यान किया, सतपुरुष के दर्शन हो गए। हंस का रूप लेकर वह बहुत ही सुंदर हो गया। राजा को सोलह सूरज और चन्द्र की सुंदरता भी मिल गई। उस औरत की विवेकशीलता बहुत महान है, जिसने अपने पति को भी वहाँ बुला लिया।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! इसके बाद आपने क्या किया? मुझे यह बताओ फिर आप इस भव सागर में कैसे आए?

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–हे धर्मदास! फिर मैं काशी शहर में आया। मैंने सुपच सुदर्शन को नाम देकर उसकी आत्मा को जगाया।

सुपच सुदर्शन की कहानी

काशी शहर में एक सुपच सुदर्शन रहता था। मैंने उसे सत–शब्द में दृढ़ कर दिया। वह एक विवेकशील और सुंदर सन्त था, उसने शब्द को पहचाना और दृढ़ होकर उसमें मिल गया। उसका मोह खत्म हो गया। मैंने उसे नाम का पान कराया और मुक्ति का संदेश दिया। काल द्वारा दी जाने वाली सारी पीड़ाओं को खत्म कर दिया। उसने नाम का सिमरन पूरी एकाग्रता से किया, पूरे हृदय से सतगुरु की भक्ति की। उसके माता–पिता खुश हुए, उनके दिलों में उसके लिए बहुत प्यार आ गया।

हे धर्मदास! यह सारा संसार अंधकार में है। ज्ञान के बिना जीव काल के दास बन गए हैं। भक्ति को देखकर जीव खुश तो हो जाता है, पर वह नाम नहीं लेता। यह मूर्ख मुझे देखकर भी नहीं पहचानता और काल के जटिल जाल में फंस जाता है। जैसे कुत्ता अपने आपको गंदगी में फंसा लेता

है, इसी तरह इस संसार के लोग अमृत को छोड़कर विष में डूब जाते हैं।

तीसरे युग में, युधिष्ठिर राजा था, अपने भाइयों को मारकर वह कलंकित हो चुका था। इसलिए उसने यज्ञ करवाने की सोची। जब उसे कृष्ण से यज्ञ की आज्ञा मिल गई तो पांडव यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री ले आए। दूर और पास के सभी साधुओं को बुलाया गया। कृष्ण ने पांडवों को बताया कि ''तुम्हारा यज्ञ तभी पूर्ण माना जाएगा, जब आकाश से घंटे की आवाज सुनाई देगी।'' बहुत से सन्यासी, बैरागी, ब्राह्मण और ब्रह्मचारी आए। उन्हें बहुत प्यार से खाना खिलाया गया। लेकिन जब आकाश से घंटे की आवाज नहीं आई तो राजा हैरान हुआ। उसने सोचा सब ऋषियों ने खाना खा लिया, पर घंटे की आवाज क्यों नहीं आई? तब पांडव, कृष्ण के पास गए, उन्होंने कृष्ण से अपने मन के संदेह के बारे में पूछा।

युधिष्ठिर ने कहा–''हे यादुराजा! हम पर दया करके हमें बताओ कि घंटे की आवाज क्यों नहीं आई?'' कृष्ण ने उन्हें बताया, ''कि एक साधु ने खाना नहीं खाया।'' पांडवों ने हैरान होकर कहा, ''करोड़ों साधुओं ने खाना खाया है। हमें बताओ अब हम उस साधु को कहाँ से ढूँढें?

कृष्ण ने कहा–''सुपच सुदर्शन को लाकर पूरी इज्जत से खाना खिलाओ, वही एक साधु है। उसी के द्वारा तुम्हारा यज्ञ पूर्ण होगा।''

जब उन्हें कृष्ण से यह आदेश मिला तो पांडवों ने सुपच सुदर्शन को लाकर उसे पूरी इज्जत से खाना खिलाया। जब उसने खाना खाया तो नाम की महिमा से आकाश से घंटे की आवाज आई। उन्हें फिर भी सतगुरु के शब्द की पहचान नहीं हुई क्योंकि उनकी बुद्धि काल के बाजार में बिकी हुई थी। काल अपनी अनुयायी आत्माओं को भी परेशान करता है। वह उन आत्माओं को भी भटका देता है जो उसकी भक्ति में लगी होती हैं।

पहले, कृष्ण ने सलाह देकर पांडवों से अपने ही भाइयों को मरवा दिया। फिर पांडवों को इसका दोषी ठहराया और इस दोष को दूर करने के लिए उनसे यज्ञ करवाया। इसके बाद भी उसने उन्हें दर्द दिया और हिमालय में भेजकर उनकी समाप्ति करवा दी। चारों भाई और द्रौपदी

नष्ट हो गए। युधिष्ठिर अपनी सच्चाई की वजह से बच गया। कृष्ण को अर्जुन से प्यारा कोई नहीं था, पर उसके साथ भी उसी तरह का व्यवहार किया गया। बाली, हरिशचन्द्र और कर्ण बहुत बड़े दानी थे, पर काल ने उनका भी नाश कर दिया। आत्माएं, काल को अपना बचाने वाला समझती हैं पर वह उन्हें ही खा जाता है।

काल सबको नचाता है, भक्त और अभक्त कोई भी उससे बच नहीं सकता। जो अपने रक्षक की खोज नहीं करते, यम के मुँह में चले जाते हैं। मैंने बार–बार आत्माओं को चेताया और आध्यात्मिक रास्ता बताया, लेकिन काल ने सबकी बुद्धि हर ली और पिंजरा बनाते हुए सब जीवों को उसमें कैद कर लिया। कोई भी सतनाम को नहीं परखता और मुझसे लड़ते हैं। जब तक सतपुरुष का नाम नहीं मिलता, जन्म और मृत्यु का दर्द खत्म नहीं हो सकता। जब वे सतपुरुष के नाम को पा लेते हैं तो काल को हराकर उस घर में चले जाते हैं, जो कभी नष्ट नहीं होता।

हे धर्मदास! आत्माएं सतनाम की महिमा से सतलोक जाती हैं। उनके जन्म और मृत्यु का दर्द खत्म हो जाता है, वे फिर दोबारा इस संसार में नहीं आती। जब आत्माएं सतपुरुष के स्वरूप को देखती हैं तो उत्साहित हो जाती हैं। वैसे ही जैसे चन्द्रमा को देखकर कमल खिल जाता है। एक क्षण के लिए भी उन्हें दुःख–दर्द या मोह नहीं रहता।

जब सुपच सुदर्शन का लेना–देना खत्म हो गया तो मैं उस बहादुर को सतलोक ले गया। उसने सुंदरता और महिमा देखी तो दूसरे हंसों के साथ उत्साहित हो गया। उसे सोलह सूरज की सुंदरता मिल गई और सतपुरुष के दर्शन से वह उन हंसों जैसा हो गया।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! मेरी एक प्रार्थना है, भक्त सुदर्शन को सतलोक भेजने के बाद आप कहाँ गए? मुझे बताओ ताकि आपके अमृत से भरे वचन सुनकर मेरे संदेह दूर हो जाएं।

11. कलयुग में कबीर का अवतार

कबीर साहब ने कहा–हे प्यारे धर्मदास! सुनो, तीसरा युग चला गया और कलयुग आ गया। मैं फिर से आत्माओं को संदेश देने के लिए आया। जब निरंजन ने मुझे आते हुए देखा तो वह मुरझा गया और कहने लगा, ''कि आप मुझे इतना दर्द क्यों देते हो? मेरी खुराक सतलोक क्यों ले जाते हो? तीनों युगों में आप संसार में गए आपने मेरा भव सागर बर्बाद कर दिया। सतपुरुष ने मुझसे वायदा किया था मगर आपने आत्माओं को क्यों मुक्त किया? अगर कोई और भाई आता तो मैं उसे मारता और एक क्षण में खा जाता, लेकिन मेरी शक्ति आप पर काम नहीं करती। आपकी मदद से आत्माएं अपने घर वापिस चली जाती हैं। अब आप फिर से संसार में जा रहे हो, पर कोई भी आपके शब्द को नहीं सुनेगा।''

मैंने ऐसे कर्म और भ्रम बनाए हैं कि कोई भी उनसे बाहर नहीं निकल सकता। मैंने हर घर में भ्रम के भूत बनाए हैं, आत्माओं को भटकाकर उन्हें नचा रहा हूँ। लेकिन जो आपको पहचान जाते हैं उनके भ्रम दूर हो जाते हैं। सब इंसान माँस खाते हैं और शराब पीते हैं। देवी–देवताओं, योगियों की पूजा एक भ्रम है, जिसे संसार अपना चुका है। भाई! तुम्हारी भक्ति मुश्किल है इसलिए कोई भी उसे नहीं मानेगा।''

ज्ञानी ने कहा–''हे निरंजन! मैं तुम्हारे सब धोखों को पहचानता हूँ। सतपुरुष का वायदा बदला नहीं जा सकता इसलिए तुम आत्माओं को खा रहे हो। अगर सतपुरुष मुझे इजाजत दें, तो सब आत्माएं 'नाम' से प्यार करने लग जाएं। मैं, बहुत आसानी से आत्माओं को जगाकर उन्हें मुक्त कर सकता हूँ। तुमने करोड़ों फंदे बनाए, वेदों और शास्त्रों को रचकर उनमें अपनी ही महिमा लिख दी। अगर मैं, इस संसार में अपने छिपे हुए रूप में ना आकर, असली रूप में आ जाऊँ तो सब आत्माओं को मुक्त करवा सकता हूँ। अगर मैं ऐसा करता हूँ तो सतपुरुष का वायदा टूटता है। सतपुरुष का शब्द बदला नहीं जा सकता, नष्ट नहीं किया जा सकता वह बहुत ही अमूल्य है। जिन आत्माओं में अच्छे गुण हैं वे मेरे शब्द को

स्वीकारेंगी। मैं उन आत्माओं के फंदे काटकर उन्हें आजाद करूँगा और सतलोक ले जाऊँगा। मैं, जिन आत्माओं का भ्रम दूर करूंगा वे दोबारा तुम्हारे जाल में नहीं फँसेगी।

मैं, उन्हें 'सच्चे–शब्द' में दृढ़ करके उनके सारे भ्रम तोड़ दूँगा। जो आत्माएं मुझे पहचानकर मेरे सच्चे शब्द को अपने ध्यान में रखेंगी वे अपने पैर तुम्हारे सिर पर रखकर कभी ना नष्ट होने वाले मंडल में पहुँच जाएगी। ऐसी आत्माएं 'सच्चे–शब्द' के चिह्नों को बड़ी खुशी से पहचान लेंगी।''

निरंजन ने कहा–''हे आत्माओं को खुशी देने वाले, जो आत्माएं अपना ध्यान आप में लगा लेती हैं। उन्हें मेरे संदेशवाहक नहीं ले जा सकते, वे हारकर मेरे पास लौट आते हैं। हे मेरे भाई! मुझे यह रहस्य समझाओ।''

ज्ञानी ने कहा–''हे निरंजन! सच के चिह्न सुनो, 'सच्चा–शब्द' मुक्ति देने वाला है। सतपुरुष का नाम ऐसी छिपी हुई ताकत है जिसे मैं आत्माओं में सतनाम के रूप में प्रगट कर देता हूँ। जो आत्माएं मेरे नाम को स्वीकार करती हैं वे भव सागर को पार कर लेती हैं। जब जीव मेरा नाम ले लेता है तो तुम्हारे संदेशवाहक की शक्ति कम हो जाती है।''

निरंजन ने कहा–''हे जानी जान! मुझ पर दया करो कलयुग में आपका क्या नाम होगा? मुझे अपने छिपे हुए चिह्नों के रहस्य के बारे में और ध्यान की रीत के बारे में बताओ? आप संसार में क्यों जा रहे हो? मैं भी आत्माओं को शब्द में जगाकर उन्हें सतलोक भेज दूंगा। मुझे अपना सेवक बनाकर शब्द का रहस्य बता दो?''

ज्ञानी ने कहा–''हे निरंजन! तुम बहुत धोखेबाज हो ऊपर से कह रहे हो कि मेरे सेवक हो लेकिन तुम्हारे अंदर छल ही छल है। मैं, तुम्हें वह गुप्त भेद नहीं दूँगा क्योंकि सतपुरुष ने ऐसा करने का आदेश नहीं दिया। कलयुग में मेरा नाम कबीर होगा।''

निरंजन ने कहा–''आप मुझसे कुछ छिपा रहे हो इसलिए मैं

खुद ही छल करूँगा। मैं अपनी बुद्धि से ऐसा धोखा रच दूंगा कि बहुत सारी आत्माएं मेरे पास आ जाएंगी। मैं आपके नाम से ही पंथ की स्थापना करके आत्माओं को धोखा दूँगा।''

ज्ञानी ने कहा–''हे काल! तुम सतपुरुष के विरोधी हो। तुम मुझे अपने धोखों के बारे में क्या बताओगे? तुम्हारे धोखे उस आत्मा का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे जो शब्द से प्यार करेंगी। मैं जिन्हें नाम दूँगा उन्हें तुम्हारे धोखों के बारे में समझा दूँगा।'' यह सुनकर निरंजन अंतरध्यान हो गया।

जगन्नाथ मंदिर की स्थापना की कहानी

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–उन दिनों इन्द्रदमन उड़ीसा का राजा था। जब कृष्ण ने शरीर छोड़ दिया तो इन्द्रदमन को स्वप्न आया। उस स्वप्न में कृष्ण ने कहा, ''राजा! मेरा मंदिर बनवाओ, मूर्ति की स्थापना करो।'' इस स्वप्न के बाद राजा ने मंदिर बनवाना शुरू किया लेकिन जब वह मंदिर बनकर तैयार हो गया तो समुन्द्र ने उस जगह को नष्ट कर दिया। दोबारा से जब मंदिर बनवाया गया तो समुन्द्र गुस्से में आया उसने एक क्षण में ही सब कुछ डुबो दिया और जगन्नाथ का मंदिर टूट गया। छह बार मंदिर बनवाया गया हर बार समुन्द्र भागता हुआ आता और उसे डुबो देता। कई बार कोशिश करने के बाद राजा थक गया कि कृष्ण का मंदिर पूरा नहीं हो सका।

मंदिर की हालत देखकर मैंने अपने उस वायदे को याद किया जो मैंने उस अन्यायी काल के साथ किया था। मैं, अपने वायदे को निभाने के लिए वहाँ गया। मैंने समुन्द्र के तट पर अपनी जगह बनाई और वहाँ बैठ गया पर किसी आत्मा ने मुझे नहीं पहचाना। इन्द्रदमन को फिर स्वप्न आया, ''हे राजा! अब मंदिर का काम शुरू करो। मेरे वचनों पर विश्वास करके उन्हें मानो।'' राजा ने काम शुरू करवा दिया और मंदिर बन गया। जिसे देखकर समुन्द्र इतने गुस्से में आया कि ऐसा लग रहा था कृष्ण का मंदिर नहीं बचेगा। गुस्से से भरी लहरें, आकाश को छू रही थी। फिर समुन्द्र उस जगह आया, जहाँ मैंने अपनी जगह बनाई थी। जैसे ही समुन्द्र को मेरे दर्शन

हुए, वह रुक गया। समुन्द्र, ब्राह्मण के रूप में मेरे पास आया और मेरे पैरों को छूकर उसने अपना सिर झुकाया।

समुन्द्र ने कहा–''हे भगवान! मैं यहाँ जगन्नाथ मंदिर को डुबाने के लिए आया था। मेरे पापों को क्षमा कर दो। अब मुझे आपका रहस्य पता चल गया है। हे दयावान! मुझे रघुपति से बदला लेने की आज्ञा दो। जब रघुपति लंका गए थे तो उन्होंने मेरे ऊपर बाँध बनाकर युद्ध किया था। मुझ पर दया करो, मुझे अपना बदला लेने दो।''

कबीर साहब ने कहा–''महासागर, मैं तुम्हारे बदले के कारणों को समझता हूँ। तुम द्वारका शहर में बाढ़ ले आओ। इतना सुनकर समुन्द्र ने मेरे चरणों को छुआ और अपना सिर झुकाकर वहाँ से चला गया। समुन्द्र की गुस्से से भरी लहरें द्वारका में बाढ़ ले आई।''

मंदिर का काम पूरा हुआ और वहाँ मूर्ति की स्थापना हो गई। तभी कृष्ण ने पुजारी को स्वप्न दिखाया कि जिसने समुन्द्र के तट पर अपना स्थान बनाया है उस दास कबीर को मैंने भेजा है। कबीर के दर्शन करते ही समुन्द्र की लहरें शान्त हुई और मेरा मंदिर बच सका। पुजारी समुन्द्र के किनारे नहाने के लिए गया। वहाँ उसे कबीर साहब (जो नीची जाति से सम्बन्ध रखते थे) के दर्शन हुए। जिसे पुजारी ने बहुत बुरा माना। तब मैंने एक चाल चली, उस मंदिर की सारी मूर्तियों को कबीर के रूप में बदल दिया। यह देखकर पुजारी ने सिर झुकाकर कहा–हे प्रभु! मैंने आपके रहस्य को नहीं समझा। मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पापों को क्षमा करो।

कबीर साहब ने कहा–''हे पुजारी! तुम सारी सोच और दूरदर्शिता को छोड़कर भगवान की भक्ति करो। जो जीव भ्रम का भोजन करेगा वह विकलांग हो जाएगा। जो छुआछूत में विश्वास करेगा वह अगले जन्म में पागल होगा। भ्रम को हटाने का ज्ञान देकर मैं उस जगह से चला गया।''

धर्मदास ने कहा–हे पूर्ण सतगुरु! आपकी दया से मेरा सारा दर्द दूर हो गया है। इसके बाद आप कहाँ गए? मुझे कलयुग के प्रभाव के बारे

में बताओ कि आपने आत्माओं को कैसे जगाया और कौनसी आत्माओं ने आपकी सेवा की?

चार गुरुओं की स्थापना

हे सन्त! अनूप ज्ञान को सुनो। मैंने गजथल देश के राजा को ज्ञान दिया।

राई बाँकेजी: राई बाँकेजी वह नाम था, जिसे मैंने सतशब्द दिया। मैंने उसे आत्माओं का मुक्तिदाता बनाया, उसने बहुत–सी आत्माओं को मुक्त किया।

सहेत जी : फिर मैं शिलमिली द्वीप पर गया, वहाँ मैंने एक सन्त सहेत जी को नामदान दिया। जब उसने मुझे अपना मानकर पहचाना तो मैंने उसे भी मुक्तिदाता बना दिया।

चतुरभुज : हे धर्मदास! मैं, वहाँ से दरभंगा शहर गया, वहाँ राजा चतुरभुज रहता था। सच के साथ की वजह से उसने मुझे पहचाना। जब मैंने यह देखा कि वह पूरी तरह से मेरी शरण में है तो मैंने उसे भक्ति करने का तरीका बताया। उसकी दृढ़ता को देखकर मैंने उसे नाम–दान दिया क्योंकि वह अपने अहम और भ्रम को छोड़कर मुझसे मिला था। मैंने उसे भी मुक्तिदाता बना दिया।

आत्मा, पवित्र नाम को स्वीकार करके जाग जाती है, परिवार और सुखों को छोड़कर अच्छे गुणों को धारण कर लेती हैं। चतुरभुज, बाँकेजी, सहेत जी और चौथे तुम हो। तुम चारों, आत्माओं के मुक्तिदाता हो। तुम्हारी बाँह पकड़कर जम्बू द्वीप की आत्माएं मुझसे मिल सकती हैं। जो आत्माएं, प्यारों के शब्दों को स्वीकार करके उसमें दृढ़ हो जाती हैं, काल उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

धर्मदास ने कहा–हे सतगुरु! आप धन्य हैं, जिसने मुझे जगाया और काल के पंजे से बचाया। मैं आपके दासों का दास हूँ। मेरा दिल खुशी से भरा हुआ है, मैं आपके गुणों का वर्णन नहीं कर सकता। वे जीव बहुत

भाग्यशाली हैं जो आपके शब्दों पर विश्वास करते हैं और उन पर चलकर भक्ति करते हैं। मुझे यह बताओ कि आपने मुझे क्यों जगाया? मेरे किस अच्छे कर्म की वजह से मुझे आपके दर्शन हुए?

धर्मदास के पिछले जन्मों की कहानी

कबीर साहब ने कहा–सुनो धर्मदास! सुपच सुदर्शन तीसरे युग में थे, जिनकी कहानी मैंने तुम्हें बताई थी, जब मैं उन्हें निज घर ले गया तो उन्होंने मुझसे प्रार्थना की–हे सतगुरु! मेरे माता–पिता को भी मुक्त कर दो। वे यम के देश में बहुत पीड़ा सह रहे हैं। मैंने अपने माता–पिता को बहुत तरीकों से समझाया था पर उन्होंने मुझ पर विश्वास नहीं किया। वे मुझे बच्चा ही समझते रहे, उन्होंने मुझसे ज्ञान नहीं लिया, लेकिन उन्होंने मुझे आपकी भक्ति करने से रोका भी नहीं। इसलिए हे भगवान! ''मैं आपसे यह बेनती करता हूँ कि उन्हें भी सत–शब्द में पक्का करके मुक्त कर दो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–जब सुपच सुदर्शन ने मुझसे इतनी बेनती की तो मैंने उसके वचनों को मान लिया। इसी वजह से मैं दोबारा संसार में आया और कलयुग में मुझे कबीर नाम से बुलाया गया। सुपच सुदर्शन की माता का नाम लक्ष्मी और पिता का नाम हर था। वे दोनों सुपच शरीरों को छोड़कर दोबारा इंसानी शरीर प्राप्त कर चुके थे।

सन्त सुदर्शन की महिमा की वजह से वे दोनों एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे और फिर से एक हुए। ब्राह्मण का नाम कुलपति और स्त्री का नाम महेश्वरी था। महेश्वरी बेटे की इच्छा में पूरी तरह से फंसी हुई थी, इसलिए सूर्य देवता को खुश करने के लिए व्रत रखती थी। वह, एक बार साड़ी से सिर ढककर अपने दोनों हाथ जोड़कर रोते हुए प्रार्थना कर रही थी, तभी मैं एक बच्चे का रूप धारण करके आया। मुझे देखकर वह बहुत खुश हुई और अपने घर ले गई। उसने कहा भगवान ने मुझ पर दया की है और सूर्य देवता ने व्रत रखने का फल दे दिया है। मैं, कई दिनों तक वहाँ रहा। दोनों पति–पत्नी ने मेरी सेवा की।

वे बहुत कंगाल और दुःखी थे इसलिए मैंने अपने मन में सोचा

कि सबसे पहले इनकी गरीबी दूर करनी चाहिए फिर भक्ति और मुक्ति की बात करनी चाहिए। हर बार जब मैं अपने पालने को झटका लगाता उन्हें एक सोने का सिक्का मिलता। रोज सिक्का मिलने से वे बहुत खुश हो गए फिर मैंने उनसे 'सच्चे–शब्द' की बात की और उन्हें बहुत तरीकों से समझाने की कोशिश की, पर शब्द उनके दिलों में नहीं पनपा। वे एक बच्चे के ज्ञान में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने मुझे नहीं समझा इसलिए मैं गुप्त हो गया।

ब्राह्मण, ब्राह्मणी–कुलपति और महेश्वरी शरीर छोड़ गए, उन्होंने मेरे दर्शन किए थे, इसलिए उन्हें फिर से इंसानी जामा मिला। दोनों फिर से इकट्ठे हुए और चांदवारा शहर में रहने लगे। औरत का नाम उधा और आदमी का नाम चन्दन साहू पड़ा। फिर मैं चांदवारा में प्रगट हुआ। उस जगह मैं, एक बच्चे के रूप में सरोवर के किनारे लेटा हुआ था। मैंने कमल के पत्र पर आसन लगाया, मैं वहाँ चौबीस घंटे तक रहा। उधा नहाने के लिए आई, सुंदर बच्चे को देखकर आकर्षित हो गई। बच्चे के रूप में मैंने उसे अपने दर्शन दिए और वह बच्चे को अपने घर ले आई। चन्दन साहू ने कहा, ''हे औरत! मुझे बताओ तुम्हें यह बच्चा कहाँ से मिला और तुम इसे यहाँ क्यों ले आई?'' उधा ने कहा, ''मुझे यह बच्चा सरोवर के किनारे से मिला, इसकी सुंदरता देखकर मुझे यह पसंद आ गया।'' चन्दन साहू ने कहा, ''हे मूर्ख औरत! जल्दी जाकर इस बच्चे को वहीं छोड़ आओ। इसे देखकर हमारे पड़ोसी और रिश्तेदार हम पर हंसेंगे, जिससे हमें दु:ख होगा।''

चन्दन साहू उससे नाराज हो गया उसने कहा–हे उधा! इस बच्चे को उठाकर पानी में फैंक आओ। उधा डर गई, उसने अपने पति की बात मान ली। उस बच्चे को उठाया और उसे फैंकने के बारे में सोचने लगी, जब वह मुझे फैंकने लगी तो मैं अंतरध्यान हो गया। तब वे दोनों बहुत व्याकुल हुए। हैरानी से इधर–उधर मेरी खोज में भटकते रहे।

इस तरह बहुत समय बीत गया। उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया और फिर जन्म लिया। उन्हें फिर इंसानी शरीर मिला। वे मुस्लिम

जुलाहे परिवार में जन्मे ओर कर्मों की वजह से फिर इकट्ठे हो गए। वे काशी में रहने लगे, उनका नाम नीरू और नीमा था।

ज्येष्ठ महीने से पूर्व चन्द्रमा की रात को नीमा औरतों के साथ उस जगह पहुँची जहाँ से वह पानी भरकर लाती थी। मैं, उस सरोवर में एक बच्चे के रूप में कमल पर लेटा हुआ, बच्चे की तरह खेल खेल रहा था। नीमा मुझे देखकर प्यार करने लगी। जैसे कोई गरीब दौलत को देखकर उसके पीछे भाग पड़ता है, ठीक वैसे ही नीमा ने भागकर उस बच्चे को उठा लिया और नीरू के पास ले आई। इस बार भी जुलाहा नाराज हो गया और कहने लगा, ''जल्दी जाकर इस बच्चे को फैंक आओ, लेकिन वह बहुत खुश थी। मैंने उससे जो कहा उसने बहुत ध्यान से सुना।''

''हे नीमा! मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। पिछले प्यार के कारण मैं तुम्हें दर्शन देने के लिए आया हूँ, मुझे अपने घर ले चलो। अगर तुम मुझे पहचानकर गुरु के रूप में स्वीकार कर लोगी तो मैं तुम्हें नाम देकर उसमें दृढ़ कर दूँगा और तुम यम के फंदे में नहीं फंसोगी।'' मेरे शब्दों को सुनकर उसके मन से नीरू का डर निकल गया। वह मुझे अपने घर ले आई, इस तरह मैं काशी पहुँच गया। मेरे प्रति मोह देखकर जुलाहे ने उसे इजाजत दे दी। मैं, कई दिनों तक वहाँ रहा, लेकिन उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया। वे मुझे बच्चा ही समझते रहे। उन्होंने ना तो शब्द को स्वीकारा और ना ही उसे अपने हृदय में पनपने दिया।

हे भाई! अब मैं तुम्हें अगले जन्म के बारे में बताता हूँ। जब उनका जुलाहों के जन्म का समय खत्म हो गया तो उनका जन्म मथुरा में हुआ। मैं उन्हें वहाँ दर्शन देने गया। उन्होंने मेरे शब्द पर विश्वास करके उसे स्वीकार कर लिया। दोनों पति–पत्नी नाम लेने के बाद पूरे दिल से भक्ति करने लगे। मैंने उन्हें सतलोक में जगह दे दी। उन्होंने अपना मन सतपुरुष के चरणों में लगा लिया। उन्हें हंस की महिमा और शरीर मिल गया।

उन हंसों को देखकर सतपुरुष खुश हो गए। उन्होंने सुकृत से

कहा, ''हे भाई! तुम बहुत दिनों तक सतलोक में रहे हो। इस सारे समय में काल ने जीवों को बहुत दु:ख दिए हैं और मुझे बुलाकर आदेश दिया कि संसार में जाओ और दु:खी जीवों को सतलोक का संदेश दो। नाम देकर आत्माओं को मुक्त करो। यह सुनकर सुकृत खुश हो गया और वह तभी सतलोक से चल पड़ा।''

सुकृत को देखकर काल बहुत खुश हो गया ''कि मैं इसे फंसा लूँगा।'' फिर काल ने बहुत चालें चली और सुकृत को फंसाकर पानी में फैंक दिया। जब बहुत सारे दिन बीत गए एक भी आत्मा काल को नहीं हरा पाई। आत्माओं की आवाजें सतलोक में सुनाई देने लगी तब सतपुरुष ने मुझे भेजा।

कबीर साहब का धर्मदास को नामदान

तब सतपुरुष की आवाज आई, ''हे ज्ञानी! संसार में जाओ। जीवों की आत्माओं के लिए मैंने अपनी अंश सुकृत को संसार में प्रगट किया। मैंने उसे आदेश दिया और शब्द के रहस्य को अच्छी तरह समझाया। मैंने उसे आत्माओं को नाम के सहारे भव सागर पार करवाकर अपने घर वापिस लाने के लिए कहा। यह सुनकर वह चला तो गया पर अब तक इस शान्ति के देश सतलोक में वापिस नहीं आया है। सुकृत भव सागर में काल के द्वारा पकड़ लिया गया है, हे ज्ञानी, जाकर उसको जगाओ ताकि मुक्ति का रास्ता चलता रहे। सुकृत के घर में मेरे बयालिस अंश अवतरित होंगे। हे ज्ञानी! जल्दी जाकर सुकृत के फंदे काट दो।''

कबीर साहब ने कहा–मैं अपना सिर झुकाकर चल पड़ा। हे धर्मदास! अब मैं तुम्हारे पास आया हूँ। तुम नीरू और नीमा का अवतार हो। तुम मेरी बहुत ही प्यारी आत्मा हो, जिसके बारे में मैं, बहुत चिन्तित हूँ। सतपुरुष के आदेश से मैं तुम्हारे पास आया हूँ और मैंने तुम्हें पिछली बातें याद दिलाई हैं। मैंने तुम्हें दर्शन इसलिए दिए हैं, क्योंकि तुमने इस बार मुझे पहचान लिया है। मैं तुम्हें सतपुरुष के शब्द बताऊँगा, ''शब्द को पहचानो और उसमें पूरा विश्वास करो।''

धर्मदास, कबीर साहब के चरणों में गिर पड़ा, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बहुत उत्साहित होकर बोला, हे भगवान! आपने मेरी आत्मा का भ्रम खत्म कर दिया है। वह रो रहा था और कुछ भी नहीं बोल रहा था। मेरे चरणों से उसका ध्यान एक क्षण के लिए भी नहीं हटा। वह बहुत ज्यादा भावुक होने की वजह से शान्त था और अपनी आँखे नहीं खोल रहा था।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! आपने मुझे मुक्ति देने के लिए यह शरीर धारण किया। अब मुझ पर ऐसी दया करो कि मैं आपको एक क्षण के लिए भी ना भूलूँ। मुझे यह वरदान दो कि मैं दिन–रात आपके चरणों में रहूँ, आप मेरे रक्षक हो।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! तुम नाम में प्यार और विश्वास के साथ मिल जाओ। मुझे पहचानकर तुम्हारा भ्रम दूर हो गया है। तुम हमेशा प्यार में पक्के रहोगे। जो इन्सान गुरु के दिखाए हुए रास्ते पर नहीं चलता वह दु:ख पाता है। गुरु, अच्छे और बुरे रास्ते के बारे में बताता है। तुम मेरा अंश हो। बहुत सारी आत्माओं को सतलोक लेकर जाओगे। तुम मुझे चारों में से सबसे ज्यादा प्यारे हो। तुममें और मुझमें कोई फर्क नहीं है। अपने अंदर देखो और शब्द की पहचान करो। मन, वचन और कर्म से अपना ध्यान मेरी तरफ लगाओ। मैंने तुम्हारे अंदर अपना निवास बनाकर तुम्हें अपना बना लिया है।

तुम अपने दिल में कोई भी भ्रम मत लाओ। मैंने तुम्हें स्थायी नाम दे दिया है। एक जगह ध्यान लगाकर आत्मा को मुक्ति मिल जाती है। तुम जम्बू द्वीप की आत्माओं के मल्लाह हो जो तुम्हारे साथ मुझे याद करेंगे, वे सतलोक में वास करेंगे। सतपुरुष का सिमरन मुक्ति देने वाला है।

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! तुम सुकृत का अंश हो। अब नाम लेकर अपने सारे संशय दूर करो। चौके की रस्म निभाने के बाद तुम्हें परवाना दूँगा। परवाना तिनका तोड़ने के बाद ही लेना, जिससे काल का

घमंड खत्म हो जाए। दस अवतार और सारे देवी–देवता काल की छाया हैं। तुम संसार में इन आत्माओं को जगाने के लिए आए हो।

हे धर्मदास! अब तुम्हें जागना चाहिए और सतपुरुष के शब्द को प्रगट करना चाहिए। परवाना लेकर आत्माओं को जगाओ और उन्हें काल के फंदे से आजाद करवाओ। इसी काम के लिए तुम इस संसार में आए हो।

चतुरभुज, बाँकेजी, सहेत जी और तुम। तुम चारों इस संसार के मल्लाह हो। आत्माओं के लिए ये चारों अंश संसार में प्रगट किए गए हैं। मैंने अपना ज्ञान दे दिया है, जिसे सुनकर काल भाग जाएगा। चारों में से, तुम जम्बू द्वीप के गुरु हो। तुममें आश्रय पाकर बयालिस अवतारों की आत्माओं को मुक्ति मिलेगी।

कबीर साहब का धर्मदास को परवाना देना

धर्मदास ने बहुत प्यार से मेरे चरणों को पकड़कर कहा, हे भगवान! आपने मुझे धन्य बना दिया है। मेरे पास वह जुबान नहीं जिससे मैं आपके अमृत जैसे गुणों का वर्णन कर सकूँ। मैं हर तरह से अयोग्य हूँ लेकिन आपने मुझ पापी को बचाया है। हे भगवान! अब मुझे चौकें का रहस्य बताओ?

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! आरती की विधि का वर्णन सुनो जिसके करने से यमराज भाग जाता है। सात हाथों का वस्त्र ले आओ। एक सफेद छत्र लगा दो। घर और आँगन को साफ कर दो। चंदन का चौंका लगाओ उस पर जल का छिड़काव करो। आटे का चौरस बनाओ। सवा सेर चावल, सफेद मिठाई, सफेद पान, सुपारी, लोंग, इलायची और कपूर रख दो। केलों के पत्तों के ऊपर आठ तरह के सूखे मेवे रख दो। फिर नारियल लाकर सब चीजें अच्छी तरह सजा दो।

कबीर साहब ने जो भी आदेश दिया, धर्मदास सब कुछ ले आया। फिर धर्मदास ने यह बेनती की, कि हे समरथ पुरुष! मुझे मुक्ति का तरीका बताओ? यह सुनकर गुरु बहुत खुश हुए और कहा–धर्मदास! तुम बहुत ही भाग्यशाली हो, अब तुम मुझे समझ चुके हो।

चौंके की रस्म को निभाने के लिए प्रभु सिंहासन पर बैठ गए। उन्होंने धर्मदास के परिवार की सब बड़ी और छोटी आत्माओं को बुलाया। एक–दूसरे को मानते हुए पति और पत्नी ने नारियल अपने हाथों में लेकर पूरी श्रद्धा से गुरु को दिया।

धर्मदास ने कहा–हे सतगुरु! आपके चरण चाँद और मेरा मन चकोर की तरह है। मेरे मन में भक्ति आने से मेरे सब शक दूर हो गए हैं। चौंके की रस्म खत्म होने पर शब्द की आवाज इस तरह से आई जैसे नगाड़ा बजता है। धर्मदास का तिनका टूट गया, ताकि अब उसे काल ना पकड़ पाए। प्रभु ने धर्मदास के लिए सतनाम लिख दिया, धर्मदास ने परवाना लेकर सात बार दंडवत प्रणाम किया। फिर सतगुरु ने अपना हाथ उसके माथे पर रखकर उसे उपदेश देकर धन्य किया।

कबीर साहब का धर्मदास को उपदेश

कबीर साहब ने कहा–सुनो धर्मदास! मैंने तुम्हारे सामने सच का रहस्य बेनकाव कर दिया है, तुम्हें पीने के लिए नाम दिया है। अब जीने के तरीके सुनो।

अहम को छोड़कर भक्ति हमेशा पूरे दिल से करो। साधुओं की सेवा करो। सबसे पहले परिवार की सीमाओं को छोड़ दो, भयरहित अनुयायी बन जाओ। सब कर्मों को छोड़कर सेवा करने वाले बन जाओ क्योंकि गुरु की सेवा गुरु की भक्ति के बराबर है। जो आत्मा अपने आपको चालाक समझकर गुरु को धोखा देने की कोशिश करती है, वह संसार में भटकती रहती है। इसलिए गुरु से कभी भी कुछ मत छिपाओ। जो गुरु से कुछ भी छिपाते हैं वो इस संसार में ही रह जाते हैं। हमेशा गुरु के वचनों को अपने हृदय में रखो। अपने आपको कभी भी मोह–माया में मत फँसने दो। हमेशा अपने दिल को गुरु के चरणों में रखो।

सुनो धर्मदास! नाम में दृढ़ रहो, क्योंकि यही एक आश्रय है। यह संसार बहुत ही उलझा हुआ है। काल ने अपने जाल बिछाए हुए हैं। सतगुरु के नाम की महिमा से ही कोई इसे समझ सकता है। अगर एक

परिवार के सब सदस्य नाम ले लेते हैं तो वहाँ काल–कराल नहीं आ सकता। उन सब आत्माओं को बुला लो, जो तुम्हारे घर में हैं।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! आप सारी आत्माओं के स्त्रोत हो। आपने मेरे सब दु:ख–दर्द दूर किए हैं। नारायण मेरा बेटा है, उसे भी शब्द की दौलत दो। यह सुनकर सतगुरु हँस दिए पर उन्होंने अपना भाव प्रगट नहीं होने दिया।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! जिनका तुम अच्छा अंत चाहते हो, उन सबको बुला लाओ। फिर धर्मदास ने सबको बुलाकर कहा–आओ और अपना सिर पति के चरणों में झुका दो। इस तरीके से तुम संसार में दोबारा जन्म नहीं लोगे। यह सुनकर सारी आत्माएं आई और उन्होंने सतगुरु के चरणों को छुआ, पर नारायण दास नहीं आया। धर्मदास ने सोचा मेरा समझदार बेटा क्यों नहीं आया?

नारायण दास द्वारा कबीर का तिरस्कार करना

धर्मदास ने अपने नौकर से कहा–मेरा बेटा नारायण दास कहाँ गया है? कोई जाकर उसकी तलाश करो ताकि वह भी गुरु के पास आ जाए, उसे खोजकर ले आओ। वह जरूर गीता पढ़ रहा होगा, जाकर उसे बताओ कि उसे बुलाया जा रहा है। यह सुनकर नौकर जल्दी से नारायण दास के पास चला गया।

नारायण दास ने कहा–मैं अपने पिता के पास नहीं जाऊँगा। वह बूढ़ा हो चुका है, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। हरि जैसा रचयिता कौन है? मैं उसे छोड़कर किसी और की भक्ति क्यों करूँ? वह क्षीण हो चुका है, इसलिए उसे वह जुलाहा पसंद है। मैं, मन से विष्णु को अपना गुरु मानता हूँ। नौकर वापिस धर्मदास के पास आकर कहने लगा कि नारायण दास नहीं आएगा। यह सुनकर धर्मदास अपने बेटे के पास गया।

धर्मदास ने नारायण दास से कहा–हे बेटे आओ। हमें घर चलना चाहिए, वहाँ सतपुरुष आए हुए हैं। प्रार्थना करते हुए उनके चरणों को छुओ ताकि तुम्हारे सारे कर्म कट जाएं। आओ और अपना अहम त्यागकर

सतगुरु को स्वीकार कर लो। यह मौका दोबारा नहीं आएगा। मैं, पूर्ण गुरु को पाकर यम के फंदे काट चुका हूँ। जागो मेरे बेटे! जल्दी आओ ताकि तुम्हें दोबारा जन्म ना लेना पड़े।

नारायण दास ने कहा–पिताजी आप पागल हो गए हो, जीवन के तीसरे पड़ाव पर आकर आपने एक जीवित गुरु को धारण किया है। राम के नाम के बराबर कोई भी भगवान नहीं, जिसकी सेवा ऋषियों–मुनियों ने भी की है। आपने विष्णु गुरु को छोड़कर बुढ़ापे में एक जीवित गुरु को धारण किया है।

धर्मदास ने नारायण दास को बाँह से पकड़कर उठाया और सतगुरु के पास ले आए। हे बेटे! सतगुरु के पैरों को छू लो, जो यम के फंदों से आजाद करवाने वाला है। नाम की शरण लेने वाली आत्मा को गर्भ का दर्द नहीं सहना पड़ता, वह संसार को छोड़कर सतलोक चला जाता है, जहाँ गुरु उसकी मदद करता है।

फिर नारायण दास अपना मुँह मोड़कर कहता है– यह जीवित ठग कहाँ से आया है? जिसने मेरे पिता को पागल कर दिया है। वेदों–शास्त्रों को गलत बताते हुए यह अपनी महिमा गा रहा है। जब तक यह जीवित ठग आपके साथ रहेगा तब तक मैं इस घर में नहीं रहूँगा। यह सुनकर धर्मदास बहुत ही निराश हो गया, कि अब उसका बेटा क्या करेगा? फिर आमिन ने नारायण दास को कई तरीकों से मनाने की कोशिश की, लेकिन उसने एक भी बात नहीं मानी। धर्मदास, गुरु के पास आकर प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान! मेरे बेटे को संशय क्यों है इसका कारण मुझे बताओ?

तब सतगुरु ने मुस्कुराते हुए कहा–कि धर्मदास! मैं, तुम्हें पहले भी बता चुका हूँ अब फिर बता रहा हूँ। ध्यान से सुनो, आश्चर्यचकित मत होवो। जब, सतपुरुष ने मुझे आदेश दिया कि ''हे ज्ञानी! संसार में जाकर यम के फंदे काट दो क्योंकि काल आत्माओं को बहुत दुःख दे रहा है। तभी ज्ञानी ने सिर झुकाया और अधर्मी निरंजन के पास गया। निरंजन ने ज्ञानी को देखा तो वह गुस्से से भर गया।''

निरंजन ने कहा–''मैंने बहुत सेवा करके यह देश प्राप्त किया है। तुम इस भव सागर में क्यों आए हो? तुम मुझे नहीं जानते मैं तुम्हें मार दूँगा।'' ज्ञानी ने कहा, ''सुनो अधर्मी काल! मैं तुमसे नहीं डरता। अगर तुम अभिमानी शब्दों में बात करोगे तो मैं तुम्हें मार दूँगा।''

तब निंरजन ने प्रार्थना की–'तुम संसार में आत्माओं को मुक्त करने जा रहे हो। जब सारी आत्माएं सतलोक चली जाएंगी तो मेरी भूख कैसे शान्त होगी? मैं रोज एक लाख जीवों को खाता हूँ। जैसे सतपुरुष ने मुझे यह मंडल दिया है उसी तरह आपको भी मुझे कुछ देना चाहिए। आप संसार में जाकर आत्माओं को काल के फंदे से आजाद करवा दोगे। पहले तीनों युगों में बहुत कम आत्माएं सतलोक गई, पर कलयुग में आप बहुत मेहनत से काम करोगे और अपना पंथ बनाकर आत्माओं को सतलोक पहुँचा दोगे।''

मैं, आपके नाम से बारह पंथ चलाकर उनके बारे में ढिंढोरा पीटूँगा। मेरा अंश, मृत्यु–अंधा सुकृत के घर में नारायण के नाम से अवतरित होगा।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा– फिर मैं उससे वायदा करके संसार में आया। इसलिए मृत्यु–अंधा तुम्हारे घर में नारायण बनकर आया है। नारायण, काल का अंश है। काल ने आत्माओं के लिए यह जाल फैलाया है। यह मेरे नाम पर रास्ता चलाएगा और आत्माओं को भटकाएगा। जो आत्माएं इसके रहस्य को नहीं जानती वे नर्क में जाएंगी।

बारह पंथों का वर्णन

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! मुझे उन बारह पंथों के रीति–रिवाजों के बारे में बताओ। मैं अंजान हूँ कुछ नहीं जानता। आप भगवान हो, सतपुरुष हो, मुझ पर दया करो। इतना कहकर धर्मदास उठा और उसने मेरे पैरों को छुआ।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! मैं तुम्हारे सारे भ्रम दूर करके तुम्हें बारह पंथों के नाम उनके रीति–रिवाज और रहस्यों के बारे में बताऊँगा।

(1) **मृत्यु अंधा दूत का पंथ**–धर्मदास! पहले रास्ते के बारे में सुनो। मृत्यु अंधा एक दूत है जो बंध नहीं सकता। तुम्हारे घर में अवतरित हुआ है। यह आत्माओं को बहुत सताएगा। मैं तुम्हें बार–बार सावधान करता हूँ।

(2) **तिमिर दूत का पंथ**–दूसरा तिमिर दूत, अहिर जाति में आएगा और सेवक कहलाएगा। यह तुम्हारे बहुत सारे धार्मिक ग्रन्थ चुरा लेगा और अलग से अपना पंथ बनाएगा।

(3) **अंधा अचेत दूत का पंथ**–अब मैं तुम्हें तीसरे पंथ के बारे में बता रहा हूँ। अंधा अचेत दूत तुम्हारे पास एक नाई के रूप में आएगा, जिसका नाम सुरत गोपाल होगा। यह आत्माओं को शब्दों के भ्रम में रखकर अपना अलग से अपना पंथ चलाएगा।

(4) **मनभंग दूत का पंथ**–चौथे पंथ को बनाने वाला मनभंग दूत होगा। यह इस पंथ को रचना की कहानी की मदद से साबित करेगा। यह इस संसार में कहेगा कि उसका पंथ सही है। यह आत्माओं को लोदी के बारे में बताएगा और नाम को ''पारस पत्थर'' कहेगा। यह बंसरी से आने वाली आवाज को सिमरन कहकर बताएगा।

(5) **ज्ञान भंगी दूत का पंथ**–हे धर्मदास! पाँचवें पंथ की बात सुनो, यह पंथ देवताओं और अधूरे साधुओं का पंथ है। यह आत्माओं को जीभ, आँखें, माथा, चोट का निशान और मस्सा दिखाते हुए धोखे में रखेगा। जो काम कोई भी करना चाहेगा यह उसे उसी काम में लगा देगा। इस तरह यह सब औरतों और आदमियों को बाँध देगा और दसों दिशाओं में फैला देगा।

(6) **मनमकरन्द दूत का पंथ**–छठे पंथ का नाम होगा कमाली पंथ। यह तब शुरू होगा जब मनमकरन्द दूत संसार में आएगा। यह मरे हुए शरीरों में निवास करेगा और मेरा बेटा बनकर पंथ को गलत तरीके से प्रकाशित करेगा। यह जीवों को झिलमिल प्रकाश दिखाएगा। इस तरह से यह बहुत सारी आत्माओं को धोखा देगा। जो दोनों आँखों से नहीं देख सकते, वे इसकी सुदंरता को कैसे आजमा सकते हैं? काल की इस सुंदरता को समझो और इसे अपने दिल में सच्चाई की तरह कायम रखो।

(7) **चितभंग दूत का पंथ**–सातवाँ दूत चितभंग होगा। जिसके बहुत सारे चेहरे, आवाजें और मन होंगे। यह 'दाउन' के नाम से पंथ चलाएगा। जो भी इसके शब्द बोलेंगे, यह उनसे गलत तरीके से सतपुरुष बुलावाएगा। यह पाँच तत्वों और तीन गुणों की बात करेगा। इस तरह से यह अपने पंथ की नींव रखेगा। शब्दों को बोलते हुए यह खुद ही ब्रह्मा बन जाएगा और कहेगा, कि राम ने वशिष्ठ को अपना गुरु क्यों बनाया? कृष्ण ने भी गुरु की सेवा की। ऋषियों, मुनियों का तो कहना ही क्या? नारद ने अपने गुरु को दोष दिया इसलिए उसने नर्कों में रहते हुए दुख पाया। यह दूत 'बिजक' का ज्ञान थोपेगा। कोई भी इस पंथ से कभी भी फायदा नहीं उठा पाएगा। इस पंथ पर चलकर आत्मा हमेशा रोएगी।

(8) **अकालभंग दूत का पंथ**–अब मैं तुम्हें आठवें पंथ अकालभंग दूत के बारे में बताऊँगा। यह कुछ कुरान और कुछ वेदों से चुराकर कहेगा कि यही पंथ आपको परम धाम तक ले जाएगा। यह कुछ गुण मुझसे लेकर एक किताब बनाएगा। यह इस पंथ को ब्रह्म का ज्ञान देते हुए इसकी नींव रखेगा और इसे चलाएगा। रीति–रिवाज में फंसी हुई आत्माएं इस तरफ आकर्षित हो जाएंगी।

(9) **बिश्म्बर दूत का पंथ**–हे धर्मदास! अब नौवें पंथ की कहानी सुनो–कि बिश्म्बर दूत किस तरह के खेल खेलेगा? इस पंथ का नाम 'राम–कबीर पंथ' होगा, इसमें अच्छे–बुरे गुण एक समान माने जाएंगे। यह कहेगा–पाप और पुन्न को एक समान समझो।

(10) **नक्तानैन दूत का पंथ**–अब मैं तुम्हें दसवें पंथ के बारे में बता रहा हूँ, जिसका नाम नक्तानैन है। यह 'सतनामी पंथ' चलाएगा, जिसमें यह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र चारों वर्णों की आत्माओं को इकट्ठा करेगा। हे भाई! ये आत्माएं सतगुरु के शब्द को नहीं पहचानेंगी और नर्क में चली जाएंगी। यह पंथ शरीर के बारे में बताएगा, कभी भी सतपुरुष के पंथ का पता नहीं देगा।

(11) **दुर्गदानी दूत का पंथ**–अब, मैं तुझे ग्यारहवें पंथ के बारे में बताता

हूँ। दुर्गदानी एक ना बाँधा जाने वाला दूत है। यह अपना पंथ 'जीव पंथ' के नाम से चलाएगा। यह आत्माओं को शरीर से रस्में अदा करने के लिए कहेगा। घमंडी आत्माएं इसके ज्ञान को सुनकर इससे प्यार करेंगी। इसी धोखे की वजह से आत्माएं कभी भी भव सागर को पार नहीं कर सकेंगी।

(12) हंसमुनी दूत का पंथ–अब, मैं तुझे बारहवें पंथ के प्रगट होने के बारे में बता रहा हूँ, जिसमें हंसमुनी दूत यह खेल खेलता है। सबसे पहले यह तुम्हारे घर में सेवक बनकर आएगा और तुम्हारी बहुत सेवा करेगा। फिर अपना खुद का पंथ चलाकर आत्माओं को फंसाएगा। यह अंश और अवतारों का विरोध करेगा। इस तरह यम अपना खेल रचेगा और अपने अंश से बारह पंथ बनाएगा। फिर ये जीव बार–बार इस संसार में आएंगे और जाएंगे।

काल के दूत आत्माओं को ज्ञान के बारे में बहुत कुछ बताएंगे और अपने आपको कबीर कहलवाएंगे। ये जिन्हें नामदान देंगे, उन्हीं को शरीर का ज्ञान देंगे। ये संसार में जब भी, जहाँ भी जन्म लेंगे अपने पंथ को फैलाएंगे। आत्माओं को चमत्कार दिखाकर, भटकाकर नर्क में ले जाएंगे। इस तरह बलवान काल आकर धोखा देगा। जो मेरे शब्दों के प्रकाश को स्वीकार कर लेंगे मैं उन्हें बचाऊँगा। हे मेरे अंश! आत्माओं को सच्चा शब्द देकर जगाओ। जो पूरे विश्वास के साथ नाम लेंगे, काल उन्हें नहीं सताएगा।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! आप सब आत्माओं के स्त्रोत हैं। आप मेरे सारे कष्ट दूर कर सकते हो। नारायण मेरा बेटा है। मैंने उसे अपने घर से निकाल दिया है। काल का अंश मेरे घर में जन्म लेकर आत्माओं के लिए दु:ख का कारण बन गया है। हे सतगुरु! आपकी जय हो, आपने मुझे काल का अंश दिखाकर उसकी पहचान करवा दी है। मैं अपने बेटे नारायण को छोड़कर आपके वचनों में विश्वास करता हूँ।

धर्मदास को नौत्तम अंश का दर्शन

धर्मदास ने अपना सिर झुकाकर प्रार्थना की–सब आत्माओं को खुशी देने वाले भगवान! मुझे यह बताओ कि किस तरह से आत्माएं जीवन

के इस भव सागर को पार कर सकती है? किस तरह से यह पंथ चलाया जा सकता है? आत्माएं किस तरह सतलोक जाएंगी? मेरा बेटा नारायण, काल है, मैंने उसे अपने घर से निकाल दिया है। हे भगवान! अब मेरा वंश कैसे चलेगा?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! शब्द के ज्ञान को समझो। मैं तुम्हें अपना मानकर यह सन्देश दे रहा हूँ। 'नौत्तम' सतपुरुष की अंश तुम्हारे घर में प्रगट होगी। 'शब्द' इस संसार में अवतरित होगा, जो चूड़ामणि के नाम से जाना जाएगा। सतपुरुष की अंश नौत्तम, काल के जंजालों को काट देगा और आत्माओं के संशय दूर करेगा। कलयुग में, जो आत्माएं दृढ़ विश्वास के साथ सच्चे नाम को अपने अंदर स्वीकार कर लेंगी, वे यम के फंदों से आजाद हो जाएंगी। ऐसी आत्माएं काल के सिर पर पैर रखकर जीवन के भव सागर से पार हो जाएंगी।

धर्मदास ने कहा–हे मेरे भगवान! मैं दोनो हाथ जोड़कर आपसे बेनती करता हूँ, लेकिन यह कहते हुए मेरी आत्मा काँपती है। कि 'शब्द' का अवतार सतपुरुष की अंश से होगा, लेकिन मेरा संशय उसके दर्शन करने से ही दूर होगा।

यह सुनकर भगवान बोले–हे मुक्तामनी, मेरे अंश! मेरे ऊपर आश्रित होकर सुकृत ने तेरे दर्शनों की चाहना की है। तू उसे दर्शन दे। फिर मुक्तामनि ने एक क्षण के लिए धर्मदास को दर्शन दिए। धर्मदास उनके पैरों को छूकर कहने लगा–आपने मेरे दिल की इच्छा पूरी की है। हे अच्छे सतपुरुष! आपके दर्शन पाकर मेरा दिल आनन्दित हो गया है। हे ज्ञानी भगवान! अब, ऐसी दया करो कि शब्द के अवतार इस संसार में प्रगट हों और यह पंथ चलता रहे।

चूड़ामणि की उत्पत्ति की कहानी

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास सुनो! दस महीने बाद, तुम्हारे घर में चूड़ामणि की आत्मा प्रगट होगी। वह आत्माओं की खातिर देह धारण करके आएगा। मैं, तुम्हें अपना जानकर यह समझा रहा हूँ कि तुम्हारा बेटा मेरा अंश होगा। धर्मदास ने बेनती की–कि हे प्रभु! मैंने अपनी इन्द्रियों को

वश में किया हुआ है। आपका अंश इस संसार में कैसे जन्म लेगा? फिर भगवान ने आदेश देते हुए यह शब्द कहे–हे धर्मदास! सम्बन्ध सिर्फ ध्यान के द्वारा स्थापित किए जाएं। मैं पारस नाम लिखता हूँ, जिससे चूड़ामणि का जन्म होगा। पान के पत्ते पर सतपुरुष का चिह्न लिख दो और वह अपनी पत्नी आमिन को दे दो।

धर्मदास के संशय दूर हो गए। धर्मदास ने आमिन को बुलाकर अपने प्यारे भगवान के चरणों में बिठाकर पान के पत्ते पर पारस नाम लिखकर उसे दे दिया, जिससे आमिन को गर्भ ठहर गया। गर्भ के दस महीने बाद अगहन के शुक्ल पक्ष के सातवें दिन उस अंश चूड़ामणि का जन्म हुआ। जब मुक्तायन प्रगट हुए तो खुशी में धर्मदास ने अपनी सारी सम्पत्ति लुटा दी, और उनके चरणों में झुककर कहा कि–''मैं भाग्यशाली हूँ, आप मेरे घर आए हो।''

जब कबीर साहब को पता चला कि मुक्तायन आ गए हैं तो वह तुरंत धर्मदास के घर गए और कहने लगे–आत्माओं को यम से मुक्त कराने वाला प्रगट हो चुका है। मुक्तायन के आने से आत्माएं मुक्त हो जाएंगी।

बयालिस वंश के राज्य की स्थापना

कुछ दिन बीत जाने के बाद, भगवान ने यह शब्द कहे–हे धर्मदास! चौके के लिए जरूरी सामान ले आओ। मैं बयालिस वंशों के राज्य की स्थापना करूँगा, ताकि आत्माओं का काम पूर्ण हो सके। फिर धर्मदास ने सामान लाकर ज्ञानी के पास रख दिया। भगवान ने पहले की तरह चौंका बनाया और जो चाहिए था, वह मंगवाया। चौंके को बहुत सारे तरीकों से सजाकर चूड़ामणि को वहाँ पर बिठाया गया।

कबीर साहब ने कहा–तुम सतपुरुष के आदेश से इस संसार में आए हो तुमने इन तरीकों को इस्तेमाल करते हुए आत्माओं को मुक्त कराना है। मैं तुम्हें बयालिस वंशों का राज्य देता हूँ। तुम्हारे द्वारा जीव अपना काम कर सकते हैं। बयालिस वंश तुमसे आत्माओं को मुक्त करवाएंगे। उनमें से साठ शाखाएं बाहर आएंगी, उनमें से फिर और शाखाएं आएंगी।

तुम्हारी दस हजार छोटी–छोटी शाखाएं होंगी जो वंशों के साथ चलती रहेंगी। तुम कर्णधार बन चुके हो। तुम्हारी साख भी वैसी ही होगी।

सुनो, सतपुरुष के अंश! तुम बहुत ऊँचे कुल से हो। तुम सतपुरुष का नौत्तम अंश हो, जो इस भव सागर रूपी संसार में प्रगट हुए हो। आत्माओं की बुरी हालत देखकर सतपुरुष ने तुम्हें भेजा है। जो वंशों के चिह्नों को प्राप्त कर लेगा वह हंस बन जाएगा।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–सुनो धर्मदास! अब मैं तुम्हें भंडार देता हूँ। जब चूड़ामणि पूर्ण हो जाएगा तो काल उसे देखकर हतोत्साहित हो जाएगा। यह सुनकर धर्मदास उठा और उसने चूड़ामणि को अपने पास बुलाया। तभी चूड़ामणि को 'नाम' दे दिया गया। जब उन दोनों ने गुरु के पैरों को छुआ तो काल डर से काँपने लगा। चूड़ामणि को देखकर सतगुरु अपने मन में बहुत खुश हुए। तुम्हारा वंश इस संसार को मुक्त कराने वाला बन गया है। यह आत्माओं को संसार के भव सागर से पार करवाएगा। बयालिस वंश होंगे। उनमें से पहले वाले में मेरा अंश होगा। वह वचन–वंश होगा, जो उसके बाद होंगे वे बिन्द से संसार में आएंगे, जैसे मनुष्य का बच्चा जन्म लेता है।

अवतारों की महानता

वे आत्माएं जिन्हें इन वंशों से परवाना मिल जाएगा, वे निडर होकर सतलोक चली जाएंगी। यम उनके रास्ते को नहीं रोक पाएगा। वह दिन रात कबीर का नाम ही दोहराएंगे। अवतारों के ज्ञान के बिना सब झूठ है। खाना नमक के बिना हमेशा ही स्वादहीन रहता है। खाने को ज्ञान और अवतारों के चिह्नों को स्वाद की तरह समझो। चौदह करोड़ तरह के ज्ञान हैं पर इन सबसे अलग 'सार–शब्द' है। आकाश में नौ लाख तरह के तारे हैं, उनको देखकर सभी खुश हो जाते हैं, लेकिन जब दिन में सूरज निकलता है तो वह तारों की रोशनी को ढक देता है। ज्ञान, नौ लाख सितारों और 'सार–शब्द', सूरज के समान हैं। लाखों तरह का ज्ञान आत्माओं को समझा सकता है, जबकि अवतारों के चिह्न आत्माओं को

सतलोक ले जाएंगे। जिस तरह जहाज समुन्द्र पार करता है, उसी तरह 'शब्द' समुन्द्र का जहाज है और तुम्हारा वंश उन्हें पार ले जाने वाला मल्लाह है।

हे धर्मदास! मैंने तुम्हें सतपुरुष के मूल के बारे में बता दिया है। जो भी इन वंशों को छोड़कर किसी अन्य पंथ पर चलेंगे, वे यम के रास्ते पर जाएंगे। जो आत्माएं वंशों के चिह्नों के बिना दिन–रात शब्द को गाएंगी। वे काल के जाल में फंस जाएंगी, इसके बाद मुझे दोष मत देना। जो शब्द को पहचानेंगे वे अपने कौवों वाले गुणों को त्यागकर हंस बन जाएंगे। जो आत्माएं उस शब्द को दृढ़ता के साथ स्वीकार कर लेंगी। काल उन्हें नहीं पकड़ पाएगा।

12. कलयुग में काल के छल

भविष्य के शुरुआत की कहानी

धर्मदास ने प्रार्थना की–हे प्रभु! मैं, अपने आपको आप पर कुर्बान करता हूँ। आपने मुझे यह बताया है कि वंश आत्माओं की खातिर संसार में आएंगे। जो 'वचन–वंश' को पहचान लेंगे, वह दुर्गदानी दूत से भी नहीं रोके जाएंगे। मैंने वंश को सतपुरुष के रूप में समझ लिया है, नौत्तम अंश इस संसार में प्रगट होकर आया है। मैंने उसे देखा और पूरी तरह से परखा है। फिर भी मेरे मन में एक संशय है, उसे दूर करो। मुझे उस परिपूर्ण ने इस संसार में भेजा था, लेकिन जब मैं, यहाँ आया तो काल ने मुझे फंसा लिया। आप मुझे सुकृत का अंश कहते हो फिर भी उस भयानक काल ने मुझे हरा दिया। अगर सहवंश के साथ भी ऐसा होगा तो इस संसार की आत्माएं नष्ट हो जाएंगी। दया करके, दु:खों को हटा दो, ताकि काल निरंजन वंशों को धोखा ना दे सके। हे भगवान! मैं और कुछ नहीं जानता, मेरी इज्जत आपके हाथ में है।

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! तुम्हारा संशय बिल्कुल सही है। भविष्य में निरंजन यही चाल चलेगा। जो कुछ भी होने वाला है, उसे सुनो।

सतयुग में सतपुरुष ने मुझे संसार में आने का आदेश दिया। जब मैं आया तो रास्ते में मुझे काल मिला। उसे हराकर मैंने उसके घमंड को दूर कर दिया। फिर उसने धोखा देकर तीन युग मुझसे ले लिए और कहा–''हे भाई! मैं तुमसे चौथा युग नहीं ले रहा हूँ।'' इसके बाद उससे वायदा करके मैं संसार में आ गया। मैंने पहले तीन युगों में अपने पंथ को प्रगट नहीं किया क्योंकि वे युग मैंने काल को दे दिए थे। पर चौथे युग, कलयुग में सतपुरुष ने मुझे फिर संसार में भेजा। कसाई काल ने मुझे रास्ते में रोककर बहुत तरीकों से बेनती की। मैं, वह कहानी और बारह पंथों का रहस्य तुम्हें बता चुका हूँ। काल ने मुझे धोखा देकर सिर्फ बारह पंथों के बारे में ही बताया।

पहले तीन युगों में उसने मुझे हराया और चौथे युग (कलयुग)

में बहुत जाल बिछाए। उसने कहा कि मैंने बारह पंथ रचे हैं पर उसने चार पंथ मुझसे छिपा लिए। जब मैंने चार गुरु बनाए तो उसने भी अपने अंशों को भेजा। जब मैंने चार मल्लाह बनाए तो निरंजन ने अपने धोखों को बढ़ा दिया। सतपुरुष ने मुझे ज्ञानी बना दिया। हे धर्मदास! मैं तुम्हें इस परमारथ के काम के बारे में बता रहा हूँ। जिनके दिल में 'नाम' मददगार के रूप में होगा सिर्फ वही इस खेल को समझ सकेंगे।

निरंजन द्वारा अपने चारों दूतों को पंथ चलाने का आदेश देना

निरंजन ने अपने चार दूत बनाकर उन्हें बहुत सारा ज्ञान दिया। उसने उनसे कहा–सुनो दूतो! तुम मेरे अंश हो। मैं जो कुछ भी तुम्हें कहूँ उस पर विश्वास करो और मेरे आदेश का पालन करो। हे भाई! संसार में कबीर के नाम से जाना जाने वाला कबीर, मेरा दुश्मन है। वह आत्माओं को सतलोक ले जाकर जीवन के भव सागर को खत्म कर देना चाहता है। छल कपट करके जीवों को भरमाकर मेरे पंथ से मुक्त कर रहा है। वह संसार को नष्ट करने पर तुला है, इसलिए मैंने तुम्हें उत्पन्न किया है। मेरी आज्ञा को मानते हुए तुम संसार में जाओ और कबीर के नाम पर अपने पंथ बना लो।

आत्माएं, संसार के भोग–विलासों में खोई हुई है। वे वही करेंगी जो मैं उन्हें कहूँगा। तुम संसार में चार पंथ बनाकर लोगों को दिखाओ। तुम चारों का नाम कबीर होना चाहिए और अपने मुँह से कबीर के अलावा कुछ मत बोलना। जब आत्माएं कबीर के नाम पर तुम्हारे पास आएंगी तो उनसे वे शब्द बोलो जो उनके मन को खुश कर दे। कलयुग में आत्माओं को कोई ज्ञान नहीं होगा। दूसरों को देखकर वह पंथ को मानने लग जाएंगी। तुम्हारे शब्द सुनकर वे खुश हो जाएंगी और बार–बार तुम्हारे पास आएंगी। जब वे तुम्हारे प्रति अपने विश्वास में दृढ़ हो जाएंगी तो उनके मन में कोई भी फर्क नहीं रहेगा। तब तुम अपना फंदा उनके ऊपर फैंकना, ध्यान से रहना, उन्हें अपना रहस्य मत बताना। जम्बू द्वीप, जहाँ पर कबीर का नाम फैला हुआ है वहाँ तुम अपना गढ़ बनाओगे।

जब कबीर, बंधो–गृह में जाकर धर्मदास को अपना बना लेगा,

वह बयालिस अवतारों का राज्य बनाएगा और उसका राज्य फैल जाएगा। मैं चौदह यमों की मदद से आत्माओं को रोकूँगा और बारह पंथों की सहायता से उन्हें धोखा दूँगा। फिर भी मेरे दिमाग में शंका है। इसलिए भाईयो! मैं तुम सबको भेज रहा हूँ। बयालिस अवतारों पर हमला करके उन्हें अपने वचनों में फंसा लो। यह सुनकर दूत खुश होकर कहने लगे–हे महान! हमने आपके आदेश को स्वीकार कर लिया है।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा–दूतों की बात सुनकर काल बहुत ही खुश हुआ। काल ने उन्हें बहुत सारी बातें समझाई। काल ने उन्हें आत्माओं को धोखा देने के लिए बहुत सारे मंत्र देते हुए कहा–भाईयो! संसार में जाओ। तुम चारों जाकर चार अलग–अलग तरह के रूप धारण करो, छोटे–बड़े किसी को मत छोड़ना। अपना जाल इस तरह से बिछाओ कि मेरा आहार मेरे हाथों से निकल ना जाए? उन्हें काल के शब्द, अमृत की धारा जैसे लग रहे थे। इसलिए ये चारों दूत संसार में प्रगट होंगे और चार पंथ बनाएंगे। इन दूतों को नायक और बारह पंथों का कर्ता–धर्ता समझो। चारों पंथ बारह पंथों का स्त्रोत हैं। ये 'वचन–वंश' के लिए दुःखदायी होंगे।

यह सुनकर धर्मदास बहुत घबरा गया और अपने हाथ जोड़कर बेनती करने लगा–कि हे भगवान! मेरी शंका और भी ज्यादा बढ़ गई है। मुझे उनके नाम बताओ, उनके चरित्र बताओ। मुझे उन दूतों के रूपों, चिह्नों और उनके असर के बारे में भी बताओ। उन्होंने इस संसार में कौन सा रूप धारण किया है? वे आत्माओं को किस तरह फसाएंगे और किस देश में प्रगट होंगे?

कबीर साहब ने कहा–धर्मदास! मैं तुम्हें चारों दूतों के रहस्य के बारे में बता रहा हूँ।

चारों दूतों का वर्णन

सबसे पहले उनके नाम सुनो–रंभ, कुरंभ, जय और विजय।

रंभ दूत का वर्णन : रंभ दूत, अपने रहने का स्थान कालिंजर

गढ़ को बनाएगा। यह भगवान का भक्त कहलाएगा। जो आत्माएं दिल से सच्ची होंगी, वह यम के विशाक्त जाल से बचा ली जाएंगी। रंभ, यम बहुत ही विशाल और भयानक है। यह हमेशा तुम्हारा और मेरा विरोध ही करेगा। इसके अलावा आरती, नाम, सतलोक, शास्त्रों और नाम के ज्ञान का भी विरोध करेगा। यह गंभीरता से काल की रामायण को उचारेगा। यह मेरे शब्द पर बहस करेगा। बहुत सारे इसके जाल में फंस जाएंगे।

मेरा नाम लेते हुए यह चारों दिशाओं में अपने पंथ को फैलाएगा। यह अपने आपको कबीर कहेगा और पाँच तत्वों से बना हुआ बताएगा। यह कहेगा कि आत्माएं सतपुरुष हैं और आत्माओं को धोखा देते हुए यह सतपुरुष के विरोध में भी बोलेगा। यह कहेगा कि कबीर, आत्माओं का भगवान है और बनाने वाले को भी कबीर ही कहेगा। लेकिन रचयिता काल है जो आत्माओं को दुःख देता है उसी तरह से यह भी आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगा। जो रीति–रिवाज के अनुसार चलेंगे यह उन्हें सतपुरुष कहेगा और सतपुरुष को छिपाते हुए यह खुद अपने आपको प्रगट करेगा।

कुरंभ दूत का वर्णन : अब मैं, तुम्हें कुरंभ दूत के गुणों के बारे में बताऊँगा। यह बिहार के दक्षिणी हिस्से मगध में प्रगट होगा। इसका नाम 'धनीदास' होगा। कुरंभ दूत बहुत से जाल बिछाएगा और अपने ज्ञान से आत्माओं को भटकाएगा। जिनके पास साधारण ज्ञान होगा यह उनको अपने धोखे से नष्ट कर देगा।

कबीर साहब ने कहा–यह लोगों को सूरज और चंद्रमा की भक्ति में लगाएगा, यह पाँच तत्वों को सबसे जरूरी बताएगा। मूर्ख आत्मा इसके धोखे को नहीं समझ पाएंगी। यह ज्योतिष शास्त्र के पंथ को फैलाएगा और आत्माओं से भगवान को भुलाकर उन्हें दिखाई देने वाले ग्रहों के काबू में करेगा। यह हवा और पानी का ज्ञान देते हुए हवा का नाम बताएगा। यह आरती और चौंका के बहुत सारे अर्थ बताएगा।

जब यह किसी को अपना शिष्य बनाएगा तो बहुत कुछ विशेष करेगा। यह शरीर के हर भाग की रेखाओं को पढ़ेगा। यह सिर से पैर तक परख करेगा और आत्माओं को कर्मों के जाल में फंसाकर भटकाएगा।

आत्माओं को परखने के बाद यह उन्हें भाले पर लटकाकर खा जाएगा। यह जीवों से सोना और औरतें दान करवाकर उन्हें बरबाद कर देगा। कर्मों में फंसाकर यम का सेवक बना देगा। पिच्चासी पवन काल की हैं। पान के पत्ते पर पवन का नाम लिखकर यह आत्माओं को इन्हें खाने के लिए कहेगा। पानी और पवन की बात करते हुए यह पंथ को फैलाएगा। पवन के नाम से यह आरती की रस्म करेगा। पिच्चासी पवनों को देखते हुए यह बहुत ध्यान से आरती और चौंके की रस्म करेगा।

हे भाई! यह औरत या आदमी किसी का भी शरीर हो उस पर मस्से, तिल देखेगा। यह सिर से पैर तक सभी रेखाओं को पढ़ेगा। इन बुरे तरीकों से काल आत्माओं में भ्रम पैदा करेगा। भ्रम के द्वारा काल आत्माओं को धोखा देकर उनकी बहुत बुरी हालत कर देगा। काल जो भी बोलेगा वह झूठ होगा। यह समय को साठ भागों में बाँटकर और बारह महीने बनाकर शरीर में भ्रम पैदा करेगा। यह नाम का सिमरन देने का नाटक करेगा।

यह यम पाँच तत्व, इक्कीस प्रकृतियाँ, तीन गुण और चौदह यमों को भगवान कहेगा। इस यम ने पाँच तत्वों का पिंजरा बनाया हुआ है, जिसमें यह आत्माओं को फंसा लेगा। शरीर में रहते हुए अगर कोई अपना ध्यान इन तत्वों पर लगाता है तो शरीर छोड़ने के बाद वह वहीं जाएगा जहाँ उसकी आशा है। यह जीवों से नाम की भक्ति या ध्यान छुड़वाकर शारीरिक चीजों में फंसाकर रखेगा।

हे धर्मदास! मैं और क्या कह सकता हूँ। यह कुरंभ दूत बहुत ही क्रूरतापूर्वक व्यवहार करेगा। जो आत्माएं मुझे समझकर मुझमें मिल जाएंगी वही इसकी धोखेबाज प्रकृति को समझ पाएंगी। पाँच तत्व काल का हिस्सा हैं। जो जीव इसके पीछे लगेंगे वे बरबाद हो जाएंगे। धर्मदास! तुमने कुरंभ की चालों को सुन लिया है ये आत्माओं को पकड़ने के लिए बहुत सारे जाल बनाएगा। तत्वों का पंथ फैलाते हुए यह अनगिनत आत्माओं को खा जाएगा। कबीर के नाम पर यह संसार में अपना पंथ बनाएगा। जो आत्माएं भ्रम के काबू में होंगी वे काल के मुँह में चली जाएंगी।

जय दूत का वर्णन : यम का यह दूत बहुत ही भयानक है। यह इतना बुरा है कि अपने आपको मूल कहेगा। यह कुरकुट गाँव में पैदा होकर बंधोगढ़ में रहेगा। यह चमार परिवार में जन्म लेकर ऊँची जातियों का विरोध करेगा। यह दूत अपने आपको भगवान का सेवक कहेगा। इसके बेटे का नाम गणपत होगा। पिता और पुत्र दोनों बहुत दु:खदायी होंगे, तुम्हारे परिवार पर आक्रमण करेंगे। यह कहेगा कि मूल मेरे पास है।

हे धर्मदास! यह धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान देगा। ज्ञानी और सतपुरुष की बातचीत को बदल देगा। यह कहेगा–मुझे सतपुरुष ने 'मूल–मंत्र' दिया है। यह काल बहुत विशालकाय होगा और अवतारों में बहुत सारे भ्रम पैदा करेगा। यह अवतारों पर अपनी शिक्षा थोपेगा और उन्हें अपनी शिक्षा पर विश्वास करवाएगा। यह सच्चे नाम को गुप्त रखेगा और जड़–बीज को ही शरीर का कर्म कहेगा।

पहले यह अपने मंत्र को छुपाकर रखेगा, पर जब इसके अनुयायी दृढ़ हो जाएंगे तब यह उन्हें इसके बारे में बताएगा। पहले यह धर्म ग्रन्थों के ज्ञान के बारे में समझाएगा, बाद में आत्माओं को काल में दृढ़ कर देगा। यह कहेगा कि नारी देह पारस है। फिर नारी को अपने पास रख लेगा। यह अपने अनुयायियों को झँग नाम की भक्ति करने को कहेगा।

काल ने झांझरी द्वीप बनाया है, झँग और हँग काल की ही शाखाएं हैं। यह अधर्मी काल उन्हें अविनाशी कहेगा, और बहुत सारे तरीकों से रीति–रिवाज करने के लिए कहेगा। इसके बहुत सारे कर्णधार होंगे। यह सब कुछ काल के नाम से रचेगा।

हे धर्मदास! ध्यान से सुनो। यह हर जगह रीति–रिवाजों की स्थापना करके मेरे नाम का अपमान करेगा। इसकी आत्माएं किसी को भी अपने बराबर नहीं समझेंगी। ज्ञानी ही इस बात को समझेंगे।

जिसके पास मेरे ज्ञान की ज्योति का दीपक है, वह अपने आप ही यमराज को पहचान जाएगा। ऐसी आत्मा काल द्वारा बनाए गए रसों–कसों को छोड़कर जल्दी से अपना काम पूरा कर लेगी। जो अपना ध्यान

मेरे शब्द में लगाएंगे वे अंश को प्राप्त करेंगे और छिलके को छोड़ देंगे।

हे धर्मदास! यम के धोखा देने वाले तरीकों को समझो। मैं, आत्माओं को चिह्न दे दूँगा ताकि यम उन्हें रोक ना सके। आत्माएं अज्ञानता के वश होकर काल के चिह्नों को नहीं पहचानती, लेकिन जब तक कोई वंशों से जुड़ा रहेगा, काल दीन रहेगा। जो काल को याद करेंगे, काल उनके अंदर प्रगट हो जाएगा। काल, वंशों को नष्ट करने की कोशिश करेगा, पर वंश मेरे तरीकों से जागृत किए जाएंगे। नाद के पुत्र को इन सब चीजों से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, यह मेरे शब्द को दृढ़ता से स्वीकार करेगा। शब्द की मदद से उसका ज्ञान, समझ, गुण और जीने का तरीका प्रकाशमान होगा। अधर्मी काल उसे नहीं खा सकेगा।

विजय दूत का वर्णन : अब विजय दूत के गुणों के बारे में सुनो। यह बुदेलखंड में पैदा होगा और अपना नाम ज्ञानी रखेगा। यह रास और बांसुरी बजाकर आत्माओं को 'साखी भाव' में दृढ़ करेगा। यह अपने साथ बहुत सी सखियों को रखकर अपने आपको दूसरा कृष्ण कहेगा। आत्माओं को ज्ञान नहीं इसलिए वे इसके धोखे में आ जाएंगी। यह कहेगा कि आँखों के सामने मन की छाया है और आकाश नाक के ऊपर है। आत्माएं, यम के इस धुंध भरे धोखे में फंस जाएंगी। यह क्षण भर के लिए भी स्थिर नहीं होगा। आत्माएं इसे बाहरी आँखों से देखने की कोशिश करेंगी। काल, मन की छाया को मुक्ति का साधन बताएगा। यह आत्माओं से सच्चा नाम छुड़वा देगा ताकि आत्माएं काल के मुँह में चली जाएं।

इन दूतों से बचे रहने के तरीके

मैं, निश्चित तौर पर ज्ञान का दीपक जलाऊँगा ताकि काल आत्माओं को नष्ट ना कर सके। जिस तरह मैंने इन्द्रमति को सावधान किया, वह सावधान हो गई, काल उसे नहीं ले जा सका।

भविष्य की वाणी : अलग–अलग विषय

हे भाई! मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि भविष्य में क्या होगा? जब तक तुम अपने शरीर में रहोगे काल प्रगट नहीं होगा। जब तुम अपना शरीर

छोड़ोगे तब काल आएगा। काल तुम्हें खुश करेगा और अपने धोखे से तुम्हारे परिवार को तोड़ेगा। परिवार में बहुत सारे कर्णधार होंगे। मूल और बिंद के इस्तेमाल से काल परिवार को दूषित कर देगा। जब 'हँग दूत' तुम्हारे परिवार में आकर रहेगा तो तुम्हारे परिवार को बहुत बड़े धोखे का सामना करना पड़ेगा। 'हँग दूत' बहुत ताकतवर होकर तुम्हारे परिवार के सदस्यों को आपस में लड़वा देगा। वे अपनी प्रकृति की वजह से 'हँग दूत' को नहीं छोड़ेंगे। वह बार–बार उन्हें परेशान करेगा। वह खुद अपने ही अंश को मार देगा, यह देखकर लड़ाई और भी बढ़ जाएगी। काल इस लड़ाई को नहीं देख पाएगा इसलिए वह इस परिवार से बाहर निकलने का तरीका ढूँढेगा। तुम्हारा परिवार बहुत सारे अनुभवों की बात करते हुए नाद पुत्र की आलोचना करेगा।

जो कर्णधार बनेंगे वे अभिमानी हो जाएंगे अपने स्वार्थ की वजह से वे भगवान को नहीं पहचानेंगे। बहुत–सी आत्माओं को गलत रास्ते पर ले जाएंगे। इसलिए मैं तुम्हें समझा रहा हूँ कि तुम्हें अपने परिवार को सावधान कर देना चाहिए। उन्हें प्यार से प्रगट हुए नाद–पुत्र से मिलकर रहना चाहिए। हे धर्मदास! तुम मेरे नाद–पुत्र हो। इस मन को यम मानो। मेरा बेटा कमाल मरे हुओं को जीवित करता है। मुझे अपना पिता मानते हुए उसे अभिमान है इसी वजह से मैंने तुम्हें यह अधिकार दिया है। मैं, प्यार और भक्ति का दोस्त हूँ। मुझे घोड़े और हाथी नहीं चाहिए। जो आत्माएं मुझे प्यार और भक्ति से याद करेंगी वे मेरे हृदय में निवास करेंगी। अगर अहंकार मुझे खुश कर देता तो मैं काजी और पंडितों को यह अधिकार दे देता। मैंने, तुम्हें विनम्र होकर अपनी शरण में आते हुए देखा इसलिए तुम्हें अधिकारी बनाया है।

तुम यह शिक्षा नाद–पुत्र को दो ताकि पंथ चमक सके। तुम्हारे परिवार में बहुत अहंकार होगा कि हम धर्मदास के बेटे हैं। जहाँ पर अभिमान होता है मैं वहाँ नहीं रहता, वहाँ काल रहता है।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! मैं आपके वश में हूँ। आपका सेवक हूँ। आपके आदेशों को नहीं छोड़ूँगा। हे स्वामी! मैं नाद–पुत्र को

उत्तराधिकारी बना दूँगा पर मेरे परिवार की भी मुक्ति होनी चाहिए।

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! तुम भ्रम को हटा दो। तुम्हारे परिवार की मुक्ति होगी। जो नाम की भक्ति को दृढ़ता से स्वीकार करेंगे वे मुक्त हो जाएंगे। अगर वे मेरे शब्द मानेंगे तो मैं उन बयालिस अवतारों को मुक्त कर दूँगा। जो मेरे शब्द को स्वीकार करेंगे वे परिवार में प्रिय होंगे क्योंकि मेरे शब्द के बिना कोई भी पार नहीं हो सकता।

हे धर्मदास! तुम्हारा परिवार अज्ञानी हो जाएगा और अंश के चिह्नों को नहीं पहचानेगा। तुम्हारे पास सोलहवीं पीढ़ी का बीज होगा। वह बीज भी अवतारों को भूल जाएगा। तुम्हारा बीज इतना अज्ञानी हो जाएगा कि वे हमारा पंथ छोड़कर टकसारी के पंथ पर चलेंगे। वे चौंका इस तरह से करेंगे कि कई आत्माएं चौरासी लाख योनियों के घेरे में वापिस चली जाएंगी। अपने अभिमान की वजह से वे नाद के बेटे से लड़ेंगी।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! अब मेरी शंका बढ़ रही है। पहले आपने कहा कि मैंने बयालिस अवतारों को अपनी सुरक्षा में रखा है। अब आप कहते हो कि वे काल के काबू में आ जाएंगे। ये दोनों चीजें कैसे हो सकती हैं?

नाद वंश की बड़ाई

धर्मदास बचकर रहो। मैं तुम्हें शब्द अवतार के बारे में समझा रहा हूँ। काल जब भी एकदम से छीनने के लिए नीचे उड़ान भरेगा, मैं वहाँ मदद के लिए आऊँगा। फिर मैं नाद की आत्मा को प्रगट करते हुए संसार को भक्ति में दृढ़ कर दूँगा। नाद का बेटा मेरा अंश है उसके द्वारा पंथ महिमामयी होगा। शब्द अवतार दोबारा होश में आ जाएगा, पर तुम्हारा बीज उससे प्यार नहीं करेगा। तुम्हारा बीज उस पर विश्वास ना करते हुए शब्द के साथ नहीं जुड़ेगा। नाद के बेटे में शब्द की इच्छा होगी, जबकि तुम्हारा बीज उसे भूल जाएगा।

हे धर्मदास! चारों युगों के इतिहास को देख लो। पंथ हमेशा

शब्द के द्वारा ही प्रगट हुआ है। शब्द के बिना पंथ नहीं चल सकता। धर्मदास! तुम मेरे नाद–पुत्र हो। इसलिए मैंने तुम्हें मुक्ति की डोरी दे दी है। इस तरह से मैं बयालिस अवतारों को मुक्त करवा दूँगा। जब वे गिरेंगे तो मैं उन्हें बचाने के लिए आऊँगा। जो बीज, नाद–वचन को दृढ़ता से स्वीकार नहीं करेगा, काल उसे पकड़ लेगा। वे अवतार जो शब्द में विश्वास करेंगे वे खुद भी मुक्त होंगे और अन्य आत्माओं को भी मुक्त करेंगे।

गुरु की महिमा

किसी को भी गुरु से बड़ा नहीं मानना चाहिए। गुरु को ही सबसे बड़ा और महान मानना चाहिए। तुम्हारा बीज गुरु के बिना इस संसार के भव सागर को पार करने की कोशिश करेगा। वह गुरु के बिना संसार को शिक्षा देगा। इस तरह खुद डूबेगा और संसार को भी डुबोएगा। गुरु के बिना मुक्ति नहीं है, जो गुरु कर लेते हैं वह भव सागर पार कर जाते हैं। तुम्हारा बीज बलपूर्वक अवतारों से रिश्ता जोड़ेगा, इसलिए काल उसे खा जाएगा। जब संसार, परिवारों और अवतारों में फंस जाएगा तो अवतार भी धोखा खा सकते हैं। फिर काल आकर आत्माओं को खाएगा और उन्हें विभिन्न रूपों में परिवर्तित करके फिर से संसार में भेजेगा। मेरा नाद आकर पुकारेगा, जिसे देखकर काल भाग जाएगा। इसलिए धर्मदास, मैं तुम्हें आगाह करता हूँ। मैंने तुम्हें शब्द–अवतार के बारे में बहुत सारे तरीकों से बताया है। जो काल के धोखों से बचकर निकलना चाहते हैं उनमें हमेशा नाद के अवतारों के लिए प्यार होना चाहिए।

बीज, जो नाद के अवतारों का सहारा छोड़ देगा वह यम द्वारा फंसा लिया जाएगा। दूत बहुत से जाल बिछाएंगे, जिन्हें देखकर आत्माएं आकर्षित हो जाएगी। जो आत्माएं नाद के अंश को, शब्द–अवतार के चिह्नों को और सच्चे शब्द को पहचान जाएंगी, काल उन्हें नहीं रोक सकता। धर्मदास मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो और स्वीकार करो। जाओ और आत्माओं को बताओ कि वचन–वंश आत्माओं को मुक्त कराने के लिए आया है। उन्हें वचन–वंश (नाद) को नहीं छोड़ना चाहिए और उनमें नाद के

लिए हमेशा प्यार होना चाहिए। वे रिश्तों और परिवार के झगड़ों में तरफदारी ना करे।

धर्मदास ने उठकर बेनती की–हे भगवान! आपने नाद की महानता के बारे में बहुत कुछ बोला है और वचन–वंश को उससे नीचे ब्यान किया है। मुझे वचन–वंश की उत्पत्ति का कारण बताओ? अगर नाद का अवतार संसार को जगाएगा तो वचन–वंश कब काम करेगा?

ये शब्द सुनकर सतगुरु हँसने लगे और उन्होंने धर्मदास को इस तरह से बताया क्योंकि गार्गिन ने नाद और शब्द को स्वीकार नहीं किया। इसलिए मैंने बीज की रचना की। बिन्द एक नाम है। वचन–वंश सतपुरुष का अंश है। उससे मिलने के बाद आत्माएं आजाद हो जाएंगी। जब नाद और बीज दोनों इकट्ठे आएंगे तभी काल का मुँह बंद होगा। नाद के बिना बिन्द विकसित नहीं हो सकता पर बिन्द के बिना नाद मुक्त करवा सकता है।

हे भाई! कलयुग में काल कठिन है। अभिमान के रूप में वह सबको खा जाएगा। अभिमान त्यागने के बाद ही नाद से मिलाप होगा जबकि बिन्द अभिमान से भरा हुआ है। इसलिए सतपुरुष ने यह अंकुश रचकर नाद और बिन्द को दो अलग–अलग रूप दिए हैं। जो आत्माएं अपने अभिमान को त्यागकर सच्चे शब्द को याद करेंगी, वे हंस बन जाएंगी। चाहे कोई नाद है या बिन्द, अहंकार का गुण किसी के लिए भी ठीक नहीं। जिनमें अहंकार है, वे संसार के भव सागर में गोते खांएगे और पूरी तरह से काल के पिंजरे में फंस जाएंगे। जब वंशों में अहंकार आएगा तो नाद और बिन्द में फर्क आ जाएगा। अगर वंशों का विरोध होगा तो सब काल के काबू में होकर उसके रास्ते पर चलने लगेंगे।

धर्मदास ने कहा–भगवान! मेरी एक प्रार्थना सुनो। आपकी दया से जीव मुक्त हो जाएंगे। आपने मुझे नाद और बिन्द का रूप और उनकी मुक्ति का रहस्य बता दिया है। सब आत्माएं आपके लोक में चली जाएंगी फिर नारायण दास क्या करेगा? वह मेरा बेटा कहलाता है इसलिए मेरा मन

उसके लिए चिन्तित है। संसार समुन्द्र की सब आत्माएं भव सागर को पार कर लेंगी, लेकिन नारायण दास काल के मुँह में जाएगा, यह अच्छी बात नहीं है। हे स्वामी! मेरी प्रार्थना सुनो और उसे मुक्त करो।

कबीर साहब ने कहा–मैंने तुम्हें बार–बार बताया है पर तुम्हारा हृदय इस बात को नहीं मानता। अब मैंने तुम्हारी बुद्धि को पहचान लिया है। तुम जानकर भी अंजान बनते हो। तुमने सतपुरुष के आदेशों को मिटाना शुरू कर दिया है। जब कोई ज्ञान को भूल जाता है तो मोह और भ्रम जाग उठते हैं।

जब मोह का अंधेरा हमारे दिल पर छा जाता है तो हम ज्ञान को भूल जाते हैं। विश्वास के बिना भक्ति नहीं हो सकती और भक्ति के बिना कोई भी आत्मा पार नहीं हो सकती। तुम फिर से काल के जाल में फंस रहे हो, इसलिए तुम्हारे हृदय में बेटे के लिए मोह जाग उठा है। जबकि तुमने यह देख लिया है कि नारायण दास पूरी तरह से काल के काबू में है फिर भी तुम जिद्दी हो गए हो। तुमने मेरा कोई भी शब्द नहीं सुना।

हे धर्मदास! तुमने जो कुछ अभी मुझसे कहा, उसके बारे में अपने दिल में विचार नहीं किया। तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। गुरु पर विश्वास रखो। जब कोई गुरु से मिलता है तो वह गुरु को अपना सब कुछ दे देता है तभी वह भाग्यशाली सच्चाई की सीढ़ियों पर चढ़ता है। अगर कोई मोह को पकड़ लेता है तो भ्रम जाग जाता है। तुम सतपुरुष का अंश हो और इस संसार में आत्माओं को जगाने के लिए आए हो। अगर तुम संसार की चीजों को देखकर उनकी तरफ आकर्षित हो जाओगे तो आत्माओं के लिए कहाँ जगह है? यह बिल्कुल सही दिखाता है कि धर्मदास तुम्हारा परिवार भी यही करेगा। वे हमेशा मोह की आग में जलते रहेंगे।

पुत्र के बिना नाम और पत्नी के बिना घर नहीं चलता, यह सब काल की चालें हैं। इसमें ही परिवार के सारे सदस्य भूल जाते हैं और उन्हें सच्चे नाम का रास्ता नहीं मिल पाता। यमदूत यह सब देखकर खुश हो जाते हैं। फिर बलवान होकर जीवों को पकड़कर नर्क में फैंक देते हैं। आत्माएं

काल के जाल में फंसकर काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार में सब कुछ भूल जाती हैं।

उनके लक्षण सुनो जिनमें सतनाम होगा

जिनमें सतनाम होगा वे काल से विचलित नहीं होंगे। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नहीं होगा। वे सारे मोह और इच्छाएं त्यागकर सतगुरु के शब्द को अपने हृदय में रखेंगे। जिस तरह साँप मणि को अपने सिर पर रखता है, उसी तरह से शिष्य को भी गुरु के आदेश अपने सिर पर रखने चाहिए। जो आत्मा बेटे और पत्नी को भूलकर, सारे रसों–कसों को त्यागकर सतपुरुष के चरण छूती है वह हंस बन जाती है।

हे धर्मदास! कोई बहादुर ही गुरु के शान्ति देने वाले शब्दों का पालन करता है। ऐसी आत्मा सतलोक चली जाती हैं,उसकी मुक्ति दूर नहीं होती। कर्मों और भ्रमों में फंसाने वाले जाल को छोड़ दो और गुरु के चरणों से प्यार करो। गुरुमुख के शब्द में विश्वास रखकर शरीर को राख समझो।

ये शब्द सुनकर धर्मदास को बहुत शर्म आई और मन में पछतावा हुआ। वह सतगुरु के चरणों में गिर गया और बोला–हे भगवान! मेरी सहायता करो। मैं अज्ञानी हूँ। मुझे क्षमा कर दो। मैंने आपके शब्दों पर ध्यान ना देकर बार–बार कुछ ना कुछ माँगा। आपका नाम पापियों को मुक्त करने वाला है, इसलिए मेरे अवगुणों पर ध्यान मत दो।

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! तुम सतपुरुष की अंश हो। नारायण दास और अपने परिवार को छोड़ दो। 'शब्द' को पकड़कर अपने दिल में धारण करो। तुम्हारे और मेरे बीच में कोई फर्क नहीं है। तुम इस संसार में आत्माओं की खातिर आए हो और इस भव सागर में पंथ की स्थापना करोगे।

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! आप सुख–सागर के दाता हो। आपने मुझे सच्चा सेवक बनाया है। आपने मुझे अपना बनाकर पक्का ज्ञान

दे दिया है। आपके चरणों को पकड़कर अब मुझे संसार से लगाव नहीं है। अगर मैं, आपको छोड़कर किसी और की इच्छा रखूँ तो नर्क में जाऊँ।

सतगुरु ने कहा–हे धर्मदास! तुम धन्य हो तुमने मेरे शब्दों को मान लिया है, अपने बेटे को छोड़ दिया है। जब सेवक के दिल का शीशा साफ हो जाता है तभी वह गुरु के स्वरूप को अपने दिल में रखता है। तब वह काल के सब फंदों से मुक्त हो जाता है। जब तक किसी के अंदर इच्छाएं होती हैं तब तक वह सेवक गुरु का दर्शन नहीं कर सकता। जब कोई सेवक अपने ध्यान को गुरु के चरणों में लगा देता है तो वह मोह से आजाद हो जाता है और ज्ञान में जाग जाता है। जब दिल में ज्ञान का दीपक जल जाता है तो सारे मोह और भ्रम नष्ट हो जाते हैं। जब वह दोबारा सतगुरु के पास आता है, तो वह इस तरह है जैसे एक बूँद अपने–आपको सागर में लीन कर लेती है।

कबीर साहब कहते हैं–जब बूँद अपने आपको समुन्द्र में मिला लेती है तब सारी चिन्ताएं खत्म हो जाती हैं। हे धर्मदास! यह गुरु चरणों की महिमा है। इसलिए सारे घमंड और भ्रम त्यागकर गुरु के चरणों से प्यार करो। गुरु के बिना सेवक सदा ही दुःखी रहता है। अब मैं, तुम्हें जो बता रहा हूँ, उसे जानने के बाद तुम्हारे सब भ्रम दूर हो जाएंगे। नारायण दास तुम पर भरोसा नहीं करेगा और वह वही करेगा जो उसके मन में आएगा, संसार में उसका पंथ भी चलेगा। जिस पंथ को हमारा अंश चलाएगा, वह उससे झगड़ा करेगा। वह हमारे पंथ की प्रसिद्धि को सहन नहीं कर सकेगा। इसलिए अपने पंथ को हमारे पंथ से बड़ा कहेगा।

वह साधु–सन्तों के साथ अभिमान से बात करेगा और नाद के बेटों पर भरोसा नहीं करेगा। वह जब तक इस तरह करेगा, सच्चे पंथ को नहीं पा सकेगा। वचन–वंश और नाद कर्णधर हैं। जब वह उनसे मिलेगा तभी मुक्त होगा। वह जब अहंकार, नाम और प्रसिद्धि को छोड़कर सच्चे शब्द को दिल में धारण करेगा, तभी मुझे पसंद आएगा। जो अपनी जाति को त्यागकर माया अपने पास नहीं आने देगा वही वचन–वंश का अंश कहलाएगा। हे धर्मदास! गुरु में विश्वास के बिना आत्मा पार नहीं हो सकती।

गुरु जैसा कोई दाता नहीं है। इसलिए तुम्हें अपना दिल गुरु के चरणों में लगाना चाहिए।

जो गुरु और सतपुरुष में कोई फर्क नहीं समझता वह सच्ची पहचान पा लेता है, उसके लिए काल के दर्द समाप्त हो जाते हैं। हे धर्मदास! सतगुरु के गुणों को देखो, वह कितनी दृढ़ता से विश्वास करता है। उस जीव को देखो जो रीति–रिवाजों में उलझा हुआ, खुद ही मिट्टी लाकर रचयिता की मूर्ति बनाता है। उस पर चावल और फूल अर्पण करता है। प्यार और विश्वास के साथ उस मूर्ति को रचयिता मानकर उसकी पूजा करता है। अपने विश्वास को टूटने नहीं देता क्योंकि इस धोखे में जो प्यार है वही प्यार उसके लिए जागृत हो जाता है।

मैंने, तुम्हें गुरु का नाम बताया है। गुरु और सतपुरुष में कोई फर्क नहीं है। अगर आत्माओं को गुरु पर विश्वास नहीं होगा तो वह काल के काबू में रहेंगी। जब किसी को गुरु के शरीर में विश्वास नहीं होता तो शून्य में ध्यान करके वह अपने–आपको भटका देता है। जो पूरी तरह से गुरु पर निर्भर रहते हैं, उनकी मुक्ति टल नहीं सकती। जिन्हें गुरु पर पूरा भरोसा है, वह कहीं और ध्यान नहीं लगाते। आत्मा का इस तरीके से जीना अमूल्य है। ऐसी आत्माएं अपने शरीर को प्यार के रंग में रंग लेती हैं।

गुरु के ज्ञान का दीपक दिल में जलाते हुए मोह के अंधकार को हटा दो। गुरु के चरणों की धूल की महिमा से पाप निश्चित तौर पर खत्म हो जाएंगे। यह संसार बहुत ही गहरा है। नाम को पूरी दृढ़ता और प्यार के साथ स्वीकार करो।

गुरु और शिष्य की रहनी

धर्मदास ने यह बेनती की–कि आप मेरे भगवान हो और मैं आपका सेवक हूँ। भगवान मेरी गलतियों को माफ कर दो और मुझ पर दया करो। मुझे गुरु और शिष्य की रहनी के बारे में बताओ। सतगुरु ने कहा–गुरु निर्गुण और सर्गुण में सहारा है। गुरु के बिना कोई लेन–देन नहीं हो सकता। गुरु के बिना इस संसार का भव सागर पार नहीं हो

सकता। शिष्य को सीप और गुरु को स्वाति समझो। गुरु को पारस और शिष्य को लोहा समझो। गुरु को मलय पर्वत और शिष्य को साँप समझो। गुरु के स्पर्श से काया शीतल हो जाती है। गुरु सागर और शिष्य उसकी तरंग है। गुरु दीपक और शिष्य पतंगा है। गुरु को चाँद और शिष्य को चकोर समझो। गुरु के चरण सूरज और शिष्य वह कमल है जो खिल उठता है। अगर शिष्य विश्वासी है और अपने हृदय में गुरु के चरणों के दर्शन कर रहा है तो समझ लो, वह शिष्य गुरु समान है।

एक गुरु और दूसरे गुरु के बीच के भेद के बारे में सोचो क्योंकि सारा संसार 'गुरु–गुरु' ही कह रहा है। वही गुरु है जो आत्मा के अंदर शब्द को प्रगट कर देता है। जिसकी शक्ति से आत्मा अपने घर वापिस चली जाती है। ऐसे गुरु में कोई कमी नहीं होती। ऐसे गुरु और शिष्य का रास्ता एक समान होता है।

सारा संसार अलग–अलग विचारों, कर्मों और भ्रमों में फंसा हुआ है। आत्मा भ्रम में फंसी हुई है और नहीं जानती कि अपने निजघर वापिस कैसे पहुँचें? इस संसार में बहुत सारे गुरु हैं, जिन्होंने नकली जाल बनाए हुए हैं। गुरु के बिना भ्रम का जाल नष्ट नहीं हो सकता क्योंकि काल बहुत कराल और बलवान है।

मैं, अपने आपको सतगुरु पर कुर्बान करता हूँ जो अविनाशी सन्देश देता है। उससे मिलकर आत्माएं सबसे अलग होकर सतपुरुष से मिल जाती हैं। हमें दिन–रात अपने ध्यान को गुरु के चरणों में लगाना चाहिए। साधु–सन्तों की तरह रहना चाहिए। सतगुरु जिस पर दया करते हैं, उसके कर्मों के फंदे कट जाते हैं। अगर कोई कोशिश करके अपने ध्यान को सतगुरु के चरणों में लगा लें तो सतगुरु उसे सतलोक पहुँचा देता है। जो सेवा करने के बाद अपने अंदर कोई भी आशा नहीं रखता सतगुरु उसके बंधन काट देता है।

जो अपने ध्यान को सतगुरु के चरणों में लगाकर रखता है, वह उस अविनाशी मंडल में चला जाता है। अगर कोई योगी बनकर योगा करे तो भी वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता। गुरु की

आज्ञा को मानने वाला सेवक गुरु की दया से इस भव सागर को पार कर लेता है। गुरु भक्त आत्मा के लिए साधु और गुरु में कोई भेद नहीं। जो साधुओं और गुरुओं में कोई फर्क नहीं समझता, उसे सच्चा गुरु मानो। जो सांसारिक लोग, गुरु, शिष्य और साधु के जीने के तरीके को नहीं समझते, उन्हें काल के फंदे में फंसा हुआ समझो। ऐसे सन्देशवाहक काल का अंश होते हैं।

हे धर्मदास! जो गुरु से प्यार करने का तरीका जानता है, वह सच्चे शब्द का रास्ता पहचान लेगा। गुरु आत्माओं को सतपुरुष की भक्ति में दृढ़ करते हैं, उन्हें देखने और सुनने का अभ्यास करवा कर उन्हें उनके घर पहुँचा देते हैं। अगर कोई चतुराई और मूर्खता छोड़कर सच्चे दिल से उनसे प्यार करता है तो वह निःसन्देह निज घर पहुँच जाता है।

13 . पहचान

धर्मदास दिल से बहुत खुश हो गया। उसकी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे और उसने कहा–मेरे दिल के अंधकार को आपने अपनी दया के दीपक से दूर कर दिया है। फिर अपने आपको काबू में करके बोला–हे भगवान! मैं, आपकी प्रशंसा कैसे करूँ? हे गुरु! मेरी बेनती सुनो। मुझे आत्माओं की पहचान कराओ और चिह्न बताओ कि मैं किन आत्माओं को नामदान दूँ?

उन जीवों के चिह्न जिनके भाग्य में नाम है

सतगुरु ने कहा–हे धर्मदास! तुम चिन्ता मत करो। आत्माओं को मुक्ति का सन्देश दो। तुम जिन लोगों में नम्रता और भक्ति देखो, उन्हें मुक्ति के बारे में बताओ। जिनके अंदर दया, शील और क्षमा हो उन्हें नामदान दो। जिन पर दया नहीं हुई वो 'शब्द' में भरोसा नहीं करते और काल की तरफ रुख कर लेते हैं। जिनका ध्यान बंटा होता है उनके अंदर 'सच्चा–शब्द' नहीं रुकता। जिनकी ठोड़ी बाहर निकल रही हो उनमें 'सच्चा–शब्द' नहीं रहता। जिनकी आँख के मध्य में तिल (मस्सा) हो उन्हें पूर्ण रूप से काल का रूप समझो। जिनका सिर छोटा और शरीर बड़ा होता है उनके दिल में हमेशा कपट भरा रहता है। ऐसे जीवों को सतपुरुष की निशानी मत दो, ऐसे जीव पंथ को नुकसान पहुँचाते हैं।

कमल शरीर का ज्ञान

धर्मदास ने कहा–हे भगवान! आपने मेरा जन्म सफल करके मुझे यम से मुक्त किया है। अगर मुँह में हजारों जीभें हों तब भी मैं आपका गुणगान नहीं कर सकता। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। मेरी एक प्रार्थना सुनो और मुझे इस शरीर का वर्णन बताओ।

कौन से देवी–देवता कहाँ रहते हैं और क्या काम करते हैं? इस शरीर में कितनी नाड़ियाँ, कितना खून और कितने बाल हैं? किन रास्तों से श्वास चलते हैं? मुझे आंत, पित्त और फेफड़ों के बारे में बताओ?

मुझे इनकी निशानियाँ दो। एक कमल में कितनी पंखड़ियाँ हैं? दिन–रात श्वास किस तरह चलता है? शब्द कहाँ से आता है और कहाँ समा जाता है? अगर कोई जीव उस रोशनी तक पहुँच जाए तो उसे कैसे पहचानेंगे?

सतगुरु ने कहा–धर्मदास! शरीर के बारे में सुनो जो कि सतपुरुष के नाम से अलग है। पहला मूल चक्र चार पंखड़ियों वाला कमल है, जहाँ गणेश रहता है, यह विद्या के गुणों का दाता है। छह सौ जाप करने के बाद इसका दर्शन होता है। मूल कमल के ऊपर छह पंखड़ियों वाला अखरा कमल है। जहाँ ब्रह्मा, सावित्री और देवता राज्य करते हैं, वहाँ छह हजार जापों की आवाज गूँजती है। नाभि में आठ पंखड़ियों का कमल है, विष्णु और लक्ष्मी वहाँ रहते हैं। वहाँ पहुँचकर छह हजार जापों का प्रमाण मिलता है, वहाँ गुरु के पंथ के अभ्यास के द्वारा ही पहुँचा जा सकता है। उसके ऊपर बारह पंखड़ियों वाला कमल है जिसमें शिव और पार्वती रहते हैं। इस जगह छह हजार जाप करने से गुरु–ज्ञान मिलता है। जीव सोलह पंखड़ी वाले कमल पर रहता है, जहाँ पर एक हजार जाप की जरूरत है। इसके रहने का स्थान दोनों आँखों के बीच में हैं जहाँ का राजा मन है। एक हजार जाप करके इसे परखो।

हे धर्मदास! सुरत–कमल में सतपुरुष का निवास है। वहाँ दो पंखुड़ियों के ऊपर वह शून्य मंडल है, जहाँ झिलमिल ज्योति है, उसे निरंजन समझो। शब्द के संदेश को सुनो! मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि अंदर क्या है? दोबारा से शरीर के बारे में सुनो। सिर्फ 'नाम' में ही विश्वास रखो। यह शरीर खून से बना हुआ व करोड़ों बालों से सजा हुआ है। इसमें बहात्तर नाड़ियाँ हैं, जिसमें से एक अलग किस्म की नाड़ी है, जिसके अंदर पहुँचकर हमें शब्द का स्वरूप मिलता है। जब शब्द प्रगट हो जाता है तो कमल के गुण सामने आने लगते हैं। जब किसी में शब्द उठता है तो वह शून्य में प्रवेश पा जाता है और उसमें लीन हो जाता है। आँत की लम्बाई इक्कीस हाथ की है। पेट भी लगभग सवा हाथ का होता है। पित्त रस को तीन अंगुली, हृदय को पाँच अंगुली और फेफड़े को सात अंगुली का

समझो, इसमें सात समुन्द्र निवास करते हैं। शरीर से हवा निकालकर, साधु, योगी–पंथ अख्तियार कर लेते हैं, लेकिन भक्ति के बिना वे संसार में ही बह जाते हैं।

सच्चे ज्ञान का योग खुशियों का घर है। नाम प्राप्त करके आत्मा विशालकाय दुश्मन को हराकर सच्चे घर चली जाती हैं। हे धर्मदास! गुरु के ज्ञान से मन की चालों को समझो। यह मन शून्य में प्रकाश दिखाता है, कई किस्म के भ्रम पैदा करता है। मन की रचना तीनों संसारों में फैली हुई है। यह जीव बहुत जगह अपना सिर झुकाता और धोखा खाता है। यह सब निरंजन की इच्छा से होता है क्योंकि सतनाम के बिना इस जीव का फंदा नहीं कट सकता। जिस तरह मदारी बंदर को नचाकर दुःख देता है उसी तरह यह मन भी जीवों को कर्मों और भ्रमों के जाल में फंसाकर नाच नचवाता है। सच्चा–शब्द मन को ऊपर खींचता है। सिर्फ वही लोग जो इस रहस्य को जानते हैं वही इसे पहचानते हैं।

हे धर्मदास! मन की चालों को पहचानो। इस शरीर में मन और आत्मा दोनों अकेले रहते हैं। यह मन, पाँच, पच्चीस और तीन में उलझा हुआ है, ये सब निरंजन के गुलाम हैं। जब सतपुरुष की अंश जीव में आती है तो वह अपने घर की निशानियों को याद करता है। इन गुलामों ने जीव को घेर रखा है। जब तक जीव इन गुलामों को पहचान नहीं जाता, वह यमों का गुलाम बना रहता है।

जैसे पिंजरे में फंसा हुआ तोता भ्रमवश अपने आपको नहीं पहचानता। जिस तरह शेर पानी में अपनी परछाई देखकर उसे दूसरा शेर समझकर मारने के लिए पानी में छलांग लगा देता है और अपनी जिंदगी गंवा बैठता है। इसी तरह जीव धोखा खाता है, खुद को नहीं पहचान पाता। जिस तरह कुत्ता शीश महल में अपनी परछाई देखकर भौंकता है। बाहरी आवाज को सुनकर फिर भौंकना शुरू कर देता है उसी तरह यमों ने जीव के लिए धोखे बना रखे हैं। जब उन्हें काल खा जाता है तो वह पछताते हैं क्योंकि वो सतगुरु के शब्द को प्यार नहीं करते, इसलिए उनका नाश हो

जाता है। झूठा नाम निरंजन की शाखा और सच्चा नाम सतगुरु की शाखा है।

हे धर्मदास! जीव बेगाने हो चुके हैं। जहर को अमृत समझकर उसमें फँसे हुए हैं। काल ने ऐसे धोखे रचे हुए हैं, जिनके काबू में जीव अपने आपको भूल चुके हैं। जीव, औरों से अलग तभी बन सकता है जब वह इस चाल को पहचान जाए। हे धर्मदास! जो मेरी ज्योति को पहचान लेता है, यम उसे नहीं पकड़ सकता।

मन के पाप और अच्छाइयाँ

हे मजबूत धर्मदास! मन के इन तत्वों को सुनो, गुरु की मदद से चोर और साहूकार के फर्क को समझो। मन एक भयानक काल है, जो जीवों को नचाता है, जब किसी सुंदर स्त्री को देखता है, मन उत्तेजित हो जाता है और काम देह को सताता है। दिल दिमाग उसे बहका देते हैं और अज्ञानी जीव धोखा खा जाता है। स्त्री के साथ इन्द्री रस भोगने के बाद अपने सिर पर पाप ले लेता है। दूसरे का धन देखकर मन खुश होता है कि 'यह धन मेरा हो जाए।' दूसरे का धन लेकर पाप का बोझ ले लेता है। यह पागल मन कर्म बनाता है और निर्दोष जीव इसके आदेश का पालन करता है। दूसरों की आलोचना करना, दूसरों का धन ले लेना, यह सब मन के धोखे हैं। सन्तों का विरोध, गुरु की निन्दा ये सब कर्म मन के द्वारा बनाए गए हैं ये आत्मा को काल के फंदे में फंसाते हैं। एक शादी–शुदा आदमी का दूसरी स्त्री की इच्छा रखना इस तरह है जिस तरह वह अंधे कर्म का बीज बो रहा है। जो दिल दिमाग दूसरे को मारने की इच्छा रखता है उसे नर्क की पीड़ा मिलती है। आत्मा को धोखा देकर यह मन देवी–देवताओं की पूजा, व्रत और यात्रा करवाता है। मन खुद ही बुरी आदतों में फंसाकर जीवों को बर्बाद कर देता है। उसका एक जन्म, राजा के रूप में हो सकता है उसके बाद उसे नर्क भुगतना पड़ता है या वो एक सांड बनकर कई गायों का पति बनता है।

कर्म–योग, काल का एक फंदा है जो जैसे कर्म करता है उसे वैसे सुख–दुःख भोगने पड़ते हैं। हे धर्मदास! मन के चरित्र सुनो। मैं, कब से

तुम्हें इस बारे में समझा रहा हूँ। तीन देव, तैंतीस करोड़ देवता इसके फंदे में हैं। शेषनाग और दूसरे देवता भी इससे हार चुके हैं। सतगुरु के बिना कोई भी मन की इन चालों से बच नहीं सकता। बहुत कम सन्तों ने इसे पहचाना है। सतगुरु में भरोसा रखकर जन्म–मरण का दु:ख दूर हो जाता है। हे धर्मदास! जो नाम में पूरी तरह विश्वास कर लेता है वह सतपुरुष का सेवक बन जाता है।

निरंजन के चरित्र

हे धर्मदास! निरंजन के चरित्र सुनो जिसने जीवों को फंसाकर उन्हें धोखा दिया है। अवतार धारण करके, गीता सुनाकर अंधे जीवों को पार जाने से रोका। अर्जुन, उसका प्रिय शिष्य था, उसने उसको कर्म में दृढ़ होने के लिए कहा। पहले उसे दया, ज्ञान–विज्ञान और कर्म करने के लिए कहा। अर्जुन कृष्ण की भक्ति में पूरी तरह समर्पित हो गया। फिर कृष्ण ने उसके अंदर इच्छा पैदा की और उसे नर्क में भेज दिया। कृष्ण ने अर्जुन से ज्ञान छुड़वाकर उसे कर्म–योगी बनाया। कर्मों के वश होकर अर्जुन ने बहुत दु:ख पाया। सन्त का भेष धारण करके उसने आत्माओं को बर्बाद कर दिया। अमृत दिखाकर उसे जहर दे दिया।

मैं, कब तक इस यम की छल बुद्धियों के बारे में बताता रहूँ? कोई सन्त ही इसकी परख कर सकता है। जब कोई सच के रास्ते पर चलेगा तभी सच्चे रास्ते को पा सकेगा। सतगुरु की शरण में आने से यम का डर दूर होता है, परम सुख प्राप्त होता है। हे जीवों के राजा धर्मदास! सतगुरु की महिमा को प्राप्त करके पंथ उजागर करो। मैंने तुम्हें अविचल सन्देश दे दिया है।

मुक्ति के चिह्न

धर्मदास कहता है–आप एक दयालु सतपुरुष हो। आपके वचन अमृत से भरे हुए हैं, मुझे बहुत प्यारे हैं। आपने मुझे जगा दिया है, अब आप मुझे यह बताओ कि यम के फंदे कैसे कटेंगे?

सतगुरु ने कहा–धर्मदास! सतपुरुष के प्रभाव को सुनो। अब मैं

तुम्हें सतपुरुष की डोरी की पहचान बताऊँगा। जब सतपुरुष की शक्ति आ जाती है तो कसाई काल उसे रोक नहीं सकता। सतपुरुष के पास सोलह शक्तियाँ हैं, इन शक्तियों से जीव वापिस सतलोक जा सकता है। इन शक्तियों के बिना गुरुओं का पंथ नहीं चल सकता। इन शक्तियों के बिना आत्मा संसार में फँस जाती है। ज्ञान, विवेक, सच्चाई, संतोष, प्यार, संयम, शान्ति, क्षमाशीलता, नेह कर्म इन सबको विकसित करके कोई सतलोक में रह सकता है और इसी रास्ते पर चलकर अपना घर देख सकता है। जो गुरु की सेवा करता है, गुरु के चरणों से प्रीत करता है वो गुरु के हृदय में निवास करता है और यम को हराता है। वेदो–शस्त्रों में भी आत्मा की भक्ति और सतगुरु से मिलाप का महत्व लिखा हुआ है। जो सन्त की भक्ति गुरु समान करता है वह मोह, ममता और क्रोध को वश में कर लेता है। सतपुरुष का 'सतनाम' अमृत का पेड़ है।

सतपुरुष के मित्रों के साथ मित्रता करके जीव सतलोक जा सकता है। अंधा आदमी अपने घर नहीं पहुँच सकता। सतपुरुष का नाम आँखें हैं और वापिस अपने घर जाने का परवाना है। सतपुरुष के चरणों में भरोसा रखने वालों के जन्म–मरण का चक्कर खत्म हो जाता है।

धर्मदास ने कहा–हे प्रभु! आप दयालु पुरुष हैं। आपके वचन मुझे शान्ति देते हैं। मुझे यह समझाओ कि गृहस्थी और त्यागी अपनी जिदंगी किस तरह बिताएं?

सतगुरु ने कहा–धर्मदास! शब्द के सन्देश को सुनो और जीवों को मुक्ति का उपदेश दो? त्यागियों को त्याग में मजबूत करो और गृहस्थियों को भक्ति का मार्ग दिखाओ।

त्यागियों के गुण

मैं, तुम्हें त्यागियों की प्रकृति के बारे में बता रहा हूँ। जब वह स्वादिष्ट खाने खाना छोड़ देता है। तम्बाकू, शराब और मीट आदि भी छोड़ देता है, तभी हंस बनता है। प्रेम और भक्ति हमेशा उसके हृदय में बस जाते हैं। ईर्ष्या–द्वेष खत्म हो जाता है, वह सब पर दया करता है। मन, वचन,

कर्म से किसी का नुकसान नहीं करता। वह हमेशा मुक्ति की छाप साथ रखता है, जिससे सारे कर्म और भ्रम नष्ट हो जाते हैं। हंस का रूप बनकर पंथ चलाता है। वह कान में बुंदे और गले में हार पहनता है और माथे पर तिलक लगाता है। वह सादा खाना खाता है और रोज मेरा नाम दोहराता है। अगर वह तुम्हारा नाम भी ले ले तो मैं उसे अविनाशी मंडल में भेज दूँगा।

वह, सब कर्म–धर्म छोड़कर 'सार–शब्द' में समाया रहता है। वह नारी को नहीं छूता, अपना वीर्य नहीं गंवाता। अपने हृदय से क्रोध और कपट को दूर कर देता है। क्षमा गंगा में जाकर स्नान करता है। वह नारी को नर्कों की खान समझते हुए उसे त्याग देता है। अपने आपको गुरु के शब्द में जोड़े रखता है। वह खुशी, प्यार और सुख का सागर होता है। वह किसी को राजा या प्रजा की तरह नहीं परखता। वह नाम का जाप करके सारे पर्दे दूर कर लेता है। वह भावों और रास–रंगों में नहीं बहता। ऐसा त्यागी मुझे पा लेता है और मेरे जैसा बन जाता है। वह गुरु के चरणों से जुड़ा रहता है। वह कपट, चालाकी, भ्रम छोड़ देता है। जो हमेशा गुरु के हुक्म में रहता है उसे दुष्ट काल नहीं ले जा सकता। वह गुरु में पूर्ण विश्वास रखता है, गुरु की सेवा करके उसे सब फल मिलता है। गुरु से विमुख होकर कोई इस भव सागर से पार नहीं हो सकता। जिस तरह कमल चाँद से प्यार करता है इसी तरह शिष्य को गुरु में भरोसा होना चाहिए।

गृहस्थी के लक्षण

हे धर्मदास! अब गृहस्थियों की भक्ति के बारे में सुनो। जिससे वे काल के पिंजरे में नहीं फंसेंगे। उनके दिल में आत्माओं के लिए हमेशा दया होती है। वे मीट, शराब और मछली का सेवन नहीं करते, शुद्ध शाकाहारी रहते हैं। वे हमेशा हार, तिलक और साधुओं की तरह कपड़े पहनते हैं और गुरमुख से प्यार करते हैं। वे अपने दिल में सन्तों के लिए प्यार रखते हैं और सच्चे गुरु की सेवा में अपना सब कुछ कुर्बान कर देते

हैं। हे भाई! गुरु उन्हें जो सिमरन देता है, वे उसमें पक्के हो जाते हें।

सुनो धर्मदास! ये सतपुरुष की डोरियाँ हैं, जिससे गृहस्थी मुक्त हो जाता है। जो मेरे शब्दों में विश्वास रखेगा, मैं उसका जन्म–मरण खत्म कर दूँगा। जो शब्द को स्वीकार कर लेते हैं और दिन–रात नाम का सिमरन करते हैं, वे भव सागर पर विजय पा लेते हैं।

गृहस्थी भक्त को हर अमावस्या को आरती करनी चाहिए। अमावस्या को आरती ना करने से वहाँ काल आ जाता है। अगर उस दिन आरती नहीं हो सकती तो हर पूर्णिमा को आरती करे। हे धर्मदास! अगर शिष्य पूर्णिमा के दिन नाम का अमृत पी लेता है तो वह खुश रहता है। अगर किसी को पूर्णिमा के दिन नाम मिलता है तो वह अपनी शक्ति के अनुसार गुरु की सेवा करके सतलोक पहुँच जाता है।

धर्मदास ने बेनती की–कि आत्माएं किस तरह से सुरक्षित रहेंगी? कलयुग में बहुत से लोग गरीब होंगे। हे परमात्मा! ये सब जीव तेरे ही हैं, तेरी सेवा कैसे करेंगे? ये सभी जीव सतपुरुष की अंश हैं। मुझे इनके बारे में बताकर, मेरे भ्रम दूर करो।

कबीर साहब ने कहा–हे धर्मदास! गरीब को छह महीने में एक बार आरती करनी चाहिए। अगर वो यह आरती छह महीने में एक बार भी नहीं कर सकता तो साल में एक बार चौका करके गुरु की सेवा करे। अगर वो साल में एक बार भी ऐसा नहीं कर सकता तो सन्त उसे दुनियादार कहते हैं। साल में एक बार भी आरती करने वाली आत्माएं धोखा नहीं खाती। जो पूरे दिल से 'कबीर' का सिमरन करता है, नाम का ध्यान करता है और गुरु चरणों में भरोसा रखता है गुरु चरणों की प्रीत उसे मुक्त कराएगी। जो गृहस्थी इसे मानेगा, वह गुरु के प्रताप से सतलोक में निवास करेगा।

हे धर्मदास! मैंने तुम्हें गृहस्थी और त्यागी दोनों के रहने के तरीके बता दिये हैं। अगर वे इन तरीकों के अनुसार रहेंगे तो 'शब्द' को सुनेंगे। ये भव सागर बहुत गहरा, अगम, अथाह और विकराल है जो नाम की नाव में सवार हो जाते हैं वो किनारे लग जाते हैं।

असावधानी के नतीजे

हे भाई! जब तक यह आत्मा शरीर में है। इसे शब्द के साथ जोड़ने की कोशिश करो। जैसे सूरमा रणभूमि में रहता है, अगर वह रण से भाग जाए तो बदनाम होता है। गुरु का अमूल्य शब्द रणभूमि है। जो वहाँ से भागने की कोशिश करते हैं काल उन्हें पकड़ लेता है। गुरु से दूर जाने वाली आत्मा आग की भट्टी में जाकर जल जाती है। जन्म के बाद जन्म पाकर नर्क में जाता है। उसे करोड़ों बार साँप का जन्म मिलता है, जिसमें वह अपने अंदर जहर की अग्नि को सहता है। वह कई जन्मों में गंदगी के कीड़े की तरह जन्म लेता है और कई जन्मों तक नर्क में रहता है। मैं ऐसे दु:ख सहने वाले कितने जन्तुओं के बारे में तुम्हें बताऊँ? गुरु के शब्द को स्वीकार करके उस पर दृढ़ रहो। अगर गुरु दयालु है, तो सतपुरुष भी दयालु है जो गुरु में विश्वास रखते हैं काल उन्हें छू भी नहीं सकता। मैं आत्माओं के लिए कहता हूँ–''जो गुरु भक्त हैं वे कभी नहीं हारते।''

कोयल का उदाहरण

कोयल के बच्चे के स्वभाव को सुनो। कोयल चतुर है उसकी आवाज मधुर है। उसका दुश्मन कौआ है, जो पाप की खान है। कोयल अपने अंडे कौए के घौंसले में रखकर आती है और दुष्ट को अपना मित्र बना लेती है। कौआ, मित्र समझकर उनका पोषण करता है। कौआ जिसमें काल की बुद्धि है वह अंडे फोड़ता है बच्चे बाहर आ जाते हैं। कुछ दिन बाद मजबूत होकर वो अपनी आँखें खोलते हैं। उनकी माँ उनको अपनी आवाज सुनाने आती है। उस आवाज को सुनकर बच्चे जाग जाते हैं। जब कौआ बाहर खाना लेने जाता है तब फिर कोयल अपनी आवाज सुनाती है। कोयल बच्चों को जागृत करती है जो उसके अंश हैं। उनके हृदय में कौए का कोई गुण नहीं होता। कोयल एक दिन कौए के सामने अपने बच्चों को उड़ाकर ले जाती है। कौआ व्याकुल होकर उनके पीछे भागता है, उनको पकड़ नहीं सकता। थककर अपने घर वापिस आकर सो जाता है। कोयल का बच्चा अपने परिवार में घुल–मिल जाता है। कौआ झक मारकर मूर्छित

हो जाता है। कोयल के बच्चे की तरह जो आत्माएं मुझसे मिलेंगी, वो इस रास्ते से सच्चे घर पहुँच जाएंगी। मैं, उनके सारे परिवार को मुक्त कर दूँगा।

हंस के गुण

हे भाई! जो कौए के अवगुण छोड़कर हंस के गुणों को अपनाता है वह सतलोक पहुँच जाता है। कौए की आवाज किसी को नहीं भाती, कोयल की आवाज सुनकर सब खुश होते हैं। इसी तरह से हंस प्यार और सच के वचन बोलता है और गुरु के वचनों को प्रेम का अमृत समझता है। वह कभी भी किसी के साथ धोखा नहीं करता और हमेशा शान्त चित्त रहता है। अगर कोई गुस्से में उसके पास आता है तो वह उसे प्यार से ठंडा कर देता है। ज्ञानी और अज्ञानी में यह फर्क होता है कि अज्ञानी कुमति, कुटिल और कठोर होता है। ज्ञानी शान्त और प्यार से भरा होता है।

ज्ञानी के लक्षण

ज्ञानी, कुमति छोड़ देता है। मन के तत्वों को पहचानकर उसे भुला देता है। अगर ज्ञानी बनकर भी वह किसी को कठोर वचन कहे तो वह अज्ञानी ही कहलाएगा। इससे कोई मतलब नहीं कि कोई दिखने में ही बहादुर है। बहादुर वही है जो रणभूमि में शहीद हो जाता है। मूर्ख हृदय मेहनत नहीं कर सकता। वह 'सार–शब्द' और गुरु को समझ ही नहीं सकता। अगर अंधा किसी गंदी जगह पर पैर रख ले तो कोई उस पर नहीं हंसता। अगर कोई आँख वाला किसी गंदी जगह पैर रखे तो सब उसका मजाक उड़ाते हैं।

इसी तरह धर्मदास! हमें 'सार–शब्द' और गुरु के ध्यान से ज्ञानी और अज्ञानी के फर्क को समझ लेना चाहिए। वह सबके अंदर रहता है, वह कुछ जगह छिपा और कुछ जगह प्रगट है। उसकी निशानी है कि वह सबके आगे झुककर सबको नमस्कार करता है। सबको उस परमात्मा की अंश समझता है।

प्रहलाद, नाम के रग में रंगा जा चुका था, इसलिए वह भक्ति में

दृढ़ रहा। जब उसे बहुत भयानक पीड़ा दी गई, तब भी उसने प्रभु के गुणों को स्वीकार किया। अगर कोई आत्मा इस तरह से सतगुरु को स्वीकार करती है तो वह अमूल्य हो जाती है। दृढ़ होकर ही उस अविनाशी मंडल में रह सकती है।

परमारथ का वर्णन

भ्रम और यम के पिंजरे को त्यागकर हमें अपना ध्यान सतनाम में रखना चाहिए। सच्चे रास्ते पर चलकर हमें अपना ध्यान परमारथ में लगाना चाहिए।

परमारथी गाय का उदाहरण

हे ज्ञानी! गाय को परमारथ की खान समझकर उसके तरीकों और गुणों को जानो। वह घास खाती है पानी पीती है और दूध देती है। वह बछड़े का पालन–पोषण अपने दूध से करती है। यहाँ तक दूध और घी से देवी–देवता भी सन्तुष्ट होते हैं। गाय का गोबर भी इंसान के काम आता है। गाय के मरने पर उसके शरीर को राक्षस खा जाता है। हे भाई! गाय के शरीर में बहुत गुण हैं, लेकिन मनुष्य पाप कर्मों के कारण अपने जन्म को बेकार खो देता है।

परमारथी सन्त के गुण

अगर सन्त भी गाय की तरह इस शब्द को स्वीकार कर लें तो काल जीवों को नहीं खा सकता। अगर किसी में ऐसे गुण हैं तो वह सतगुरु से मिलकर अविनाशी बन जाता है। सुनो धर्मदास! परमारथ से किसी का कोई नुकसान नहीं होता। परमारथ सन्त का सहारा है। जो इसे पूर्ण गुरु से पा लेता है वह दूसरे किनारे पहुँच जाता है। वह सच्चे शब्द का ज्ञान पा लेता है और परमारथ करके सतलोक चला जाता है।

इंसान बहुत चालाक है, कहता है–मुझमें बहुत अच्छे गुण और कर्म हैं। अपने आपको अच्छा गुणी कर्मी कहता है। बुरे कर्मों का दोष हरि को देता है। ऐसों के अच्छे कर्म खत्म हो जाते हैं, उनके पैरों को छूने से

निराशा मिलती है। नाम की आशा रखने वाला अपने कर्मों की तरफ नहीं देखता। वह हमेशा अपने ध्यान को गुरु के चरणों में रखता है। सच्चे नाम का गुणगान करता है। सतपुरुष के नाम का प्रभाव ऐसा है कि वह हंस दोबारा इस दुनिया में नहीं आता। वह निश्चित तौर पर सतपुरुष के पास पहुँच जाता है।

आत्माएं, कछुए के बच्चे की तरह भागकर अपने घर आ जाएंगी। यम के सन्देशवाहक उन्हें देखकर कमजोर हो जाएंगे। हंस निडर होकर सतनाम का नाम लेते रहेंगे। हंस फिर से अपने परिवार में मिल जाएंगे और यम के सन्देशवाहक वहाँ असहाय खड़े रहेंगे। आनन्द धाम, जहाँ हंस रहते हैं वह अनमोल है। सभी हंस सतपुरुष के प्रकाश को देखकर खुश होते हैं।

अनुराग सागर ग्रन्थ की समाप्ति

इस ग्रन्थ, अनुराग सागर–भव सागर में मैंने तुम्हें उन रहस्यों के बारे में बताया है जहाँ तक पहुँचा नहीं जा सकता। इसमें मैंने तुम्हें सतपुरुष के धर्म और काल के धोखों के बारे में बताया है। कोई खोजी ही शब्द के फर्क और जीने के तरीके को समझेगा। जो कोई इस शब्द को परखने के बाद स्वीकार कर लेगा, वह उस रास्ते को समझ जाएगा, जहाँ तक पहुँचना मुश्किल है।

अनुराग सागर का सारांश

गुरु के चरणों में विश्वास रखते हुए सच्चे नाम की भक्ति में दृढ़ हो जाओ। हमें सन्त या सति की तरह जीना चाहिए, जैसे पति के लिए वह अपना शरीर जला देती है। सतगुरु अविनाशी पति है, जिसका कभी नाश नहीं होता। मैं, शब्द के सबूत से कहता हूँ जो भी इस अविनाशी को स्वीकार करेगा, वह खुद भी अविनाशी हो जाएगा। सन्तों की आस रखने वाली आत्मा अविनाशी मंडल में चली जाती है। हे धर्मदास! अपने मन और आत्मा को जगाकर सतगुरु के चरणों में लगाओ। मन रूपी मधुमक्खी को सतगुरु के सुंदर चरणों में रखो। अपने ध्यान को सतगुरु के चरणों में रखो तभी तुम सतधाम पहुँच सकोगे।

सुरत और शब्द का मिलन

जब कोई शब्द प्राप्त कर लेता है तो वह सन्तों के धाम पहुँच जाता है। यह समुन्द्र और बूँद के खेल की तरह है। गुरु से मिलने के बाद हमें सुरत और शब्द के खेल की समझ आ जाती है। यह समुन्द्र और बूँद का मिलन है। हमें मन के अवगुणों को छोड़कर गुरु के पंथ के ऊपर चलना चाहिए। ऐसी आत्मा सतलोक जाकर खुशी के सागर से खुशी प्राप्त करती है। जीव को बूँद और सतगुरु के नाम को समुन्द्र की तरह समझो। कबीर साहब सबूत के साथ कहते हैं धर्मदास इसे समझो।